दाग लगे होते थे। उनके बिस्तर पर अक्सर तीन-चार पेन और पेंसिल तथा कागज के पन्ने बिखरे पड़े रहते थे तथा पन्नों पर गणित के सूत्र लिखे रहते थे। उनके कमड़े में रखी तीन बड़ी अलमारियां किताबों से भरी है। इन अलमारियों में गणित के किताबों के अलावा दो-चार की संख्या में धार्मिक तथा इतिहास की किताबे भी है। कमरे की गुलाबी दिवारों पर पेंसिल से गणित के कई सूत्र लिखे हुए हैं। कमरे की दीवारों पर गणित के ऐसे जोड़, घटाव, गुणा और भाग अंकित है, जिन्हें समझने के लिए अलग दिमाग की जरूरत है। मसलन, 51+53×80×602÷4=628। गणित के ऐसे कई सूत्रों से कमरे की दीवारे भरी पड़ी है। जीवन के अंतिम कुछ वर्षों में अल्फा, बीटा और गामा के गणितीय सूत्र तलाशते-तलाशते वे अध्यात्म की दुनियां में जीवन के सूत्र तलाशने में जुट गये थे। वे घर में खादी का कुर्ता और पजामा पहनते थे। उनके कमरे के दरवाजे पर एक गमछा हमेशा टंगा रहता था। उसी गमछे को वे अक्सर अपने गले में लपेटकर अथवा बिना लपेटे कंधे पर रखते थे। वे गीता, वेद तथा अन्य धार्मिक किताबे भी पढ़ते थे, लेकिन उनको गीता और बासुरी से बहुत लगाव था। गीता और बासुरी को वह अपने सिरहाने रखे रहते थे। वशिष्ठ बाबू को संगीत से भी बहुत लगाव था। वे बासुरी अच्छी बजाते थे। बिस्तर पर बासुरी हमेशा उनके साथ रहती थी, जो मरते दम तक उनके साथ रही। वे स्वामी विवेकानंद को अपना आर्दश मानते थें। वे दिन में कई बार उनकी तस्वीर को प्रणाम भी करते थे।

डॉ० वशिष्ठ नारायण सिंह की उपलब्धियों और उनके मिले सम्मान से उनका पूरा फ्लैट भरा-पटा है। फ्लैट के मुख्य दरवाजे से लेकर अंदर हॉल और कमरे में भी उनके मिले तमाम सम्मान और पुरस्कारों को दीवारों पर लगाया गया है। मसलन, इनमें सबसे पहले बिहार विद्यालय परीक्षा समिति ने 28 जनवरी 1963 में मिला सिल्वर मेडल पुरस्कार है। नेतरहाट गोल्डेन जुबली के मौके पर उनको सम्मानित किया गया टिकुली आर्ट का फ्रेम भी दीवार पर टंगा हुआ है।

आज के भारत में प्रतिभा की बेकद्री का यह कोई पहला मामला नहीं है। आजादी के बाद से ही हमारे देश को जो बहुत अधिक नुकसान पहुंचा है, वह देश में मौजूद प्रतिभा का बुरी तरह उपेक्षा किया जाना, उसकी अहमियत को नजरअंदाज किया जाना और राजनेताओं को जरूरत से बहुत ज्यादा अहमियत दिया जाना। भारतीय समाज में विधायक और सांसद को करीब-करीब भगवान का दर्जा प्राप्त है, जो देश के लिए बहुत ही घातक है और प्रतिभाओं को भिखारी का दर्जा प्राप्त है, यह देश के विकास में बहुत बड़ा अवरोध है, बहुत बड़ी रूकावट है।

इसमें कोई शक नहीं है कि वर्ष 1971 में वशिष्ठ बाबू लौटकर अमेरिका से अपने वतन आ गये। तब से लेकर जीवन पर्यन्त उनको रिसर्च वर्क करने हेतु कभी भी उचित माहौल नहीं मिला। वशिष्ठ बाबू के मानसिक रूप से विक्षिप्त होने और अंततः उनकी मौत का यही असली कारण है। यदि केन्द्र सरकार और खासकर बिहार सरकार तथा बिहारी समाज के लोग उनके साथ खड़े होते तो मुमकिन था कि वशिष्ठ नारायण सिंह के रूप में आज हमारे देश के खाते में पूरी दुनियां में जगमगाने वाला एक सितारा होता। हम बिहारवासी वशिष्ठ बाबू को नहीं समझ सके। आज के बिहारवासियों में अपने आप को सबसे काबिल समझने का भ्रम पैदा हो गया है, भले ही कितना भी मूर्ख क्यों न हो? यही कारण है बिहार के अनेक जगहों से लोग आकर वशिष्ठ बाबू से अक्सर कठिन से कठिन सवाल पूछते रहते थे और बिमारी की अवस्था में भी वशिष्ठ बाबू उन सवालों का उत्तर देते रहते थे। लेकिन किसी ने भी उन्हें स्वस्थ बनाने के लिए कुछ भी नहीं किया। बिहार के जाने-माने गणितज्ञ डॉ० के.सी. सिन्हा का मानना है कि आर्यभट्ट के बाद वशिष्ठ बाबू ही बिहार के सबसे बड़े गणितज्ञ थे। एक ऐसी प्रतिभा जिसकी प्रखरता दुनियां ने देखी, लेकिन सिजोफ्रेनिया से ग्रस्त होने के चलते शिखर पर नहीं पहुंच सके। फिर भी मेधा के क्षितिज पर वह ध्रुव तारे की तरह चमकते रहेंगे।

★ **बेकद्री के कारण होता है भारत से प्रतिभा का पलायन** :- पता नहीं हमारे देश में कब से बेकद्री के चलते ही प्रतिभा का पलायन होता आ रहा है। हमारे देश से प्रतिभा पलायन की फेहरिस्त बहुत लंबी है। इस फेहरिस्त में डॉ० हरगोविन्द खुराना, डॉ० सुब्रमण्यम चन्द्रशेखर, डॉ० अमृत्य सेन और डॉ० अभिजीत मुखर्जी के नाम

सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। ये सभी विदेशों में बस गये। इन चारों को अपने-अपने क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। अगर ये भारत में होते तो गुमनामी के अंधेरे में समां गये होते। अर्थात् उनकी प्रतिभा का सत्यानाश हो गया होता। पूरी दुनियां भारतीय प्रतिभा का लोहा मानती है। यही कारण है कि यहां की प्रतिभाओं को अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और मॉरीशस में हांथों-हांथ लिया जाता है। आंकड़ें भी इस बात के जीता-जागता सबूत है। पांच साल पहले युनाइटेड नेशन की एक रिपोर्ट में भारत को दुनियां से सबसे बड़े प्रवासी वाले आबादी के रूप में नॉमिनेट किया गया था, जिसमें विदेशों में रहने वाले भारतीय मूल के एक करोड़ 60 लाख से अधिक लोग थे। अर्थात् दुनियां भर में भारत से प्रतिभा पलायन का आंकड़ा सबसे ऊपर है।

यह सच है कि हमारी पूर्ववर्ती सरकारों ने भारतीय प्रतिभाओं के पलायन को रोकने हेतु कुछ भी ठोस कदम नहीं उठाया, लेकिन अब उठाये जाने लगे हैं। अर्थात् मोदी सरकार उठाने लगी है। देश के प्रतिभा पलायन को रोकने के मकसद से मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा फरवरी 2018 में प्रधानमंत्री रिर्सच फेलोशिप योजना की शुरूआत की गई है। यह योजना विज्ञान और प्रौद्योगिकी के तहत शोध के लिए मेजबान संस्थानों से शोधार्थी का चयन कर उन्हें मोदी सरकार की ओर से इतनी सुविधाएं प्रदान करने के लिए किया गया है कि देश से प्रतिभा का पलायन न हो तथा इनके शोध का इस्तेमाल देश के विकास के लिए किया जा सके। प्रधानमंत्री रिसर्च फेलोशिप योजना के तहत देश में ऐसे मेजबान संस्थान होते हैं, जहां प्रधानमंत्री रिर्सच फेलोशिप प्राप्त करने वाले शोधार्थी का शोध कार्य की सुविधा उपलब्ध करायी जाती है। ये प्रधानमंत्री रिर्सच फेलोशिप शोधार्थी देश के सभी आईआईटी, सभी एनआईटी, आईआईएसटी (बैंगलुरू), सभी आईआईएसआर, सभी आईआईआरटी और नेशनल इंस्टीच्यूट रैंकिंग में शीर्ष स्थान पाने वाले सौ केन्द्रीय विश्वविद्यालयों से चुने जाते हैं। प्रधानमंत्री रिर्सच फेलोशिप योजना के तहत पात्रता मापदंड पूरा करने वाले शोधार्थी को पहले दो साल के लिए 70 हजार रूपये प्रतिमाह, तीसरे वर्ष के लिए 75 हजार रूपये प्रतिमाह और चौथे तथा पांचवे वर्ष के लिए 80 हजार रूपये प्रतिमाह फैलोशिप प्रदान करने का प्रावधान है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में शोध पत्र प्रस्तुत करने हेतु देश के अंदर तथा विदेशों में यात्रा करने से संबंधित खर्च दिये जाने का प्रावधान है। इसका साकारात्मक असर शोधकर्ताओं पर पड़ रहा है। जिससे देश

को तरक्की करने में मदद मिल रही है।

★ वशिष्ठ बाबू की प्रतिभा से जुड़े कारनामेः-

☞ अमेरिका में मून मिशन के दौरान अपोलो अंतरिक्ष यान लांच के कुछ क्षण बाद ही अचानक 31 कम्प्यूटर बंद हो गया। सभी वैज्ञानिक चिंता में डूब गये कि इस समय अंतरिक्ष में अपोलो कहां है, चांद पर कैसे पहुंचेगा? सभी वैज्ञानिक और गणितज्ञ आंकलन में जुट गये। डॉ० वशिष्ठ नारायण सिंह ने कागज पर गणना शुरू कर दी और सबसे पहले गणितीय आंकड़ा पेश कर दिया। जब कम्प्यूटर ठीक हुआ तो अंतरिक्ष यान अपोलो के पहुंचने के संबंध में निकला आंकड़ा और वशिष्ठ बाबू के कैलकुलेशन से निकला आंकड़ा एक जैसा था। तब अमेरिका के अखबार में उनके ऊपर एक आलेख छपी थी, जिसका शीर्षक था 'इंडियाज ब्यूटीफूल माइंड'। अर्थात् तब अमेरिका के अखबारों में उन्हें इंडियाज ब्यूटीफूल मांइड माना था। अमेरिकी अखबारों में प्रकाशित उस समय का यह आलेख आज भी उनके कमरे में टंगा है।

☞ एक बार बर्मिघम में स्टेशन से तेज रफ्तार में एक ट्रेन गुजरी। उस समय वशिष्ठ बाबू के साथ कई अन्य विदेशी वैज्ञानिक भी प्लेटफॉर्म पर खड़े थे। उन्ही में से किसी वैज्ञानिक ने वशिष्ठ बाबू की मेधा जांचने के लिए ट्रेन की बोगी पर लिखे नंबरों के बारे में पूछा। वशिष्ठ बाबू ने एक के बाद एक कई बोगी (कोच) पर लिखे नंबर बता दिये।

☞ नेतरहाट एलुमिनी एसोसिएशन के सदस्य भरत कुमार ने बताया है कि नेतरहाट में 1992 में नवी कक्षा में पढ़ने के दौरान वशिष्ठ नारायण की तबीयत खराब हो गयी थी। बेहतर इलाज हेतु उन्हें राँची से पटना लाया गया। उनकी जांच के बाद डॉक्टर ने कहा था कि इस छात्र का ब्रेन गणितज्ञ रामानुजम जैसा है। इससे 35 साल तक जो रिसर्च करवाना हो, करवा लिजिए।

☞ 1991 में न्यूटन का एक थियोरम (बायोनोमिकल परिमय) $(a+x)^n$ का हल पटना युनिवर्सिटी के प्रोफेसर नहीं कर सके थे। वशिष्ठ बाबू ने उस थियोरम को पांच तरीके से हल कर दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने इस थियोरम को काल्पनिक नंबर से भी साबित कर दिया। जबकि सभी जानते हैं कि यह थियोरम वास्तविक नंबरों के लिए ही थी। पटना युनिवर्सिटी के गणित के छात्र मनोज कुमार सिंह ने बताया कि न्यूटन की मॉडलस से जुड़ी मान्यता को वशिष्ठ बाबू ने नया मत दिया। न्यूटन के मुताबिक मॉडलस केवल धनात्मक होता है, जबकि वशिष्ठ बाबू ने उसे ऋणात्मक भी साबित कर दिया।

☞ वशिष्ठ बाबू के गांव के ही सुरेन्द्र सिंह बताते हैं कि डॉ० वशिष्ठ नारायण सिंह की प्रशंसा सुनकर बोकारो से गणित का एक छात्र उनसे मिलने उनके घर बसंतपुर आया था, तब वे बिमार थे। उस छात्र ने वशिष्ठ बाबू के सामने गणित का एक सवाल रखा। उन्होंने गौर से देखा और उसके नीचे थीटा लिख दिया। वहां पर मौजूद सभी को आश्चर्य हुआ कि इस सवाल को हल किये बगैर वशिष्ठ बाबू उसका उत्तर थीटा कैसे लिख दिये। जब उस छात्र ने वशिष्ठ बाबू से कुछ पूछना चाहा तो उन्होंने कह दिया कि इस सवाल का उत्तर थीटा है। बोकारो सायंस कॉलेज में इस सवाल और जवाब को लेकर गणितज्ञों की एक टीम बैठी। टीम ने माना कि वशिष्ठ बाबू का उत्तर सही है।

☞ नेतरहाट विद्यालय में वशिष्ठ नारायण से तीन साल जुनियर रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया से 2009 में सेवा निवृत और नेतरहाट ओल्ड ब्वॉयज एसोसिएशन के सदस्य भरत कुमार ने बताया कि पटना युनिवर्सिटी के दस साल के गणित के दस अनसुलझे सवालों को वशिष्ठ बाबू ने महज आठ महीने में सुलझा दिया। कोई भी प्रश्न उनके लिए कठिन नहीं था। नेतरहाट स्कूल के हॉस्टल में रहते हुए वे अपने सिनियर को भी पढ़ाया करते थे। वशिष्ठ नारायण में सेवा की भावना कुट-कुटकर भरी हुई थी। इसलिए वे पढ़ाई में वहां के सभी छात्रों को हर संभव मदद करने की कोशिश करते थे। ●

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट www.psfsm.in

भारतीय संस्कृति और हुलासगंज मठ

● **वैंकेटेश कुमार**

संस्कृति शब्द अपने आप में बहुआयामी है। संस्कृत शब्द को किसी निश्चित सर्वमान्य एवं वैज्ञानिक परिभाषा में बांध सकना अपने आप में एक दुरूह कार्य है। फिर भी हम इस निबंध को शीर्षक के आलोक में कुछ विचार करे, उसके पूर्व यह जान लेना आवश्यक हो जाता है कि आखिर संस्कृति है क्या? सामान्य अर्थ में संस्कृति का संबंध ऐसे तत्वों से है, जो व्यक्ति का परिष्कार कर सके। दूसरे शब्दों में अगर ऐसा कहा जाये तो गलत न होगा कि संस्कृति शब्द संस्कार से बना है। संस्कार का होता है शुद्धि की प्रक्रिया। यह नग्न सत्य है कि संस्कृति और संस्कार में चोली-दामन का संबंध होता है। अभिप्राय यह है कि व्यक्ति को समाजिक प्राणि बनाने में जितने भी तत्वों का योगदान होता है, उन सभी तत्वों की व्याख्या का नाम ही संस्कृति है। यह मानव के विचारों एवं व्यवहारों के प्रतिमान को इंगित करती है।

आज के इस वैश्विक युग में मैं विश्व के मानचित्र पर भारतीय संस्कृति ने एक विशिष्ठ पहचान बना रखी है। सारा भारतीय संस्कृति की ओर विस्फारित नेत्रों से भारतीय संस्कृति की ओर देख रखा है। आखिर इसके कुछ कारण भी तो है। भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है। अन्य देश की संस्कृतियां समय के अंतराल में विनष्ट होती रही है। किन्तु भारतीय संस्कृति अनादि-आदि काल से ही अपनी परंपरागत अस्तित्व के साथ अक्षुण्य बनी हुई है। यह बहुत सारी विशेषताओं को अपने आगोश में लिए बैठी है।

दुर्भाग्य का विषय है कि ऐसी गौरवशाली भारतीय संस्कृति में आये दिन क्षरण होता चला जा रहा है। हम अपनी संस्कृति की मूल अवधारणा से अलग होते चले जा रहे हैं और इसका मूल कारण है पाश्चात्य सभ्यता के पीछे अंधी दौर। जिसने हमें मानव से विमुख कर दानवता की ओर उन्मुख कर रखा है। यहाँ विचारणीय प्रश्न यह है कि आखिर इसका कारण क्या है? आज का युग शुद्धतः आर्थिक युग हो गया है। अर्थ के भंवर जाल में फंसकर मानव अपने संस्कृति को भूलकर कुछ वैसे कार्यों में अपने आप को संलिप्त करता जा रहा है, जिसकी इजाजत हमारी संस्कृति नहीं देती। खासकर नैतिकता, सदव्यवहार एवं पारदर्शिता में तो इतनी बड़ी गिरावट आयी है कि कोई भी सुसंस्कृत व्यक्ति को कभी-कभी वर्तमान परिवेश को देखकर अपनी आँखे बंद कर लेनी पड़ती है। इस तरह से अनेकों उदाहरण हमें देखने को मिलते हैं।

आखिर जो भारतीय संस्कृति अपनी गौरवशाली मान्यताओं और परंपराओं के कारण विश्व स्तर पर पुजीत है और जिसमें आये दिन क्षरण होता जा रहा है, जिसकी सुरक्षा के लिए कुछ करना हम भारतीयों का पावन कर्तव्य नहीं बनता है क्या? जिस मानव में अपनी संस्कृति की सुरक्षा एवं संरक्षा का भाव नहीं होता है, सचमुच वह मानव कहलाने का अधिकारी नहीं है। ऐसी

अनेक संस्थाएं एवं संगठन आज भारत में देखने को मिल रही है, जिन्होंने भारतीय संस्कृति की मूल अवधारणा को जीवंत बनाए रखने का दायित्व अपने उपर ले रखा है। ऐसी ही संस्थाओं की श्रेणी में श्रीपराहुश संस्कृत संस्कृति संरक्षण परिषद हुलासगंज (जहानाबाद) का स्थान अपनी एक विशिष्ट पहचान रखता है। इस परिषद के माध्यम से अनेको कार्य योजनाएं आये दिन संचालित एवं कर्यान्वित की जा रही है, जो भारतीय संस्कृति की सुरक्षा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही है। यहां परिषद की कार्य योजनाएं, वहां के आचार्यों एवं विद्यार्थियों द्वारा किये गये कार्यों की ओर आप का ध्यान आकृष्ट करना चाहूंगा। संक्षेप में यहां यह उल्लेखित करना भी अप्रासंगिक न होगा कि पराहुश संस्कृत संस्कृति संरक्षा परिषद आखिर किस संस्था से संबंध है। अनन्त श्री विभुषित स्वामी रंग रामानुजाचार्य जी महाराज द्वारा संस्थापित हुलासगंज आश्रम (लक्ष्मी नारायण मंदिर) जहानाबाद का एक अभिन्न अंग है। इस परिषद के माध्यम से समाज में व्याप्त बहुत सारी विकृतियों को निर्मूल करने का हर संभव प्रयास अविराम गति से चलाया जा रहा है। यह सर्वविदित है कि आज के सामाजिक जीवन में मानवीय मूल्यों का कितना बड़ा ह्रास हुआ है। नैतिकता, ईमानदारी, सदव्यवहार आचरण जैसे शब्द आज के युग में मानों शब्दकोश की शोभा बढ़ाने के मात्र ही रह गये हैं। समाज के किसी भी स्तर पर हमें ये सारे मानवीय गुण दृष्टिगत नहीं होते। फलतः आज के सामाजिक जीवन में विकृतियां ही दृष्टिगत होती है। निर्विवाद है कि भारतीय संस्कृति बहुत हद तक आध्यात्म पर आधारित है और यह भी सत्य है कि आध्यात्म वैज्ञानिकता पर आधारित है और हमारा जीवन का संबंध वैज्ञानिकता से है। जीवन में जहां भी सांस्कृति स्खलन होता है, चाहे-अनचाहे जीवन कुप्रभावित होता है, हमारे जितने भी आध्यात्मिक सदग्रंथ यथा, वाल्मिकी रामायण, श्रीमद् भगवत, रामचरित मानस मनुस्मृति है, सबों की मूल भावना भारतीय संस्कृति से किसी न

किसी रूप में जुड़ी हुई है या यूं कहे कि भारतीय संस्कृति इन्ही सदग्रंथों पर आधारित है। कहा भी गया है, ''अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनं द्धयम परोपकाराय: पूण्याय पापाय परपिडणमां''। सचमुच पाप और पुण्य ही हमारी भारतीय संस्कृति के मूलधार है।

हुलासगंज आश्रम के द्वारा कुछ ऐसे कार्य संचालित किये जा रहे हैं, जो मानवीय जीवन में आध्यात्म को उतारने में अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं। आश्रम के माध्यम से समाज के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दी जा रही है। बच्चों को न सिर्फ पुस्तकीय ज्ञान दिया जा रहा है, अपितु उनके व्यक्तित्व का चर्तुदिक विकास भी किया जा रहा है। उनके व्यक्तित्व में कुछ ऐसे सदगुणों का बिजारोपण किया जा रहा है, जो उनके व्यक्तिगत जीवन के लिए लाभकारी तो है ही समाज को भी उससे बहुत बड़ा लाभ मिल रहा है।

स्वामी जी महाराज आज अपने जीवन के करीब-करीब 87-88 बसंत देख चुके हैं। इस अवस्था में भी वे लगातार अपने कथा-प्रवचन के माध्यम से न सिर्फ ग्रंथों की कथाओं की व्यवस्था करते हैं, अपितु सामाजिक जीवन में व्याप्त कुरितियों पर कड़ा प्रहार करते हुए सद्व्यवहारों की शिक्षा श्रोता समाज को दे रहे है। कर्तव्य-अकर्तव्य की व्याख्या करते हुए समाज को सुसंस्कृत करने का हर संभव प्रयास उनके द्वारा आबाध गति से चल रहा है। हम सभी यह जानते हैं कि गोस्वामी जी द्वारा रचित रामचरित मानस न सिर्फ हिन्दी साहित्य का महाकाव्य है अपितु यह मानवीय जीवन का भी महाकाव्य है। जीवन में आने वाली हर परिस्थितियों की व्याख्या हमें वहां मिलती है और उसके निराकरण का सहज मार्ग भी मिलता है। अगर एक वाक्य में हम कहना चाहें तो यह कह सकते हैं कि स्वामी जी महाराज सनातन धर्म के ध्वजवाहक हैं और हमारी भारतीय संस्कृति शुद्धत: सनातन धर्म पर आधारित है।

हुलासगंज आश्रम के माध्यम से न सिर्फ कथा-प्रवचन का कार्य चलाया जा रहा है, बल्कि धार्मिक एवं आध्यात्मिक संदेशवाहिका के रूप में वैदिक वाणी नामक त्रैमासिक पत्रिका भी प्रकाशित की जा रही है। इस पत्रिका में कुछ ऐसे तथ्य प्रकाशित हो रहे हैं, जो हमारे जीवन की उलझी समस्याओं को निराकरण में सहायक सिद्ध हो रही है। कुछ ऐसे तथ्य भी प्रकाशित हो रहे हैं जो हमारे जीवन की कुंठा को दूर करने में सहायक हो रहे हैं। भारतीय संस्कृति के संबंध में आज का मानव कुछ दिग्भ्रमित भी होता जा रहा है। उनके इस भ्रम जाल को काटने में वैदिक वाणी पत्रिका को निबंध की सार्थक भूमिका सिद्ध हो रही है।

जिस वैदिक वाणी पत्रिका के संबंध में उपर कुछ चर्चा की गयी है, उसके प्रधान संपादक हैं श्री स्वामी हरेरामाचार्य जी महाराज (छोटे स्वामी जी)। ये स्वामी रंग रामानुजाचार्य के एक मात्र विश्वास पात्र एवं सुयोग्यत्तम शिष्य और उनके उत्तराधिकारी हैं। हुलासगंज आश्रम के माध्यम से न सिर्फ संस्कृत साहित्य की निम्नत्तम कक्षाओं की शिक्षा दी जा रही है बल्कि संस्कृत साहित्य की उच्चत्तम से उच्चत्तम शिक्षा की व्यवस्था भी पराहुस संस्कृत महाविद्यालय, हुलासगंज के माध्यम से की जा रही है और इस महाविद्यालय के सुविज्ञ प्राचार्य हैं श्री स्वामी हरेरामाचार्य जी महाराज। भारतीय संस्कृति के निर्माण में संस्कृत की अहम भूमिका होती है।

किसी भी व्यक्ति का संस्कार एवं सामाजिक संस्कृति का निर्माण कुल निर्धारित समय में संभव नहीं होता। इसके लिए अनवरत साधना की आवश्यकता होती है। स्वामी रंग रामानुजाचार्य जी महाराज द्वारा संस्थापित हुलासगंज का यह आश्रम निरंतर इस क्षेत्र में क्रियाशील है। इस आश्रम में अंतेवासी छात्र अपनी जीवन को संस्कारित एवं सुसंस्कृत बना पा रहे हैं। इस आश्रम के दैनिक क्रियाकलापों पर हम जब दृष्टि निक्षेप करते हैं तो पाते है कि सचमुच ऐ सारे क्रियाकलाप छात्रों को सुसंस्कृत बनाने में कितनी बड़ी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। सनातन ध र्म के मान्यताओं के अनुसार ब्रम्हमुर्हत का जागरण न सिर्फ आध्यात्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है अपितु स्वास्थ्य के लिहाज से भी इसका बहुत बड़ा महत्व माना जाता है। इस आश्रम के छात्रों एवं आचार्यों का जागरण निश्चित रूप से ब्रम्हमुर्हत में होता है। इसके पश्चात सभी छात्र एवं आचार्यगण लक्ष्मी नारायण मंदिर में जगमोहन एक होकर संवेद भाव से सुप्रभातम का कार्य करते हैं। इसके पश्चात सामान्य दैनिक क्रियाओं से निवृत होकर पठन-पाठन में संलिप्त हो जाते हैं। अनुशासन की स्थिति यह है कि इन सारे कार्यों का क्रियान्वयन स्वत: स्फूर्त भाव से होता जाता है। इतना ही नहीं जब छात्रों के लिए भगवान का प्रसाद पाने का समय आता है तो एक बार पंक्तिबद्ध होकर प्रसाद पाने के लिए छात्रगण बैठते हैं और मंत्रोचारण के उपरांत प्रसाद ग्रहण करते हैं। ये सारे कार्य भी जीवन को संस्कारित एवं सुसंस्कृत करने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। कहा भी गया है-

'साथ में खेले, साथ में खाये,
साथ करेंगे अच्छे काम।
जब तक जग का भला न होगा,
नहीं करेंगे हम विश्राम॥

भाव यह है कि समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में छात्रों एवं आचार्यों की कौन सी भूमिका होती है, इस बात की शिक्षा भी हुलासगंज आश्रम में आये दिन वहां के छात्रों को सुधी सुविज्ञ एवं सुसंस्कारित आचार्यों के द्वारा दी जा रही है और शायद यही कारण है कि इस आश्रम से शिक्षा ग्रहण के बाद निकलने वाले छात्र समाज में अपनी एक विशिष्ट पहचान बना रखे हैं और अपने व्यक्तित्व की अमीट छाप समाज पर छोड़ते दिखाई पड़ेते हैं।

अंत में संक्षेप में मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि यह हुलासगंज आश्रम जिस रूप में आज समाज की सेवा कर पा रहा है। मानवता की रक्षा में जो अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। इसके लिए आश्रम के संस्थापक स्वामी जी महाराज एवं वहां के आचार्यगण शत्-शत् नमन के पात्र है। आगे आने वाले दिनों में यह आश्रम दिन दूनी, रात चौगुनी गति से विकसित होता रहे। श्रीमन्ननारायण से मेरी यही विनित प्रार्थना है। ●

गांधी की अंतिम इच्छा पाकिस्तान में दम तोड़ने की

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

भारत की अद्भुत विविधतापूर्ण समन्वयवादी संस्कृति की झलक अब से 550 वर्ष पूर्व देव दीपावली के दिन जन्मे सिख पंथ के संस्थापक गुरु नानक देव जी अपनी वाणी में सदृश करके पूरी दुनिया को रौशनी दिखाई थी। यह उसका ही परम प्रताप था कि 1893 में अमेरिका के शहर शिकागो में विश्व धर्म संसद के सम्मेलन में महान भारतीय मनीषी स्वामी विवेकानन्द ने घोषणा की थी कि भारत मानवीयता के संस्कारों से 'जुड़ा' हुआ ऐसा देश है जिसमें किसी व्यक्ति का धर्म इसकी राष्ट्रीय पहचान में आड़े नहीं आता। वास्तव में स्वामी विवेकानन्द उस दौर के ऐसे महान विचारक और आध्यात्मिक सन्त थे जिन्होंने भारत की अनुभूति धर्म ग्रन्थों से अधिक इसकी मानवीय जन- परंपराओं से की थी, उन्होंने जब धर्म संसद में उपस्थित श्रोताओं को बहनों और भाइयों से सम्बोधित किया था तो स्पष्ट हो गया था कि भारत के नागरिकों के आपसी सम्बन्ध आदमी और औरत से ऊपर आत्मीय पारिवारिक रिश्तों की डोर से बन्धे होते हैं जिसमें प्रत्येक व्यक्ति की सहभागिता स्त्री, पुरुष के विलगाव के भाव से स्वत: ऊपर उठ जाती है। यह 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उद्घोष था, परन्तु इसके मूल में महान गुरु नानकदेव जी महाराज का वह भारत वर्णन था जो उन्होंने अपने जीवनकाल में व्याख्यायित किया था-

''कोई बोले राम- राम, कोई खुदाया
कोई सेवैं गुसैय्यां, कोई अल्लाया
कोई नहावे तीर्थ, कोई हज जाये
कोई करे पूजा, कोई शीश नवाये॥''

गुरु ग्रन्थ साहिब की शोभा बनी इस वाणी में हम भारत की उस आत्मा को देख सकते हैं जो इसकी 'रज' में आदिकाल से व्याप्त रही है। बेशक गुरु महाराज का कर्म काल मुगल शासन की शुरूआत रहा है परन्तु उन्होंने इस देश में इस्लाम धर्म के प्रादुर्भाव का सम्मान करते हुए अपनी वाणी को वर्णित किया, परन्तु पिछली सदी में बिना किसी शक के वह सबसे बड़ी मानवीय त्रासदी थी जब 1947 में मजहब के नाम पर मुहम्मद अली जिन्ना ने भारत के दो टुकड़े करा डाले और धर्म को राष्ट्रीयता का परिचायक बना डाला। किन्तु गांधी ने तभी कहा कि 'उनकी अन्तिम इच्छा पाकिस्तान में ही दम

तोड़ने की होगी'। गांधी का यह कथन द्विराष्ट्रवाद के सिद्धान्त पर उसी समय करारा तमाचा था। मैं इस विवाद में नहीं पड़ रहा हूं कि हिन्दू-मुस्लिम आधार पर द्विराष्ट्रवाद का सिद्धान्त सबसे पहले सावरकर ने अंग्रेजों से क्षमा याचना करने के बाद अंडमान जेल से रिहा होने पर अपनी एक पुस्तक में दिया और बाद में 1935 के हिन्दू महासभा के अधिवेशन में इसे रखा गया अथवा 1930 में मुस्लिम लीग के इलाहाबाद सम्मेलन में 'मुस्लिम राज्य' की मांग स्वयं अल्लामा इकबाल ने इसकी सदारत करते हुए पहली बार की और 1936 के आते-आते जिन्ना ने अलग पाकिस्तान की मांग शुरू कर दी, परन्तु हकीकत तो यही रहेगी कि 1947 में भारत को काट कर ही एक नाजायज मुल्क पाकिस्तान बन गया जिसका राजधर्म इस्लाम घोषित किया गया और बाद में वहां रहने वाले अल्पसंख्यक हिन्दू व सिखों का जीवन लगातार दूभर बनता चला गया।

अत: उनके भारत में शरण मांगने के हक को पूरी तरह जायज माना जाना चाहिए परन्तु मुख्य मुद्दा हिन्दुओं व गैर मुस्लिम विदेशी नागरिकों को भारत की नागरिकता देने का नहीं है बल्कि विदेशी मुस्लिम नागरिकों द्वारा भी ऐसी ही गुहार लगाये जाने पर उन्हें भारत में शरण देने का है जिस पर भाजपा के विरोधी दल लगातार जोर दे रहे हैं। इसमें सबसे बड़ा पेंच यह है कि भारत के संविधान को लिखने वाले हमारे 'काल ऋषियों' ने नागरिकता देने के लिए धर्म को कभी मुद्दा माना ही नहीं और नागरिकता पाने व नागरिक होने के नियम सभी प्रकार के भेदभाव से ऊपर उठकर बनाये। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि इन मनीषियों ने बाबा साहेब अम्बेडकर की निगरानी में संविधान का 80 प्रतिशत से ज्यादा हिस्सा भारत का बंटवारा होने के बाद ही लिखा। हिन्दू-मुस्लिम का प्रश्न उनके सामने इतनी भीषण त्रासदी हो जाने के बावजूद क्यों नहीं आया? बल्कि उन्होंने संविधान के अनुच्छेद 14 में स्पष्ट किया कि भारत के किसी भौगोलिक भाग में धर्म, नस्ल या जाति अथवा लिंग की वजह से किसी भी व्यक्ति के साथ अन्याय नहीं किया जा सकता और कानून के सामने सभी बराबर होंगे। तर्क दिया जा रहा है कि नागरिक संशोधन अधिनियम भारत के नागरिकों पर नहीं बल्कि विदेशों से आने वाले शरणार्थियों की नागरिकता तय करने से होगा, परन्तु मूल सवाल यह है कि भारत की धरती पर आकर ही तो वे नागरिकता की मांग करेंगे। विपक्ष को यह भी दिक्कत है कि मोदी सरकार केवल तीन इस्लामी देशों पाकिस्तान, बंगलादेश व अफगानिस्तान के शरणार्थियों के लिए ही ये कानून बनाना चाहती है जबकि म्यांमार से लेकर मालदीव व श्रीलंका के शरणार्थियों पर यह कानून लागू नहीं होगा। धार्मिक आधार पर यदि इन देशों में भी प्रताड़ना दी जाती है तो वहां के शरणार्थियों के लिए सरकार क्यों नहीं सहृदयी होगी? हमारी शरणार्थी नीति पाकिस्तान केन्द्रित क्यों हो जबकि हमें मालूम है कि अफगानिस्तान से हमारी सीमाएं बामुश्किल ही छूती हैं और जहां छूती हैं वह कश्मीर का इलाका पाकिस्तान के कब्जे में है। बंगलादेश हमारा ऐसा परम मित्र देश है जिसका राष्ट्रगान तक हमारे गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर का लिखा हुआ है और वह भी तब है जबकि इस देश का राजधर्म 'इस्लाम' जबरन लादे गये फौजी शासन के दौरान किया गया था वरना यह देश बांग्ला संस्कृति का अद्भुत ध्वज वाहक देश है और इसमें रहने वाले हिन्दू व बौद्ध निर्भय होकर उसी प्रकार जीवन गुजारते हैं जितने कि भारत में मुसलमान इक्का-दुक्का घटनाओं को अपवाद ही कहा जायेगा। अत: बहुत आवश्यक है कि हम भारत की वीणा के तारों को 'झंकृत' करें और उससे निकलने वाले 'सुर' की 'लय' को समझें। कानून बनते रहते हैं मगर देश इनमें रहने वाले लोगों से ही बनता है और इनकी आपसी एकता ही राष्ट्रीय एकता में परिवर्तित होती है। ●

महिलाओं के खिलाफ अपराधिक मामलों में 21 दिनों में फैसला कानून

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

आंध्र प्रदेश विधानसभा में दिशा विधेयक को पारित किया गया है, जिसमें महिलाओं के खिलाफ आपराधिक मामलों का निपटारा 21 दिनों में किया जाएगा। इस नए कानून में रेप के पुख्ता सबूत मिलने पर अदालतें 21 दिन में दोषी को मौत की सजा सुना सकेंगी। पुलिस को सात दिन में जांच पूरी करनी पड़ेगी। यद्यपि दिशा बलात्कार और हत्याकांड पड़ोसी राज्य तेलंगाना में हुआ है लेकिन आंध्र सरकार ने महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा को देखते हुए 'दिशा कानून' पारित किया है। बाल यौन शोषण के दोषियों को दस वर्ष की सजा का प्रावधान किया गया है, अगर मामला बेहद गम्भीर और अमानवीय है तो उम्रकैद की सजा भी दी जा सकती है। हैदराबाद में डा. दिशा के साथ हुई घटना ने जिस तरह से पूरे देश की भावनाओं को उद्वेलित किया और जनता की मांग थी कि त्वरित न्याय हो। उसके बाद तेलंगाना पुलिस ने मुठभेड़ में चारों आरोपियों को मार गिराया तो पूरे देश को लगा कि पुलिस ने त्वरित न्याय दिलाया है तो वह जश्न मनाने लगा। जनभावनाओं की दृष्टि से देखा जाए तो आंध्र प्रदेश की जगनमोहन रैड्डी सरकार द्वारा नया कानून बनाने का स्वागत ही किया जाएगा। दक्षिण भारत के फिल्मी सितारों ने भी त्वरित न्याय दिलाने के लिए सरकार की पहल का स्वागत किया है। जनता ऐसा ही न्याय चाहती है। जनता की मांग यही है कि बलात्कारियों को जिंदा जला दिया जाए।

ऐसा नहीं है कि देश में महिलाओं के प्रति अत्याचारों के लिए दोषियों को दंडित करने के लिए कानून नहीं है। निर्भया कांड के बाद भी जनाक्रोश को देखते हुए बलात्कार और हत्या जैसे क्रूरतम अपराधों के लिए कानून को सख्त बनाया गया था। सवाल यह है कि क्या दोषियों को 21 दिन में फांसी की सजा का ऐलान कर देने से अपराध रुक जाएंगे? क्या ऐसा करने से अपराधियों में खौफ पैदा होगा? कुछ विधि विशेषज्ञों का कहना है कि सिर्फ जनभावनाओं या जनाक्रोश को देखते हुए कानून बना देने से कुछ नहीं होने वाला। त्वरित न्याय को लेकर कई आयोगों और संसदीय समिति की ओर से सिफारिशें मिली हैं। नेशनल लॉ कमीशन के अनुसार प्रति दस लाख की आबादी पर कम से कम 24 जज होने चाहिएं, लेकिन इस समय केवल 13 जज हैं। फोरेंसिंक लैब की रिपोर्ट आने में काफी समय लग जाता है। चार्जशीट फाइल करने में ही एक हफ्ते का वक्त तो होना ही चाहिए। अपराधी को अपराध की गम्भीरता के अनुसार ही दंडित किया जाना चाहिए। इसके लिए जो भी जरूरी तत्व हैं वह आंध्र सरकार द्वारा पारित किए गए कानून में नहीं हैं। विधि विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसी घटनाओं पर पुलिस की प्रतिक्रिया काफी ढीली-ढाली होती है, जो लोग डायल सौ पर जवाब देने में सक्षम नहीं हैं, वह 21 दिन में क्या किसी को न्याय दिलाएंगे। न्यायपालिका और पुलिस में खाली पड़े पदों पर नियुक्तियों को भी प्राथमिकता देनी चाहिए। कानून बनते रहते हैं लेकिन व्यवस्था में बदलाव भी बहुत जरूरी है। अगर व्यवस्था ही नहीं होगी तो फिर कानून लागू कैसे होंगे। देश में कैपिटल पनिशमेंट को लेकर पहले भी कई बार बहस हो चुकी है। एक दृष्टिकोण तो यह है कि दुर्लभ से दुर्लभ मामलों में फांसी दी जाए और दूसरा दृष्टिकोण यह है कि ऐसे अपराधियों को जीवन भर जेल की सलाखों के पीछे बंद रखा जाए। अनेक बुद्धिजीवियों का मानना है कि मृत्युदंड की सजा से तो अपराधी को जीवन से मुक्ति मिल जाती है, बलात्कारी हत्यारे को तो एक ऐसा जीवन देना चाहिए, जिसमें उसके लिए करने को कुछ न हो, वह अपराध को याद करता हुआ पल-पल मौत का इंतजार करता रहे। कई मामलों में देखा गया है कि फांसी की सजा के मामले में

सियासत भी हुई। 1999 में सुप्रीम कोर्ट ने राजीव गांधी की हत्या की साजिश में शामिल मुरुगन, संथम व पेरारीवल्लन को मृत्युदंड देने की पुष्टि की थी लेकिन उन्हें बचाने के लिए कुछ मानवाधिकार संगठनों ने विरोध शुरू कर दिया। इन तीनों अपराधियों ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर कर दी कि सजा लागू करने में असामान्य देरी हुई है, उसे ध्यान में रखते हुए मृत्युदंड को उम्रकैद में बदल दिया जाए। अब तक इन्हें फांसी की सजा नहीं दी गई। राजीव गांधी की हत्या में नलिनी को भी मृत्युदंड दिया गया था लेकिन अप्रैल 2000 में तमिलनाडु के राज्यपाल ने उसकी सजा को उम्रकैद में बदल दिया। पंजाब के मुख्यमंत्री रहे बेअंत सिंह के हत्यारे राजोआना को भी फांसी की सजा नहीं दी गई। निश्चित रूप से इसके पीछे सियासत हुई। यह भी तर्क दिया गया कि अपराध चाहे कितना ही घिनौना क्यों न हो लेकिन आधुनिक सभ्य समाज में अपराधी को प्रायश्चित, विलाप, सुधार आदि का एक अवसर तो दिया जाना चाहिए। यह भी सही है कि मृत्युदंड का इस्तेमाल अपराधों को रोकने और न्याय की दृष्टि से किया जाता है अगर उस पर भी सियासत का रंग चढ़ा दिया जाए तो फिर अपराध रुकेंगे कैसे। आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा 21 दिन में दोषी को सजा सुनाने का कानून सही है लेकिन देखना होगा कि यह कितना कारगर रहता है और यह भी देखना होगा कि यह कानून अन्य राज्यों के लिए नजीर कैसे बनेगा। ●

बाढ़ भाजपा जिलाध्यक्ष का अभिनंदन

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

भारतीय जनता पार्टी के संगाठिनक बाढ़ जिला अध्यक्ष डॉ शियाराम सिंह को अभिनन्दन एवं सम्मानित किया गया। बाढ़ नगर मंडल में डॉ शियाराम सिंह को अभिनन्दन करते हुए उनके उदार व्यक्तित्व और कुशल नेतृत्व का बखान करते हुए वक्ताओं ने कहा कि डॉ0 शियाराम सिंह जैसे जिलाध्यक्ष पाकर फुले नहीं समा रहा हूँ। भाजपा के सभी कार्यकत्ताओं को पूर्ण विश्वास है कि समाज के अंतिम पावदान पर खड़े लोगों के जिलाध्यक्ष बनने से खुशहाली आएगी। वक्ताओं के सम्बोधन में कहा कि भारत के हिन्दू और मुसलमान के बीच कोई मतभेद नहीं है। मुसलमान भारत के नागरिक है और रहेगें। नागरिक संशोधन अधिनियम में भारतीय मुसलमानों को कोई लेना देना नहीं है। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बंगला देश से भगाए गए उत्पीड़ित हिन्दू, सिख, ईसाई लोगों को नागरिकता देने की है किसी को नागरिकता छीनने का मामला नहीं है। विपक्षी लोग दिगभ्रमित कर लोगों को उक्साने का काम किया जा रहा है। समाज एवं हित में तीन तलाक समाप्त कर मुस्लिम महिलाओं के हित का काम किया गया है। धारा 370 एवं 35 ए समाप्त कर कश्मीर और भारत को एक झड़ा एक कानून एक संविधान का दर्जा देकर कश्मीर के विकाश का रास्ता खोल दिया

गया है। कांग्रेसी सरकार कश्मीर को भारत से अलग कर झंड़ा अलग कर दिया था, दोनों का संविधान भी अलग कर दिया था, वहाँ छः साल पर चुनाव होता था। सुप्रीम कोर्ट के अधीन भी नहीं था, राष्ट्रीय सुरक्षा छोड़ किसी भी कानून लागु नहीं होता था। वक्ताओं ने कहा कि देश में एकता और अखण्डता के लिए और भी बदलाव कि आवश्यकता है। एक समय था कि प्रधान मंत्री को अमेरिका बीजा देने को तैयार नहीं था और आज मोदी को पीछे चलने को तैयार है। अभिनन्दन समारोह में फतुहा नगर अध्यक्ष शोभा देवी ने डा0 शियाराम सिंह को सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक भेंट किया भाजपा के सक्रीय कार्यकर्त्ता अनील कुमार शर्मा मदभागवत गीता भेट किया, डा0 लक्ष्मी नारायण सिंह ने कुरान भेंट किया। इस अवसर पर संजीव क्षत्रिय, धीरेन्द्र सिंह, डब्लु, संजीव, मुन्ना जी, रमण जी, अवधेश प्रसाद भाजुमो अध्यक्ष, राजु कुमार मुन्ना, केशव कान्त, मुकेश सिंह तथा फतुहा के भाजपा कार्यकत्ताओं में भाजपा फतुहा, नगर मंडल अध्यक्ष शोभा देवी, फतुहा उत्तरी ग्रामीण अध्यक्ष पारस नाथ यादव, दक्षिणी ग्रामीण अध्यक्ष राम तीर्थ कुमार, राजेन्द्र राणा पासवान, अरूण कुमार झा, अरविन्द कुमार यादव, गणेश सिंह, मुन्ना सिंह, अनील कुमार शर्मा, जितेन्द्र मिस्त्री, मीणा देवी, अनामिका अग्रवाल, पुष्पा देवी, सुनीता देवी, बीणा देवी, अभिषेक झा, दिनेश कुमार साथ ही सभी मण्डल के अध्यक्ष आदि मौजूद थे। ●

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/9955077308

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

किसी शायर ने कहा हैं कि युवाओं के कंधों पर युगों की कहानी चलती हैं, इतिहास भी उधर मुड़ जाता हैं जिधर जवानी चलती हैं। हमें इन भावों को साकार करते हुए अंधेरों को कोसने की बजाए ''अप्प दीपो भव:'' की अवधारणा पर दीप जला देने की परम्परा शुरू कर देनी चाहिए। युवा शब्द सुनते ही मन मे जोश ,जुनून एवं ऊर्जा से लबरेज चित्र दिमाग मे पनपने लगती हैं लेकिन आज युवाओं की वजूद की बदौलत पूरा विश्व को लोहा मनवाने वाला युवा भारत युवाओ की स्थिति पर तरस खाता दिख रहा हैं। किसी भी राष्ट्र के निर्माण में युवाओ की अहम जिम्मेदारी होती हैं जिसकी बदौलत वह राष्ट्र विकसित हो विशिष्ट स्थान पाने में सफल होता हैं लेकिन हमारे राष्ट्र में युवा एक चिंता का विषय बनकर रह गया हैं। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र एवं यहाँ की व्यवस्था युवाओं को अपनी तरफ जोड़ने में असफल दिख रही हैं या आखिर किन वजहों से युवा राष्ट्र निर्माण में अपनी योगदान देने से चूक रहे हैं यह सोचनीय हैं। क्यों मार्ग से भटक रहे हैं युवा, किनकी गलतियों का दंश झेल रहे हैं, गरीबी अशिक्षा या बेरोजगारी कौन लील रही हैं युवाओ को, राजनीति युवाओं को किस तरह अपने लिए इस्तेमाल कर रही हैं,सड़को पर पत्थरबाजी के लिए युवाओ के पास इतना खाली समय कैसे रहता हैं यह सवाल देश की अहम मुद्दों में शामिल होनी चाहिए क्योंकि इन युवाओ की वजह से ही भारत को युवा भारत माना जा रहा हैं और युवाओ को सही मार्गदर्शन नहीं मिलना राष्ट्र को कभी भी विकसित होने की बजाए पतन की

आखिर क्यों भटकते हैं युवा

ओर धकेल सकता हैं। 2011 कि जनगणना के अनुसार 2020 तक भारत की औसत आयु 29 वर्ष होगी और अगले 20 वर्षो तक युवाशक्ति के रूप में भारत पूरे विश्व मे अपनी परचम लहरायेगा। आनेवाले यह 20 वर्ष भारत को अपनी शक्ति, ऊर्जा को पहचानने का समय हैं, किस तरह से मार्ग से भटके हुए युवा का भी सही मार्गदर्शन सम्भव हो ताकि वह राष्ट्रनिर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके। युवाओं के प्रिय, युवाओं के आदर्श एवं भारत की लोहा पूरे विश्व मे बजाने वाले नरेंद्र दत्त जिन्हें स्वामी विवेकानंद के नाम से भी पूरी दुनिया परिचित हैं,उनकी प्रतिमा पर भारत की सबसे प्रसिद्ध जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी में अभद्र टिप्पणी करने के साथ साथ मूर्ति से छेड़छाड़ कर ढक दिया जाता हैं जो बेहद ही चिंता का विषय हैं। जिस राष्ट्र में युवाओं के लिए इस महान शख्सियत के जन्मदिन पर राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया जाता हो,जिन्हें पूरे विश्व के लोग मानते एवं अनुसरण करते है उस राष्ट्र में ही शिक्षित युवाओं के द्वारा इस तरह की कुकृत्य क्या सन्देश देगा। आखिर अपने लक्ष्य के प्राप्त करने की बजाए अन्य माध्यमों की ओर क्या युवाओ का रुझान बढ़ता जा रहा हैं जहाँ कुछ फ्यूचर हीं न दिखता हो। इन्हीं सब सवालों को ढूंढने के लिए हमलोग ने प्रसाशनिक पदाधिकारी, पुलिस पदाधिकारी, समाजसेवी, पत्रकार से भी जानने की कोशिश की जिनके कार्यो की सराहना युथ करते आ रहे हैं वह क्या युवाओं को मार्गदर्शन करेंगे। प्रस्तुत है **श्रीधर पाण्डेय** की रिपोर्ट :-

बहुत से युथ मिस गाइड हो जाते हैं, उनको लोग प्रलोभन में ले लेते हैं, उनका सुनहरा भविष्य दिखाकर उनके कैरियर को बर्बाद किया जा रहा हैं,इससे युवाओं में फ्रस्टेशन आ जाता हैं। गलत संगत में आ जाने की वजह से भी युथ पढ़ाई लिखाई के मार्ग से भटक रहे हैं एवं अपराध एवं गैरकानूनी गतिविधियों में संलिप्त हो जाते हैं। बहुत से लोग अपना एक जीवन का उद्देश्य बनाकर चलते हैं अगर उनकी पूर्ति नहीं होती हैं तो निराशा आती हैं,उसके कारण भी बहुत से लोग भटकते हैं। कभी कभी इसका दुरुपयोग ऐसे तत्व उठाते हैं जो मार्ग से भटक गए

हैं युथ उन्हीं के माध्यम से गैरकानूनी एवं राष्ट्र विरोधी कार्य कराया जाता है। बिहार के परिपेक्ष्य या पुलिस के दृष्टिकोण से देखिए तो अभी जो क्राइम हो रहा हैं खास तौर से बैंक लूट,डकैती में जो इनवॉल्व हैं उनमें मैक्सिमम युथ हैं जिनकी एज ग्रुप 16 से 22 साल तक हैं। आखिर ये बच्चे इतनी जल्दी अपराध की दुनिया मे कहाँ से कदम रखते हैं बहुत ही चिंता का विषय हैं। ए पार्ट फॉर्म क्राइम कन्ट्रोल जो हमलोगों का पार्ट हैं उसके अलावा हमलोगों ने जागरूकता के माध्यम से भी लोगो को सजग रहने हेतु प्रयास किया हैं। आप भी जानते ही हैं हमारे डीजीपी साहब भी नशामुक्ति के लिए पूरे बिहार का भ्रमण कर लोगो

को जागरुक करने का भरपूर प्रयास किया हैं,जिसमे युथ काफी मात्रा में उपस्थित रहते हैं।

बतौर पुलिस महानिरीक्षक मेरा युवाओ के लिए संदेश हैं कि हमारे देश की संस्कृति हैं, संविधान हैं उसके प्रति सभी को समर्पित रहना होगा। अपराध, गैरकानूनी, राष्ट्रविरोधी हरकत किसी भी सूरत में नहीं करना चाहिए।इसके लिए अभिभावक, स्कूल संस्थान हमेशा गाइडेंस करते रहे। शिक्षा के साथ साथ नैतिक शिक्षा भी जरूरी हैं ताकि वह अपनी संस्कृति एवं संस्कार से जुड़ा रह सके। समाज के प्रभाव भी युथ के ऊपर पड़ता हैं, इसलिए समाज की सकारात्मक सोच ही बेहतर हैं और अपनी भविष्य पर ज्यादा फोकस करें। हमलोगों ने देखा हैं बहुत ही गरीबी घर के लड़के, अशिक्षित घर के लड़के, पिछड़े समाज से जहाँ शिक्षा की आज भी तवज्जो नहीं दी जाती हैं वहाँ के बच्चे बड़ी मेहनत करके बड़े उच्चे उच्चे पदों पर आसीन हैं, वो लग्न, मेहनत और उस आदमी के अंदर विश्वास, देशभक्ति एवं देश के प्रति कुछ करने की चाहत हैं यह सर्वप्रथम जरूरत हैं किसी भी यूथ के लिए आजकल और मैं समझता हूं किसी युथ को अपने आप पर विश्वास हैं, अपने देश, प्रदेश की प्रति प्रेम आस्था हैं वह युथ कभी भटकेगा नहीं । हमारे यहाँ टैलेंट की कोई कमी नहीं हैं, यह एक ऐसा प्रदेश हैं जहाँ गरीब से गरीब ऐसे ऐसे एरिया से विदेश जाकर पढ़ाई किये हैं, सिविल सर्विसेज में उच्चे स्थान पर हैं, आईआईटी आईआईएम में एक से एक मजदूर के बेटे गए है जिनकी कल्पना करना सम्भव नहीं था। उनके माता पिता,गुरु सभी को आगे आना होगा एक बेहतर समाज के लिए, बेहतर भविष्य के लिए ,बेहतर राष्ट्र के लिए।

नैयर हसैनन खान
(आई.जी., मुख्यालय)

☞ गाइडेंस के अभाव, सोशल नेटवर्किंग का बढ़ता प्रभाव, स्कूली एवं नैतिक शिक्षा का गिरता स्तर युवाओ को अपनी दिशा से भटका रहा हैं,मै युवाओं से अपील करना चाहूंगा कि सबसे पहले वह अपना आत्मबल मजबूत करें, सोशल नेटवर्किंग पर समय देने की बजाए सोशल कामों पर ध्यान दे, खुद बदलाव की तरफ सोचे,कोई भी ऐसा कदम नहीं उठाना चाहिए जो दूसरे के लिए बुरा हो तो निश्चित तौर पर सामाजिक बदलाव देखने को मिलेंगे और अपना भविष्य के लिए लक्ष्य तय कर ले कि मुझे इन जीवन मे क्या करना हैं और उसकी योजना बनाकर उस काम की शुरुआत कर अपना बेहतर भविष्य का निर्माण करें,उसका बेहतर भविष्य ही इस राष्ट्र का विकास में महत्वपूर्ण योगदान होगा।

कांतेश मिश्र
(ग्रामीण एस.पी., पटना)

☞ हमारे समाज ने एक से बढ़कर एक महापुरुषों को जन्म दिया हैं जिनके अनुसरण पर करते हुए हम राष्ट्र निर्माण में अपनी महती

भूमिका निभा सकते हैं। डॉ एपीजे अब्दुल कलाम ने कहा था कि सोते हुए सपना मत देखिए,खुली आँखों से सपना देखिए। जबतक खुली आँखों वाले सपनो का आभाव रहेगा जिंदगी में भटकाव रहेगा। व्यवहारिक तौर पर युवाओ को ऑपर्चुनिटी देना होगा चाहे वह मेल हो या फीमेल। मेल तो थोड़ा दूर के फायदा उठा सकता हैं लेकिन फीमेल के सारे सुविधायें अगर नजदीक में हो तो वह बेहतर कर देती हैं। ग्रामीण परिवेश में लोग कम उम्र में ही अपनी बेटियों की शादी कर देना चाहते हैं क्योंकि उसकी पढ़ाई पूरी हो जाती हैं और आगे की पढ़ाई के लिए नजदीक में कोई साधन नहीं होता। सपना, मार्गदर्शन एवं ऑपर्चुनिटी इन तीनों का आभाव युवाओं में भटकाव पैदा कर देता हैं इसके लिए समाज, अभिभावक एवं यूथ को चिंतन करने की जरूरत हैं ताकि बेहतर राष्ट्र के निर्माण में वह अपनी भूमिका दे सके।

मनोज कुमार
(एस.पी. सुपौल)

☞ आजकल के शिक्षा पद्धतियों में सुधार की जरूरत हैं युवाओं को शिक्षा के साथ साथ उन्हें चरित्र निर्माण की भी शिक्षा देना आवश्यक हैं ताकि उनका चरित्र एवं आत्मबल ऊंचा रहें। शिक्षक एवं छात्रों के बीच रिश्ते में समयानुकूल इतना बदलाव हो गया हैं कि लोग इसे प्रोफेशन मानकर अपना ड्यूटी पूरा कर रहे हैं न कि क्या गलत हैं क्या सही हैं इस पर जोड़ दे रहे हैं। इसके लिए शिक्षक एवं छात्र ही नहीं जिम्मेदार हैं बल्कि पूरा समाज इसके लिए जवाबदेह हैं। किसी भी राष्ट्र निर्माण में युवा मुख्य कड़ी होता हैं उन्हें भविष्य को और बेहतर बनाने के लिए, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए ठोस कदम पूरे समाज के साथ उठाने की जरूरत हैं ताकि युवाओं को एक बेहतर समाज का लाभ मिल सके और वह राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके।

अशोक मिश्र
(नगर पुलिस अधीक्षक, पटना पश्चिमी)

☞ युवा के भटकने के कई कारण हो सकते हैं जिसमे मुख्य रुप से हमे यह देखने की जररूत हैं कि युवा को प्रभावित कौन कर सकता हैं।

सबसे पहले पेरेंट्स, स्कूल -कॉलेज,समाज इन्हीं तत्वों का युवा पर प्रभाव पड़ता हैं। आजकल मीडिया भी युवाओ के भटकाव का माध्यम बन रहा हैं ,इससे जरूरत की जानकारी से ज्यादा अनाप शनाप चीजे देखने मे युवा व्यस्त हो जाते हैं। भटकने के बहुत सारे कारण हैं, हो सकते हैं ,आजकल बच्चे में नशे की लत लग रही हैं जिस पर कंट्रोल करना बेहद ही जरूरी हैं,जो बच्चे पढ़ने लिखने के दरम्यान नशा का सेवन करने लगे उनका भविष्य क्या होगा। लेकिन अभिवावक का कंट्रोल अपने बच्चे पर रहा और उसे उचित शिक्षा एवं बेहतर सामाजिक माहौल मिला तो निश्चित तौर पर हमारे यूथ राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसलिए हम अभिभावकों से अपील करना चाहेंगे कि अपने बच्चे की मॉनिटरिंग लगातार करते रहे ताकि वह अपना बेहतर भविष्य बना सके हैं साथ ही युवाओ के लिए संदेश हैं कि आपको कभी भी वह चीज नहीं करनी चाहिए जिससे समाज पर बुरा प्रभाव पड़ें और अपनी करियर के प्रति सजग रहें क्योकि शिक्षा से बड़ा कोई साथी नहीं होता।

स्वर्ण प्रभात
(सहायक पुलिस अधीक्षक, लॉ एण्ड ऑडर, कोतवाली, पटना)

☞ युवाओं के भटकाव के कई कारण हो सकते हैं व्यक्तिगत ,परिवारिक एवं समाजिक कारणों से युथ की मनोदशा में बदलाव होते रहता हैं।सबसे पहले युवा जब अपनी शिक्षा ग्रहण करने

जा रहे हैं उनके सामने उसका उद्देश्य होना जरूरी हैं,ताकि वह करना क्या चाहता हैं।वह करना क्या चाहता हैं इसपर परिवार को भी ध्यान देने की जरूरत हैं ताकि करना क्या चाहता हैं,मान लीजिए वह डांसर बनना चाहता हैं और परिवार कहे कि शिक्षा ग्रहण कर नौकरी ले लो ,जो कि उसे दोनों में से कहीं सफल नहीं होने देगा।युथ को सोचना चाहिए उनका कैरियर कैसे मजबूत बन सकेगा इसके लिए दिन रात मेहनत करे समाज मे सफल व्यक्तियों से सलाह ले एवं अपनी लक्ष्य के प्रति अडिग रहे तो निश्चित तौर पर सफलता मिलेगी एवं हमारा राष्ट्र बेहतर निर्माण करेगा।

रणविजय सिंह
(एडीजी, संचार मंत्रालय, भारत सरकार)

☞ आज के यूथ में कहीं न कहीं घर परिवार के उचित मार्गदर्शन आभाव, उचित शिक्षा, आधुनिकता जीवन,नशा सेवन अपने ओर ग्रसित कर रखा हैं वे किसी क्रांतिकारी, महान व्यक्तित्व के अनुसरण के बजाए किसी फिल्मी हीरो के

रूप में खुद को समझ गर्वान्वित हो रहे हैं जो कि बिल्कुल ही उनके भटकाव की दिशा को गति देता हैं। किसी भी राष्ट्र का भविष्य युवा ही होता है और भारत मे आज युवाओ की संख्या पूरे विश्व भर से ज्यादा हैं जिससे इसे युवा भारत कहा जाता हैं यहाँ की युवाओ को मेरा संदेश हैं कि अपने काम को ईमानदारी पूर्वक करे,राष्ट्र निर्माण में उनकी जरूरत हैं और वह जहाँ भी हो जिस पोस्ट पर रहे हैं राष्ट्र के प्रति सजग रहे, महान व्यक्तित्व जिनके जन्मदिवस पर युवा दिवस मनाया जाता हैं उनका अनुसरण कर अपने काम को ईमानदारी पूर्वक करते हुए एक बेहतर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं।

प्रतिभा रानी
(सहायक जिलाधिकारी ट्रेनिंग, पूर्णिया)

☞ आज के युथ में निश्चित तौर पर बदलाव की जरूरत हैं। हमलोग सौभाग्यशाली हैं कि हमलोग ने उस समय को भी देखा हैं कि समाज मे जब अनुशासन था, युथ बड़े बुजुर्गों, शिक्षक एवं माता-पिता को सम्मान नजरिये से देखते थे,

किसी की हिम्मत नहीं होती थी कि बड़े बुजुर्गों के बीच बैठकर कोई कुछ गलत शब्दो का भी चयन करें लेकिन आज के युथ सड़क पर नशा कर रहे हैं उन्हें समाज की कोई चिंता ही नही होती ,न उनके अंदर कोई डर या सम्मान का भाव,समाज को गर्त की ओर ले जा रहा हैं। सोशल मीडिया, सोशल चेंजेज, जॉइंट फैमिली का बिखराव,आधुनिकता की चकाचौंध ने युवाओं के अनुशासन को खत्म कर दिया हैं। अगर अनुशासन एवं अपनी संस्कारों पर कोई युथ चलता हैं तो निश्चित तौर पर उसका भविष्य उज्ज्वल हैं और अभिभावकों को भी अपने बच्चे का मार्गदर्शन करना होगा,उनपर समय देना होगा,क्रोस चेक करना होगा एवं जिस क्षेत्र में बच्चा आगे जाना चाहे उस क्षेत्र में ही उसे प्रोत्साहित करना होगा न कि उसे कॉमर्स पसन्द हैं और आप मेडिकल करा रहे हैं,उसकी रुचि के हिसाब से उसे आगे बढ़ने का मौका दे।

डॉ० अखिलेश कुमार
(लेक्चरर, सायंस कॉलेज)

अपराधमुक्त पटना बनायेंगे उपेन्द्र शर्मा

● **श्रीधर पाण्डेय**

जिसके इरादे बुलन्द हो,जिसके कार्य मे ईमानदारी एवं कर्मठता झलकता हो,जो 24 घण्टे आवाम की सुरक्षा के लिए जागता हो,जो अपराधियों के लिए काल हो वैसे ही आईएएस समाज मे विशिष्ट स्थान रखते हैं। ऐसे ही एक शख्स आज सुर्खियों में हैं और वह नाम हैं 2008 बैच के बिहार कैडर उपेन्द्र शर्मा का। मूलरूप से बिहार के सिवान जिले के रहने वाले श्री शर्मा ने जहाँ भी रहे हो वह सुर्खियों में रहे ,पटना नगर पश्चिमी एसपी के रूप में हो या जमुई, औरंगाबाद, दरभंगा और मोतिहारी सभी जगह कम्युनिटी पुलिसिंग के बदौलत अपराधियों पर कहर बनकर टूटते हैं। इनके कार्यो को देखते हुए बिहार सरकार ने राजधानी की कमान उपेन्द्र शर्मा के जिम्मे सौपी हैं। अपने सेवा के काल मे हमेशा से चर्चा में रहे उपेन्द्र शर्मा चुनौतियों को स्वीकार

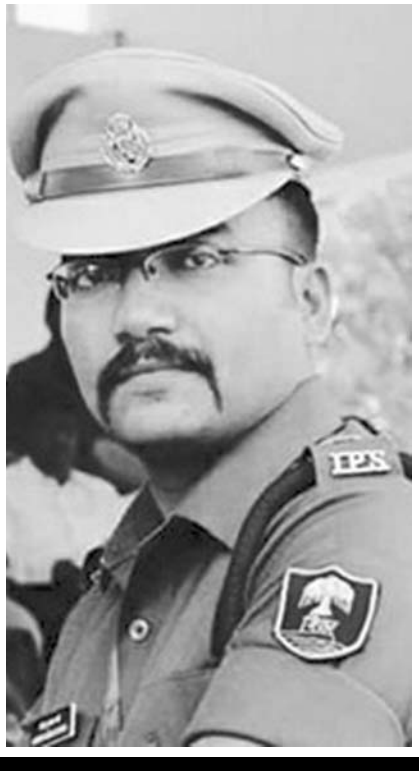

कर उसके प्रति वफादारी से कार्य करने के साथ-साथ विधि-व्यवस्था एवं शांति का माहौल तैयार करना प्राथमिकताओ में हैं एवं मुख्यमंत्री की महत्वपूर्ण महत्वाकांक्षी योजना शराबबंदी को पूर्ण रूपेण नकेल कसने के लिए पूरी तरह चौकस हैं। राजधानी में बढ़ते अपराध पर अंकुश लगाने के लिए मोतिहारी से तबादला करते हुए सिंघम के नाम से फेमस उपेन्द्र शर्मा को बिहार की नाक के लिए चुना गया हैं। श्री शर्मा का मानना हैं कि अपराध चाहे छोटा हो या बड़ा अपराध करने वाला हर शख्स अपराधी हैं उन्हें किसी भी हाल में बख्शा नहीं जाएगा। राजधानी में इनके योगदान से लोगों की काफी उम्मीदें बढ़ गयी हैं क्योंकि कम्युनिटी पुलिसिंग के लिए श्री शर्मा चर्चा में रहे है और पटना में कार्य करने का अनुभव भी रहा हैं। अब यह देखना होगा कि वह जनता के भरोसे पर कितना खरे उतरते हैं यह भविष्य के गर्व में हैं। ●

जमुई होगा पर्यटन क्षेत्र के मानचित्र पर अव्वल

प्रकृति ने जमुई को जंगलो और पहाड़ों से इस प्रकार से आक्षादित किया है कि प्रकृति के इस अनुपम-अप्रतिम स्वरूप को हर कोई निहारना चाहता है। आज जमुई जिले के लिए यह सपना पूरा होने के करीब है जब जमुई और मुंगेर जिले के सीमा रेखा पर बसे भीमबांध को सरकार के आदेश के बाद जनवरी माह में ही पर्यटकों के लिए खोल दिया जाएगा तो वहीं जमुई जिले के भगवान महावीर की जन्मस्थली कुंडघाट जन्मस्थान का भी उद्घाटन नये साल में होने के साथ ही जमुई को पर्यटन क्षेत्र के मानचित्र पर समूचे विश्व में ख्याती मिलनी शुरू हो जाएगी। इन दोनो पर्यटक स्थलों को सरकार के सहयोग से ख्याती मिलनी तय है और इसकी कवायद शुरू हो गई है। जमुई से हमारे जिला ब्यूरो **अजय कुमार** की रिर्पोट :-

जमुई का जन्मस्थान और मुंगेर का भीमबांध जो नववर्ष पर पर्यटकों के लिए सज-धज कर तैयार है। कभी नक्सल घटनाओं के लिए चर्चित था यह पर्यटक स्थल। आज पर्यटकों से गुलजार होने वाला है यह पर्यटक स्थल। 27 दिसम्बर को उप मुख्यमंत्री किये गर्मजल कुंड भीमबांध का उद्घाटन और आठ फरवरी को होगा भगवान महावीर का प्राण प्रतिष्ठा।

भीमबांध और जन्मस्थान आज जिस प्रकार से पर्यटन क्षेत्र के रूप में अपना एक खास स्थान बना चुका है कभी नक्सल क्षेत्र के रूप में भी यह दोनो पर्यटक स्थल खास स्थान रखता था। यहॉ कभी नक्सलियों का बड़ा बसेरा हुआ करता था। इन दोनो स्थानों पर पर्यटक जाने से पहले नक्सलियों को जरूर याद कर लिया करते थे। भीमबांध के नजदीक सोनरवा गांव के समीप 5 जनवरी 2005 में मुगेर के तत्कालिन जिलाधिकारी केसी सुरेन्द्र बाबू समेत 5 पुलिसकर्मियों को नक्सलियों ने लेंडमाइंस बिस्फोट कर हत्या कर दिया था। तब भीमबांध काफी चर्चा में रहा था। दिन गुजरते गया और यहॉ सीआरपीएफ 131 बटालियन को दे दिया गया जिससे भीमबांध सुरक्षित हो गया। वहीं वर्ष 1999 में हुए चुनाव के समय नक्सलियों ने चुनाव अधिकारियों समेत पुलिसकर्मियों को निशाना बनाया था। यह जमुई जिले में नक्सलियों द्वारा किया गया सबसे पहला और बड़ा मामला था। इसके बाद से नक्सलियों के लिए भीमबांध और जन्मस्थान सेफजोन के रूप में जाना जाने लगा। पिछले वर्ष ही नीतिश कुमार के द्वारा जन्मस्थान में परमानेन्ट जवानों को सुरक्षा के दृष्टीकोण से तैनात कर दिया गया। आज पर्यटन क्षेत्र के रूप में विकास होने के बाद यह क्षेत्र पूरी तरह से सुरक्षित हो गया है।

भीमबांध वैसे तो मुंगेर जिले में पड़ता है पर जमुई मुख्यालय से मात्र 32 किलोमीटर पर स्थित है भीमबांध और जमुई के नजदीक होने के कारण भीमबांध के खुल जाने के बाद जमुई जिले को एक सौगात जरूर मिलेगी। जबकि जमुई से 20 से 25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है लछुआड़ और जन्मस्थान। इसी स्थान पर सत्य अहिंसा और करूणा का संदेश देने वाले जैन धर्म के 24वें तीर्थकर भगवान महावीर का जन्मस्थली के साथ-साथ च्यवण कल्याणक और दीक्षा कल्याणक जैसे पवित्र स्थल होने का प्रमाण मिलता है। जैन धर्मावलम्बियों के लिए यह स्थान अति महत्वपूर्ण और पवित्र भूमि है। जैन तीर्थयात्री यहॉ के पवित्र भूमि के मिट्टी का तिलक लगाने यहॉ आते हैं। विगत कुछ वर्ष पूर्वे जमुई के इस स्थल को पर्यटक क्षेत्र के रूप में विकसित करने की कवायद शुरू

हुई थी। लछुआड़ से जन्मस्थान की दूरी सात पहाड़ियों को पार कर पर्यटक पहुँचते हैं। इसी मार्ग में च्यवण और दीक्षा कल्याणक का नवनिर्मित मंदीर भी है। यह मार्ग कभी अति दुर्गम हुआ करता था। 28 नबंवर 2015 की रात को जन्मस्थान से भगवान महावीर की कसौटी पत्थर की बनी 2600 वर्ष पुरानी मूर्ति की चोरों द्वारा चोरी कर ली गई थी। यह मूर्ति भगवान महावीर के जिवित रहते उनके भाई राजा नन्दीवर्धन द्वारा स्थापित किया गया था। देश प्रदेश में तब काफी बवाल मचा था और फिर भगवान महावीर की मूर्ति का चोरों ने 5 दिसंबर को सिकन्दरा थाना क्षेत्र के ही बिछबे पंचायत के हुसैनीगंज गांव के समीप लाकर रख दिया था। तब से जैन धर्मावलंबियों द्वारा भगवान महावीर की इस प्रतिमा को जन्मस्थान में पुनः स्थापित करने के लिए प्रत्येक वर्ष कार्यक्रम करते रहे हैं। अप्रतिम खूबसूरती की सतरंगी चादर ओढ़े यह क्षेत्र इतना खुबसूरत है कि पर्यटक न चाहते हुए भी इन क्षेत्र में एक बार जरूर आना चाहता है। और तब जब इस क्षेत्र को स्वर्ग से भी पवित्र होने की बात जैन तीर्थयात्रियों द्वारा किया जाता हो तो आप समझ सकते हैं कि इस पवित्र भूमि की महत्ता कितना बढ़ जाता है। वर्तमान में करोड़ों रूपये खर्च कर राजस्थान के दिलबाड़ा के तर्ज पर जैन मंदीर का निर्माण किया जा रहा है साथ ही कुंडघाट जलाशय के नजदीक में ही दीक्षा कल्याणक और च्यवण कल्याणक मंदीर का भी निर्वाण किया गया है। पूर्व में दीक्षा और च्यवण कल्याणक का छोटा सा मंदीर हुआ करता था जो कुंडघाट जलाशय के गर्व में समा गया है। दिलबाड़ा जैन मंदीर को भारत का दूसरा ताजमहल माना जाता है। बताया जाता है कि वर्ष 2021 में यह मंदीर पूरी तरह से बन कर तैयार हो जाएगा। कार्य प्रगति पर है। बिहार सरकार के मुखिया नीतिश कुमार विगत पाँच वर्षों से लगातार नव वर्ष के मौके पर लछुआड़ आ ही जाते हैं। वर्ष 2016 में लछुआड़ को जैन सकिट से जोड़ा गया था। विगत वर्ष ही भगवान महावीर की प्रतिमा को लछुआड़ से जन्मस्थान पूरे धुमधाम से ले जाया गया था और उनको जन्मस्थान में सिर्फ स्थापित किया गया था इस कार्यक्रम में भी बिहार के मुखिया यहाँ आए थे। इस बार भी 8 फरवरी को भगवान महावीर का प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम है जिसमें देश प्रदेश के लाखों श्रद्धालुओं के अलावे बड़े नेताओं को पहुँचने का कार्यक्रम है। 13 दिनों तक चलने वाले इस कार्यक्रम में बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार का आने का कार्यक्रम लगभग तय है। गृहमंत्री अमित शाह भी इस पवित्र स्थान पर पहुँच सकते हैं। इसके साथ ही

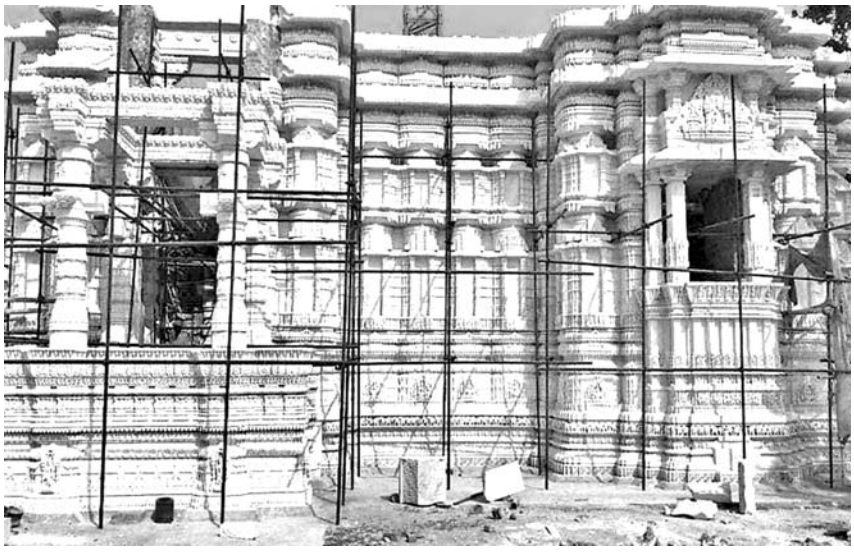

भगवान महावीर की जन्मस्थली की महिमा और सौन्दर्य में चार चांद लग जाएगा। जैन मुनी आचार्य सुरेश्वर जी महाराज लगातार कार्यक्रम की सफलता के लिए लगे हुए हैं। हर कार्यक्रम में इस पवित्र स्थल को देखने लाखों की संख्यां में जैन श्रद्धालु पहुंचते हैं।

वहीं भीमबांध की महिमा भी कॉफी रोचक है। गर्म जलश्रोत का यह स्थल भी कॉफी मनोरम है। चारो ओर से उहापोह जंगल में बसे भीमबांध की पौराणिक महिमा महाभारत काल से जुड़ती है। बताया जाता है कि महाबली भीम अपने भाईयों के साथ इस जंगल में रहे थे। द्वापरयुग में पांडव अज्ञातवास इसी स्थान पर किया था। नव वर्ष हो और लोगों को भीमबांध की प्राकृतिक वादियां याद न आये ऐसा कैसे हो सकता है। आज भीमबांध सज-धज कर तैयार है। भीमबांध को इको टूरिज्म के रूप में बिस्तार किया गया है। पिछले वर्ष ही बिहार सरकार भीमबांध के सौदर्यीकरण के लिए 392 लाख़ रूपये दिये थे आज इन पैसे से सौंदर्यीकरण का कार्य पूरा कर लिया गया है। सावा लाख बाबा से भीमबाध का रास्ता बनकर तैयार है। गर्म कूंडों का विस्तार में महिलाओं और पुरूषों के लिए अलग कुंड है जहाँ फब्बारे लगाया गया है जिससे कि यह कुंड स्वीमिंग पुल का आकर्षक रूप लगता है। बच्चों के लिए अलग से व्यवस्था है। साथ ही महिलाओं के लिए चेंजिग रूम सौदर्य ऐसा कि हर लोगों का घ्यान खिंचने में भीमबांध तैयार लग रहा है। आसाम के बांस से कई प्रकार से पार्क को सजाया गया है। इस स्थान को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए प्लास्टिक और थर्मोकोल के उपयोग पर पूरी तरह से प्रतिबंधित किया गया है। बांस से ही जगह-जगह कूड़ेदान तैयार किये गये हैं। बच्चों के लिए झूला तथा मनोरंजन के अन्य साधन भी मौजुद है भीमबांध में। 17 फरवरी 2017 को जब नीतिश कुमार का आगमन भीमबांध में हुआ था तभी भीमबांध को पर्यटन क्षेत्र के रूप में खाका तैयार कर लिया गया था। उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी 28 सितम्बर 2018 को भीमबांध पहुंचे थे और 392 लाख़ रूपये से भीमबांध को सजाने का कार्य शुरू हो गया था। वर्ष 2019 में नये लुक में तैयार कुंड का मजा तो सैलानी नहीं ले सके हैं पर नये वर्ष में सैलानियों को गर्म कुंड का मजा जरूर मिलने वाला है।

27 दिसम्बर को उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी द्वारा ही इस स्थल का उद्घाटन होना तय है। भीमबांध सजधज कर तैयार है और उद्घाटन के बाद इसे आमलोगों के लिए खोल दिया जाएगा। इसके साथ ही जमुई जिले से सटे इस स्थल को भारत के मानचित्र पर छा जाने को बेकरार हो जाएगा। जमुई के कुंडघाट लछुआड़-जन्मस्थान भी आमलोगों के लिए खोलने को बेकरार है। कभी इन दोनों जगहों पर अत्यंत दुर्गम रास्ते से पर्यटक जाते थे। आज दोनो स्थानों पर पक्की सड़क बन कर तैयार होने को हैं। केवल सच प्रतिनिधि कभी इन रास्तों से इन दोनो स्थानों पर चले थे और बाद में यह तय किये थे कि इन रास्तों में दुबारा कभी अकेले तो नहीं जाया जा सकता था। आज इन रास्तों पर करीब-करीब सभी प्रकार के लग्जरी गाड़ियां बड़े आराम से बिना हिचकोले खाए पहुँच सकते हैं। पर्यटन की असीम सम्भाबनाएं आज पूर्ण होने को बेकरार है। आप कभी जमुई आते हैं तो प्रकृति के इस अनुपम उपहार को जो सरकार के देखरेख में आम पर्यटकों के लिए खोल दिया जाएगा का आनंद उठाने जरूर आईए। ●

नरेन्द्र मोदी आज के नल-नील : अजय प्रताप

स्व० श्रीकृष्ण सिंह

जमुई एक प्राचीन स्थल है। रामायण, महाभारत, आगम आदि धार्मिक ग्रंथों में इसका प्रमाण मिलता है। आध्यात्मिक पृष्ठभूमि के साथ–साथ जमुई का राजनैतिक पृष्ठभूमि भी अति समृद्धशाली रहा है। इसका एक नमूना सादर समर्पित है। अजय प्रताप सिंह जमुई विधानसभा का 2010 में सदस्य बने थे। ये बड़े ही समृद्ध राजनीतिक परिवार से आते हैं। इनकी तीन पीढियाँ राजनीति में पूर्णतः सक्रिय रहीं। स्मृतिशेष श्रीकृष्ण सिंह इनके दादाजी हुए और श्री नरेंद्र सिंह इनके पिताजी हुए श्रीकृष्ण सिंह का जन्म 21 फरवरी 1919 में खैरा प्रखंड के भौंड़ गांव में हुआ था। ये मात्र 14 वर्ष की उम्र में यानि 1933 में स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। उस समय के हर नवयुवकों के धमनियों में यही भाव संचालित हो रहा था कि भारत माता को अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त

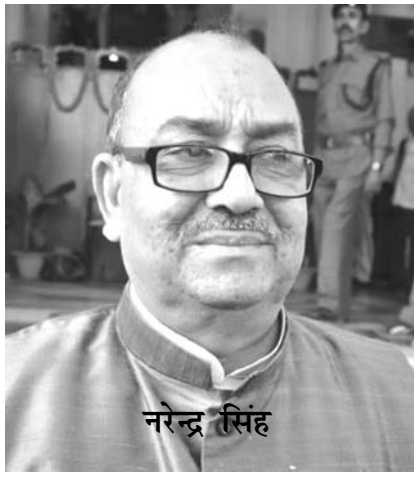
नरेन्द्र सिंह

कराना है। लाखों लोगों की इस ध्येय व निष्ठा के फलस्वरूप 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हो गया। यह भी एक संयोग है कि आजादी के 14 वर्षों के बाद ही यानि 1962 में श्रीकृष्ण सिंह झाझा विधानसभा के सदस्य बने। 1967 में चकाई विधानसभा के सदस्य बने। बिहार सरकार के एक कैबिनेट मंत्री भी रहे। 1967 में मुंगेर लोकसभा क्षेत्र के सांसद भी बने। यानि ये जहां से चुनाव लड़ते वहीं से विजयी हो जाते थे। 10 फरवरी 1986 में इनका देहांत हो गया। बिहार सरकार ने उनके सम्मान में जमुई स्टेडियम का नामकरण श्रीकृष्ण सिंह मेमोरियल स्टेडियम किया; साथ ही उनकी एक प्रतिमा भी वहाँ लगाई गई। इतना ही नहीं 21 फरवरी को राजकीय स्तर से उनकी जयंती मनाने का निर्णय भी लिया गया। श्री नरेंद्र सिंह का जन्म 13 नवंबर 1947 को खैरा प्रखंड के पकरी गांव में हुआ। 1985 में ये चकाई विधानसभा के सदस्य बने। 1990 से 1992 और 2006 से 2015 तक बिहार सरकार के कैबिनेट मंत्री भी रहे। इनके बड़े पुत्र अभय कुमार भी जमुई विधानसभा के सदस्य रहे जो कि अब इस धरती पर नहीं रहे। इनका छोटा पुत्र सुमित कुमार भी चकाई विधानसभा के विधायक रहे। अजय प्रताप का जन्म 9 अप्रैल 1976 में हुआ। 1990 में मैट्रिक की परीक्षा पास की। 1997 में इन्होंने एल०एस०डब्ल्यू० से एम०ए० की परीक्षा पास की। प्रस्तुत है पूर्व विधायक **अजय प्रताप** से केवल सच के विशेष प्रतिनिधि प्रोफेसर **रामजीवन साहू** द्वारा किये गये साक्षात्कार के प्रमुख अंश :–

★ आप बिहार विधानसभा का सदस्य कब और किस दल से बने?

सर्वप्रथम 2010 में जमुई विधानसभा का सदस्य जदयू पार्टी से बना हूँ। उस समय एक विधायक को क्षेत्र के विकास के लिए प्रतिवर्ष 2 करोड़ रुपया मिलता था। 5 वर्ष में 10 करोड़ मिला, जो ईमानदारी के साथ इस विधानसभा के विकास में लगा दिया।

अजय प्रताप

★ दूसरी बार आप विधायक नहीं बन पाए, उसके पांच कारण बताइए?

प्रथम मुझ में कुछ कमी होगी। द्वितीय भाजपा के कुछ कार्यकर्ता मुझे सहयोग नहीं किया। तृतीय राजपूत खेमे से दो प्रत्याशी खड़े हो गए। चतुर्थ मैं जदयू छोड़कर भाजपा में आया और पांचवा कुछ लोग जाति विशेष को लेकर मतदान किए। इस बार मुझे पहले से भी अधिक मत मिला फिर भी विजयी नहीं हो सका।

★ 2020 को चुनाव जीतने का दावा आप किन–किन आधार पर करते हैं ?

भारतीय जनता पार्टी भारत की सबसे बड़ी पार्टी है। अभी केंद्र में भाजपा के प्रधानमंत्री हैं कांग्रेस पार्टी लगभग इस देश पर 70 वर्षों तक राज की है। जिस काम को पहले करने को था उसे कांग्रेस ने छोड़ दिया। मोदी सरकार ने उस गलती को सुधार रही है। यह सरकार वही काम कर रही है जिससे जनता खुश हो देश मजबूत हो और समृद्ध बने। मैं उसी दल का कार्यकर्ता हूँ। इसलिए जनता मुझे नोट भी देगी और वोट भी देगी यह मेरा जीतने का दावा है।

★ जमुई के वर्तमान सांसद आपको कितनी हानि पहुँचा सकते हैं, क्योंकि आप लोगों ने 2019 के लोकसभा चुनाव में उनके विरुद्ध प्रचार किए थे?

वर्तमान सांसद मुझे कुछ हानि नहीं पहुँचा सकते हैं। इस दल में अधिकांश प्रत्याशी वीर पुरुष नरेंद्र मोदी के नाम पर जीतते हैं। वर्तमान विधायक को यहाँ अधिकांश जनता नहीं जानती है। आज भी मुझे ही थाना और अन्य अधिकारियों के पास जनता के कार्य हेतु जाना पड़ता है। जनता का समर्थन आज भी मेरे साथ है। मेरे पिताजी, भाई सुमित कुमार और मैं इस क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के यहां शादी विवाह, श्राद्ध कार्यक्रम या अन्य कोई मांगलिक कार्य होते हैं, वहाँ हम लोग जाते हैं तथा उनके द्वारा जैसा भी खाने–पीने की व्यवस्था रहती है, उसे सहर्ष हम लोग स्वीकार करते हैं। अभी हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और माननीय गृहमंत्री अमित शाह तो रामायण युग के नल–नील जैसा हैं। नल–नील पत्थर को पानी में फेंक देते थे तो पत्थर भी तैरने लगता था। उसी प्रकार नरेंद्र मोदी जिनको टिकट देंगे वे अवश्य जीतेंगे। वैसे तो मोदी और सिंह दोनों को हटा दिया जाए तो वह मेरे पितातुल्य हो जाते हैं।

बिहार का बदहाल है शिक्षा व्यवस्था

जिलाधिकारी नवादा का नाम कौशल यादव बताते हैं छात

● **अरविन्द मिश्र**

''पंक्षी कहता है चमन बदला है, धरा कहती है गगन बदला है, मगर श्मशान की खामोशियां कहती है, न धरा बदला है,न चमन बदला है और न गगन बदला है। मुर्दा वही है, सिर्फ कफन बदला है''।

नारदीगंज प्रखंड के इंटर विद्यालय ओड़ो साधन संसाधन से जूझ रहा है,इस विद्यालय में कई सुविधाओ का घोर अभाव है। जिस कारण विद्यालय में पढ़ने बाले छात्र व छात्राओ को इसका समुचित लाभ नहीं मिल पाता है। यह विद्यालय नारदीगंज प्रखंड मुख्यालय से छह किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह विद्यालय सात दशक पूराना है। जमाने में यह विद्यालय में जहां शौक्षाणिक व्यवस्था सुदृढ थी, वही छात्रों में अनुशासन का महौल बना रहता था। तभी तो गांव के अलावा आसपास इलाके के बच्चे पढ़ने के लिए काफी संख्या में आते थे। विद्यालय परिसर में हरियाली थी। आम, अमरूद, शिशम, सागवान समेत अन्य प्रकार के बेशकीमती वृक्ष लगे हुए थे, लेकिन आज देखने के लिए लोग तरस रहे है, असमाजिक तत्वों ने इस विद्यालय में लगे वृक्ष को काट कर अपने घोंसले को बना लिया। इतना ही नही चाहरदिवारी को भी पूरी तरह से क्षतिग्रस्त कर दिया। चाहरदिवारी का नामनिशान मिट गये। ग्रामीणों ने बताया पूर्वजो ने यह विद्यालय को काफी लग्न,मेहनत के साथ आपसी सहभागिता व श्रमदान से विद्यालय का निर्माण किया था, ताकि गांव के साथ आसपास के बच्चे शिक्षित होकर परिवार,समाज,देश को गौरवान्वित करें, और राष्ट्र के नवनिर्माण में अपनी भूमिका को निर्वाहण में भागीदारी को निभायें, लेकिन स्थिति यह है कि शिक्षा व्यवस्था एकदम चरमरा गयी है, भ्रष्टाचार के आकंठा में डूब गया है,इसके लिए जनप्रतिनिधियों के साथ विभागीय अधिकारी भी ग्रामीण जिम्मेवार ठहरा रहे है। कभी विद्यालय की कोई भी सुध लेने के लिए सासंद, विद्यायक, विधान पार्षद भी नहीं आये आलम यह है कि विद्यालय में फार्म भरने के समय व नामांकन के समय विद्यालय गुलजार रहता है। उच्च माध्यमिक विद्यालय में पढाई होती नहीं है। वही अंग्रेजी, भौतिकी, रसायन के अलावा जीवविज्ञान के शिक्षक की पदस्थापना नहीं रहने से बच्चों को इसका लाभ नहीं मिल पा रहा है। इस विद्यालय में नवम कक्षा में 313 व दशम् कक्षा में 337 छात्र व छात्राएं है, वही इंटर कला में 115 व इंटर विज्ञान में 115 नामांकित छात्र है। माध्यमिक शिक्षक में 10 है, जिसमें प्रभारी प्राचार्य लक्ष्मीकांत लांगुडी, सहायक शिक्षक नीतीश कुमार, अमित कुमार, राजीव कुमार, निर्मला कुमारी, रीना कुमारी, सुरूचि कुमारी, पूजा, कामना कुमारी के अलावा पंकज कुमार है। वही उच्च माध्यमिक में 3 शिक्षक है,जिसमें सुधांशु गौतम, संजय कुमार, अशोक कुमार पदस्थापित है, इसके अलावा तीन अतिथि शिक्षक भी है सुजीत कुमार कौशिक, आलोक कुमार, स्मिता कुमारी है। विद्यालय की स्थिति जानने के लिए 28 नवम्बर 2019 को तकरीबन 1 बजकर 15 मिनट में केवल सच पत्रिका के उपसम्पादक अरविन्द मिश्र समेत अन्य मीडियाकर्मी उस विद्यालय की स्थिति का जायजा लिया। तो वहां की स्थिति को देखकर हतप्रभ रह गये। विद्यालय में मध्यानंतर हो चुका था,सभी बच्चे अपने अपने घर की ओर रवाना हो चुके थे,वहां पहुंचने पर 21 छात्र व छात्राएं स्मार्ट कक्षा में पढ़ने के लिए आये। जिसमे 18 छात्रा व 3 छात्र को स्मार्ट कक्षा की शिक्षा दिया जा रहा था। स्मार्ट कक्षा उपरी मंजिल स्थित भवन में संचालित हो रहा था। सभी नवम कक्षा के छात्र व छात्राएं थे। पहली मुलाकात प्रधान शिक्षक से हुआ। इसके अलावा अन्य शिक्षक विद्यालय के अन्य कार्यो में संलिप्त दिखें। उसके बाद प्रभारी प्राचार्य लक्ष्मीकांत लांगुडी

सरकार द्वारा प्रदत कल्याणकारी योजनाओं का लाभ बच्चों को मिल रहा है, साइकिल, पोशाक, छात्रवृति की राशि उपलब्ध कराया जा रहा है। चाहरदिवारी नही होने से पढाई पर भी प्रतिकूल असर पड रहा है, इसके अलावा अन्य साधन–संसाधन से विद्यालय जूझ रहा है,विभागीय अधिकारी को स्थिति से अवगत कराया गया है, ताकि बच्चों को शैक्षाणिक मौहाल मिल सकें।

लक्ष्मीकांत लांगुडी, प्रधान शिक्षक

विद्यालय का चाहरदिवारी नहीं है,जिसकारण पठन पाठन में काफी प्रभावित होता हैं, आये दिन मवेशियो के साथ राहगीर भी इसी विद्यालय के परिसर से होकर गुजरते है।

नीतीश कुमार, सहायक शिक्षक

एक नजर में :– स्मार्ट कक्षा–01, समरसेबल–01, चापाकल 01, खेल मैदान–01, उच्च माध्यमिक शिक्षक–03, माध्यमिक शिक्षक–10, अतिथि शिक्षक–03, कार्यालय कक्ष–02, पेयजल शौचालय पुराना–02, नया शौचालय–01, प्रयोगशाला–01, पुस्तकालय–01, जिमेनेजियम–02, नया व पुराना पुस्तकालायध्यक्ष–01, आदेश पाल–01

ओड़ों गांव पौराणिक व ऐतिहासिक है, जहां प्रतिवर्ष सांसद, विद्यायक, विधान पार्षद समेत अन्य जनप्रतिनिधियों व आलाधिकारी भी पहुंचते हैं और आयोजित कार्यक्रम में शिरक्त भी करते है, तब ग्रामीण अपने गाव में स्थित विद्यालय की बदहाली के बिषय में उन्हें अवगत भी कराते है, लेकिन हाल जस की तस बनी हुई है। किसी भी ने विधालय के बदहाली के लिए तारणोद्धार नहीं बन पाये है। स्थिति यह है कि सुशासन की सरकार में युवा कर्मठ सासंद चंदन सिंह, बिहार सरकार के कैबिनेट मंत्री (सूचना व जन सम्पर्क) सह विधान पार्षद नीरज कुमार, विधायक कौशल यादव से लोग उम्मीद रखें हैं, क्या इस विद्यालय की दुर्दशा में बदलाव ला पायेंगे,? यह बात भविष्य के गर्भ में छिपा हुआ है, वह वक्त ही बतलायेगा।

के अलावा विज्ञान शिक्षिका सुरूचि कुमारी ने स्मार्ट कक्षा का संचालन करना शुरू कर दिये। कक्ष में पढ़ने बाले छात्र व छात्राओं से विज्ञान व गणित से संबंधित सवाल भी किये गये, इसके अलावा समान्य ज्ञान से भी प्रश्न पूछे गये। छात्रा प्रतिभा से कोशिका से सबंधित सवाल किया, उन्होंने सही जवाब दिया। लेकिन द्रव्य की परिभाशा नहीं दे पायी। छात्रा सोनाली से सोडियम के बारें में पूछा गया, वही सुमित कुमार ने कहा अंग्रेजी विषय की पढ़ाई कभी कभी होती है, क्योंकि इस विद्यालय में अंग्रेजी विषय के शिक्षक नहीं है। सुहानी, प्रतिमा, आरती शुभम समेत अन्य छात्र व छात्राएं से गणित से संबंधित प्रश्न को पूछा गया, हद तो तब हो गयी जब नवादा के डीएम का नाम पूछा गया,तो उपस्थित एक भी छात्र व छात्राएं ने डीएम का नाम सही नहीं बताया। इसी बीच एक छात्रा ने हिचकते हुए डीएम का नाम कौशल यादव बताया, जो बिल्कूल गलत था, वही नारदीगंज प्रखंड के बीडीओ का नाम पूछने पर उपस्थित छात्रों ने बीडीओं का नाम नहीं बता पाया। सबसे दिलचस्प बात यह रही कि तीन छात्रा व एक छात्र ने ही अपने विद्यालय के प्रभारी प्राचार्य का नाम बता पाया। यही है स्मार्ट कक्षा की शिक्षा। छात्रों ने बताया हमलोग प्रतिदिन स्मार्ट कक्षा में शिक्षा लेने के लिए पहुंचते हैं, इसके अलावा विद्यालय भी आते है। विद्यालय में लैब की सुविधा है, लेकिन उसका लाभ नहीं मिल पाता है, इस विद्यालय में कम्प्यूटर की पढ़ाई नहीं होती है, जबकि बच्चों मे कम्प्युटर पढ़ने की ललक है, पांच वर्ष पूर्व विद्यालय से लाखों रूपये मूल्य का कम्प्यूटर की चोरी हो गयी थी,फिलहाल बदहाल स्थिति में है,कम्प्यूटर शिक्षक की भी व्यवस्था नहीं है,वही छात्रा सोनाली कुमारी,रागनी कुमारी,उंशा कुमारी,रानी कुमारी ने कम्प्यूटर शिक्षक की व्यवस्था करने की मांग किया। छात्राओं ने कहा पुस्तकालय भवन है,पुस्तकालय में किताब रहने के बाद भी इसका लाभ नहीं मिलता है, आये दिन जिमेनेजिएम का भी लाभ नहीं मिल पाता है, जबकि विद्यालय में जिमेनेजिएम की व्यवस्था है। विद्यालय के पास काफी क्षेत्रफल में फैला हुआ है खेल मैदान, लेकिन मैदान का सुन्दरीकरण भी नहीं हो पाया। वही छात्रों ने स्पष्ट शब्दों में कहा खेल मैदान रहने के बाद भी खेल की कोई भी सामाग्री उपलब्ध नहीं कराया जाने की बात कही, हमलोगों को प्रतिभा का निखर नहीं हो पाता है। ●

शिक्षा विभाग के आदेश को ठेंगा दिखा रहे विभागीय अधिकारी

● **अरविन्द मिश्र**

सरकार के लाख प्रयास के बाद विभागीय अधिकारियों के अनदेखी के कारण उच्च शिक्षा के लिए छात्र व छात्राएं ललायित है। जबकि शिक्षा विभाग ने उच्च माध्यमिक विद्यालय करने का आदेश भी दिया है, लेकिन चार वर्ष बीत जाने के बाद भी उत्क्रमित मध्य विद्यालय को उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय नहीं किया गया है। यह हाल नारदीगंज प्रखंडान्तगर्त बरियो गांव स्थित उत्क्रमित मध्य विद्यालय का है।,इस विद्यालय को उच्च माध्यमिक विद्यालय करने के लिए विभागीय आदेश दिया गया था, वावजूद चार वर्ष बीत जाने के बाद भी इस विद्यालय को आजतक उच्च माध्यमिक विद्यालय नहीं किया गया है, जिससे गांव के बच्चों को उच्च शिक्षा पाने में काफी फजिहत हो रही है। यह गांव ननौरा पंचायत के अंतगर्त है। जबकि इस पंचायत में एक भी उच्च माध्यमिक विद्यालय नहीं है। जबकि बिहार सरकार के विभागीय संकल्प संख्या 1021 दिनांक 5 जुलाई 2013 के आलोक में उच्च विद्यालय विहीन पंचायतों में एक उच्च माध्यमिक विद्यालय आच्छादित करने का निर्णय लिया गया था। तब उच्च माध्यमिक विद्यालय की स्थापना हेतु जिला पदाधिकारी नवादा की

अध्यक्षता में गठित निर्दिष्ट समिति से प्राप्त प्रस्ताव के आलोक में संलग्न सूची जिलावार/ पंचायतवार चिन्हित मध्य विद्यालयों को उच्च माध्यमिक विद्यालय में उत्क्रमित करने के लिए अनुशंसा बिहार सरकार शिक्षा विभाग से किया गया था।

> विद्यालय का भौतिक सत्यापन के उपरांत पठन–पाठन का शैक्षिक गतिविधि प्रारंभ किया जायेगा, ताकि बच्चों का भविष्य निर्धारण में सहुलियत मिल सकें।
>
> **मो. जमाल मुख्तार, डीपीओ, समग्र शिक्षा विभाग**

फलस्वरूप जिला पदाधिकारी के अनुशंसा के उपरांत बिहार सरकार शिक्षा विभाग कार्यालय आदेश संचिका संख्या 11/मो 02–03/2012 (अंश–ख) 1648 दिनांक 27 अगस्त 2015 के आलोक में उत्क्रमित मध्य विद्यालय बरियों को उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय में उत्क्रमित किया गया था। इतना ही नहीं इसके अलावा बिहार सरकार शिक्षा विभाग के कार्यालय आदेश मे उच्च माध्यमिक विद्यालयों में शैक्षिक सत्र.2016–17 से शैक्षिक गतिविधि प्रारंभ करने का निर्देश भी दिया गया था,लेकिन स्थिति यह है कि विभागीय शिथिलता के कारण इस विद्यालय में आजतक पठन पाठन का शैक्षिक गतिविधि प्रारंभ नहीं किया गया है। जबकि इस विद्यालय में 1 एकड़ 45 डिसमिल भूमि के

–: क्या कहते है विद्यालय के शिक्षक एवं बच्चे :–

☞ इस गांव में उच्च विद्यालय नहीं होने से हमलोगों को उच्च शिक्षा पाने में काफी कठिनाई होती हे। अतएव इस विद्यालय को उत्कमित माध्यमिक विद्यालय होना जरूरी है।

सुप्रिया कुमारी, बरियो

☞ इस पंचायत में उच्च विद्यालय नहीं है,जिससे काफी दूरी तय कर पठन पाठन करते है, काफी फजिहत होती है।

पूनम कुमारी, छात्रा

☞ इस गांव में स्थित विद्यालय को अगर उच्च विद्यालय कर दिया जाय,तो हमलोगों को पढ़ने में सहुलियत मिलेगी।

काजल कुमारी, छात्रा

☞ गांव के बच्चों में पढ़ने की ललक है,यहां से आठवीं कक्षा पास करके नारदीगंज जाते है पढ़ने के लिए हाई स्कूल । जहां गांव से जाने में काफी दूरी पड़ती है, इस गांव में हाई स्कूल हो जायेगा,तब ठीक रहेगा।

आनंद कुमार, छात्र

साथ पठन पाठन के लिए पर्याप्त कमरा भी मौजूद है। इस विद्यालय को उत्कमित माध्यमिक विद्यालय नहीं किये जाने के कारण बच्चे विवश होकर पांच किलोमीटर की दूरी तय कर अपना भविष्य को गढ़ रहे है। ग्रामीणों ने इस विद्यालय को उत्कमित माध्यमिक स्तर के विद्यालय में पठन पाठन को प्रारंभ करने के मांग ग्रामीण विकास मंत्री को आवेदन देकर किया है। तब ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार ने मामले को गंभीरता से लेते हुए अपने पत्रांक–2283/14 नवम्बर 2019 को शिक्षा मंत्री कृष्णनन्दन प्रसाद वर्मा को पत्र भेज कर जनहित में इस मामले में यथोचित कार्रवाई करने का अनुरोध किया है। ताकि इस पंचायत के बच्चों का भविष्य का निर्माण इसी विद्यालय में किया जा सके। ●

☞ इस संबंध मे विभाग को अवगत भी कराया गया है, लेकिन चार वर्ष बीत जाने के बाद भी हाल जस की तस बनी हुई है। जबकि इस विद्यालय के पास पर्याप्त मात्रा भूमि भी है।

राजेन्द्र, प्रभारी प्राचार्य
उ.म.वि. बरियो

☞ बच्चों मे उच्च शिक्षा पाने की ललक है, शिक्षा विभाग के आदेश के बाद विभागीय शैक्षाणिक गतिविधि शुरू नहीं हो पाया है।

मो0 मेराजुद्दीन, सहायक शिक्षक
उ.म.वि. बरियो

युवक की हत्या कर शव को दिया गाड़

● **अरविन्द मिश्र**

नारदीगंज थाना क्षेत्र के कहुआरा गांव स्थित सिरोडाबर खंदा में युवक की हत्या कर शव को जमीन में गाड़ दिया। उस शव को पुलिस ने रविवार की सुबह में गेहूं खेत से बरामद किया। युवक पिछले चार दिनों से लापता था,उसके परिजनों ने पुलिस मे मामला दर्ज कराया था,उस युवक की हत्या के पीछे आपसी रंजिश या फिर महिला के साथ प्रेम प्रसंग बताया जा रहा है। मृतक की पहचान कहुआरा सराय निवासी गिरजा प्रसाद के 24 वर्षीय पुत्र अवधेश कुमार के रूप में किया गया। युवक का शव नग्न अवस्था में था,जो तकरीबन चार फीट भूमि के अंदर में गाड़ा हुआ। जो मिटटी से ढका हुआ था। जमीन के अंदर से शव निकालने के बाद काफी संडाध उत्पन्न हो गया। और उसका कपड़ा उसके शव से कुछ दूरी खेत के मेढ़ के समीप गढ़हे से बरामद हुआ। उस स्थल पर आसपास में काफी मात्रा में कुश के पौधे लगे हुए थे। घटना स्थल पर से उसका जंधिया, हाफ पैंट, टीशर्ट मिले। लेकिन कहीं भी खून के निशान नहीं थे। उसके बदन पर माथे के बायां ओर कुचला हुआ था, और वायें पैंजरा भी हल्की रूप से फटा हुआ था। शव मिलने की सूचना मिलते ही आसपास के इलाके में सनसनी फैल गयी। शव को देखने के लिए आसपास के काफी संख्या में लोग जूट गये। इधर शव की सूचना मिलते ही हिसुआ पुलिस इंस्पेक्टर सूर्यमणि राम आये,उसके बाद थानाध्यक्ष दीपक कुमार राव,एसआई रामकृपाल यादव समेत अन्य पुलिस पदाधिकारी पुलिस बल के साथ घटना स्थल पर पहुंचे,उसके बाद बीडीओ राजीव रंजन भी पहुंचकर मामले की तहकीकात करना शुरू कर दिया। सदर एसडीपीओ विजय कुमार झा ने भी मामले की छानबीन किया। इस मामले में पुलिस ने गांव की एक महिला को हिरासत में लेकर पूछताछ भी कर रही है। थानाध्यक्ष दीपक कुमार राव ने बताया अवैध संबध में हत्या की बात सामने आ रही है,वैसे हर बिन्दुओं पर जांच किया जा रहा है। ग्रामीणों व हिरासत में ली गयी महिला के निशानदेही पर शव को बरामद किया गया। जल्द ही मामले का पर्दाफाश किया जायेगा। सदर अस्पताल में पोस्टमार्टम के लिए मेडिकल टीम गठित किया है, लेकिन शव अधिक सड़ा व गला रहने के लिए पोस्टमार्टम के लिए पटना भेजा जा रहा है।

इस मामले में कहुआरा सराय निवासी गिरिजा प्रसाद ने बताया मेरा पुत्र अवधेश कुमार 27 नवम्बर 2019 को संध्या 6 बजे अपने घर से निकला था, उस समय किसी ने उसे टेलीफोन कर बुलाया था। देर शाम तक घर वापस नहीं लौटा,तो मेरे अन्य परिवार उसे सगी सबंधी

समेत अन्य रिश्तेदारों के यहां काफी खोजबीन किया। लेकिन कही भी जानकारी नहीं मिली। तब हमलोग परिजनो को लगा की मेरा पुत्र का किसी ने अपहरण कर लिया,तभी वह लापता है । तब घटना की जानकारी 28 नवम्बर को नारदीगंज थानाध्यक्ष को आवेदन देकर किया, लेकिन पुलिस ने किसी प्रकार का मामले का संज्ञान नंहीं लिया, जिसके फलस्वरूप हत्यारे ने मेरे पुत्र की हत्या कर दिया। हमलोग सभी परिवार पटना में रहते है। मेरा पुत्र पटना में ही टेम्पो चलाता था,वह 25 नवम्बर को पटना से कहुआरा लौटा था। हम भी पटना में रहकर प्राइवेट काम करते है। घटना की जानकारी मिलने पर 28 नवम्बर को गांव आया था। हमलोगों को वर्ष 2018 में गांव के मुकेश कुमार के साथ विवाद हुआ था। मेरे पुत्र के अपहरण व लापता होने के बाद मुकेश समेत अन्य परिजनों के खिलाफ मामला दर्ज किया था,30 नवम्बर की रात में थानाध्यक्ष दीपक कुमार राव पुलिस बल के साथ गांव पहुंचे,और मेरे पड़ोसी मुकेश की पत्नी प्रतिमा देवी को हिरासत में लेकर पूछताछ किया। उनका कहना था कि ग्रामीणों का कहना है कि अवधेश का अनैतिक सबंध मुकेश की पत्नी प्रतिमा के साथ था। वही रिश्ते में चाची लगती थी इधर उसके रिश्ते की भी बात कादिरगंज ओपी के हसनपुर गांव से चल रहा था। वह मंझले लड़का था। घटना की खबर मिलते ही उसकी मां मुनेश्वरी देवी समेत अन्य परिजन का हाल बेहाल हो रहा था,रो रोकर बूरा हाल हो रहे थे। घटना की सूचना पर काफी संख्या में लोग जूट गये,इस घटना से परिजन व गांव बाले हतप्रभ रह गये। सदर एसडीपीओ विजय कुमार झा ने कहा इस धटना में संलिप्त कोई अपराधियों को बख्शा नहीं जायेगा। कहा गया कि इस मामले में हिरासत में लिया गया महिला की पति मुकेश कुमार को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया, वही महिला प्रतिमा देवी को न्यायालय में 164 का वयान लिया गया, साक्ष्य के अभाव में उसे पीईआर वांड पर मुक्त कर दिया गया है। इस कांड में अन्य अभियुक्तों के गिरफ्तारी के लिए छापेमारी किया जा रहा है। ●

समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं प्रवीण मिश्रा

● अरविन्द मिश्र

'कौन कहता है आसमां में सुराख नहीं सकता, एक पत्थर तो, दिल से उछालो यारों'। इस तरह का जज्वा रखने बाले नवादा जिले स्थित रजौली के बिनोवानगर ग्रम मे रहने बाले प्रवीण मिश्रा जी है ।जो पेशे से शिक्षक है,और अपने पांच सात एकड़ भूमि में तरह तरह के पेड़ पौधे,फल फुल के साथ ही कई तरह के मशाला अपने खेतों में उपजाकर एक आदर्श व विकसीत किसान के रूप में अपना नाम रोशन किये हुए है। सच ही कहा गया है कि महान नायक,महान नेता,महान वैज्ञानिक,महान व्यापारी सबने अपना रास्ता स्वयं तय किया है। किसी के पीठ पर लदकर उन्होंने मंजिल तय नहीं किया है। अपनी सशक्त भुजाओं व अपने आत्वविश्वास और मेहनत से ही इतिहास रच डाला है। प्रवीण मिश्रा के उस पांच सात एकड़ जमीन मे कई किस्म के आम, अमरूद, बैर, चिकू, शरीफा, केला, आमला, बेल, खीरा के साथ विशाल कदू का पेड़, सिन्दुर का पेड़, लौंग इलाईची, पतरज के साथ दर्जनों किस्म के गुलाब का फूल, औषधिये पौधे को लगाकर यह बता दिया कि–मनुष्य अगर ठान लेता है,तो असंभव को भी संभव कर देता है। मानव जब जोर लगता है,पत्थर भी पानी बन जाता है। आज एक तरफ आज का युवा दिन–रात मशाल जुलूस, कफन–जुलूस और भष्ट राजनीतिज्ञो के दलबल में फंसकर अपनी प्रतिभा को अपनी उर्जा को नष्ट करने को आतुर है। बेरोजगारी ही नंगी तलवार से निराश व हताश है। काश वो प्रवीण मिश्रा जैसे होनहार प्रतिभावान युवकों से प्रेरणा लेते।

पिंकी भारती | प्रवीण मिश्रा | प्रेम प्रकाश मिश्रा

प्रवीण मिश्रा केवल सच के एक भेंटवार्ता में कहा कि यह प्रेरणा अपने पिताजी श्री बालाजी से मिला है। सामाजिक उत्पीड़न से आहत होकर उनके पिताजी श्री बालाजी अरंडीह ग्राम को छोड़कर रजौली के इस पथरीले व उबड़ खाबड़ जमीन विनोबा नगर मे 30 वर्ष पहले आकर बस गये, चारों ओर घने जंगल था, आबादी भी शून्य था, लेकिन दिल में कुछ करने की जब्बा होता है,उसके लिए जंगल, रेगिस्तान, बीहड़ पर्वत भी आशियाना बना देता है। उस जंगल व रेहड़ खेतों में आज जो परिश्रम का पौधा लहला रहा है। वह समाज के लिए प्रेरणाश्रोत है। कोई भी सरकारी अनुदान नहीं। अपने पिताजी के अस्वस्थ्य रहने के बाद भी प्रवीण मिश्रा निरंतर उस बगीचे को दिन रात संवारने में लगे हुए है। विगत 15 दिन पूर्व माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी प्राणपुर गये थे, जल, जीवन, हरियाली कायम का उदधाटन क्रम में इस गांव से मात्र 5 सौ कदम पर। हद तो यह हो गया कि जिले के कई वरीय पदाधिकारी भी प्रवीण मिश्रा के इस सुसज्जित बागिया में जाकर कई फलों का रसास्वादन भी किये,और तो और इन्हीं के बगीया से केला, अमरूद का पेड़ भी माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को भेंट कियें। काश,माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी को दो कदम इस सुसज्जित अपने दम पर तैयार किये बगीया में ले जाने का हौसला यहां के जनप्रतिनिधियों या पदाधिकारी दिखाते, तब हिम्मत हौसला भी इस परिवार को और भी बढ़ जाता, और उसके बाद यह परिवार ज्यादा ही सक्रिय होकर अधिक से अधिक नये नये किस्म के पेड़ पौधे लगाकर नवादा जिले का नाम रौशन करते। प्रवीण मिश्रा को हर पल उत्साहित उनके पिताजी, माताजी और छोटे भाई शिक्षक सचिन मिश्रा जी का पूरा पूरा सहयोग मिल रहा है। हिम्मत व हौसले के धनी प्रवीण मिश्रा ने महान व्यक्तित्व कवि विश्वनाथ मिश्र की ये पंक्तियों को कहते है– 'अकेला चला था, अकेले चलूंगा, सफर के सहारे, न दो साथ मेरा, सहज मिल सकें, वही नहीं लक्ष्य मेरा,बहुत दूर मेरी निशा का सबेरा। अगर थक गये हो,तो कब तुम लौट जाओ, गगन के सितारें न दो साथ मेरा। आखिर अब वक्त ही बतायेगा अपने

दम पर इतिहास रचने वाले को, कौन मसीहा मिलता है,जो इनके प्रतिभा को और भी विकसीत कर सके, बस अब अहिल्या की तरह प्रवीण मिश्रा को भी तारणद्वार के लिए राम का इंतजार।

रजौली के प्रखंड विकास पदाधिकारी प्रेम प्रकाश मिश्रा भी अहलादित होकर कहते है कि मेरा प्रखंड के लिए गौरव की बात है,ऐसे उत्कृष्ठ बगीचा है, जो अपने बल पर तैयार किया गया है। मैं हर सभव मदद के लिए तैयार हूँ, इस कार्य के लिए कृषि विभाग के साथ वरीय पदाधिकारी को पत्र भेजकर अवगत करा दिया जायेगा। वही जिला पार्षद अध्यक्षा पिंकी भारती कहती हैं की प्रवीण मिश्रा जैसे उन्नतशील किसान के जज्बे को बधाई देती हूं। ऐसे ही नौजवानों से जिला का सम्मान बढ़ता है।मेरा पूरा प्रयास होगा। ऐसे नौजवान के हौसले को आगे बढ़ाने के लिए सदैव अग्रसर रहूंगी। ●

पुरातत्व के निगाहों से ओझल है नारदीगंज की धरोहर

● अरविन्द मिश्र

नारदीगंज प्रखंड के विभिन्न गांवों में ऐतिहासिक व द्वापरकालीन धरोहर विद्यमान है। ग्रामीण आज भी अपने गांव स्थित धरोहर को बचाने में लगे हुए है। लेकिन पुरातत्व व इतिहासकारों के निगाह से ओझल बना हुआ है। ऐसा जनप्रतिनिधियों व अधिकारियों के अनदेखी के कारण हो रहा है। कई दशक गुजर गये है,लेकिन आजतक उसका सुंदरीकरण नहीं हो पाया है। इसका मलाल क्षेत्रवासियों में है। जिले में अग्निधारा से विख्यात मधूवन,हंडिया गांव स्थित ऐतिहासिक व पौराणिक सूर्यनारायण मंदिर,धनियांवा पहाडी स्थित शिवपार्वती मंदिर के अलावा हरनारायणपुर गांव स्थित जीयत पोखर का नाम शामिल है। सनद रहे इस प्रखंड में मधूवन है,जहां गर्म जलधारा है। अग्निधारा के नाम से जिले में प्रसिद्व है। पिछले दो वर्ष से गर्म जलधारा की कुंड सुख गया है। यहां राजगीर की कुंड से भी अधिक गर्म जल है। इस गांव के चापाकल व बोरिग से आज भी गर्म जल निकलता है।गुरूवार को डीएम कौशल कुमार ने मधूवन गांव जाकर स्थिति से अवगत भी हुए है। यह गांव डोहड़ा पंचायत में स्थित है। इसके अलावा धनियावां पहाड़ी स्थित शिवपार्वती मंदिर आस्था का केन्द्र है,धनियावां पहाड़ी स्थित शिवपार्वती मंदिर। सच्चे मन से पूजा करने बाले याचक कभी भी खाली हाथ नहीं लौटते है। यह मंदिर ऐतिहासिक व द्वापरकालीन है। कई दशक बीत गये,लेकिन आज तक मंदिर का सौदर्यीकरण नहीं हो पायां। पुरातत्व व इतिहासकारों के निगाहों से ओझल है धनियावां पहाड़ी स्थित शिवपार्वती मंदिर। ऐसा शासन प्रशासन का अपेक्षित सहयोग नहीं मिलने के कारण हो रहा है। यह मंदिर नारदीगंज प्रखंड के पेश पंचायत में स्थित है। किंवंदतियां है कि मगध सम्राट्र जरासंध की पुत्री धन्यावती प्रतिदिन अपने अराध्यदेव भगवान शंकर की पूजा अर्चना करने धनियावां पहाड़ी स्थित मंदिर में आया करती थी। वही कहुआरा पंचायत की हरनारायणपुर गांव में जीतय पोखर है। सदियों बीत गये,लेकिन जीयत पोखर का सौदर्यीकरण नहीं हो पाया। जबकि उक्त पोखर संतान प्राप्ति के लिए प्रसिद्ध माना जाता है। आये दिन श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। पोखर के निकट जीयत मंदिर है। याचक, जीयत मंदिर में पूजा अर्चना करने के लिए आते है,इसके पूर्व याचक जीयत पोखर में स्नान करते है। मान्यता है कि वैसे सुहागिन जिन्हे संतान होने के उपरांत उनके पुत्र काल कलवित हो जाते है। वे पुत्र प्राप्ति की इच्छा से यहां पहुंचते है, और जीयत पोंखर में स्नानकर मंदिर में पूजा अर्चना करते है,उन्हे मनोबांछित मुरादे पूरी होती है। आसपास गांवों के अलावा जिले ही नही,वल्कि दूसरे जिले व राज्य के लोग मंदिर में माथा टेकने नही भूलते है। यह परम्परा सदियों से चला आ रहा है। लेकिन जनप्रतिनिधियों व अधिकारियों का अपेक्षित सहयोग नही मिलने से उपेक्षित है। जिले का ऐतिहासिक व द्वापरकालीन हंडिया गांव स्थित सूर्यनारायण मंदिर है,जो सदियों से उपेक्षित है। यह मंदिर भी सौदर्यीकरण का वाट जो रहा है। ऐसा शासन प्रशासन के उदासीन रवैया के कारण हो रहा है। पुरातत्व व इतिहासकार के नजरों से ओझल है। जबकि उक्त मंदिर बौद्ध सर्किट मार्ग पर अवस्थित है। बावजूद इस मंदिर को पुरातत्व से नहीं जोड़ा गया है। आये दिन मंदिर में पूजा अर्चना करने बालों का तांता लगा रहता है। कार्तिक छठ व चैती छठपूजा में आसपास गांव के अलावा जिले से बाहर के भी छठवर्ती व श्रद्धालु भगवान भास्कर की पूजा करने आते है। इसके अलावा प्रत्येक रविवार को भी पूजा अर्चना करने बालों को भीड़ लगी रहती है। मान्यता है कि मगध सम्राट्र जरासंध की पुत्री धन्यावती अपने अराध यदेव भगवान शंकर की पूजा अर्चना करने के लिए धनियावां पहाड़ी मंदिर में राजगीर से इसी मार्ग से जाया करती थी, और मंदिर के निकट सरोबर में स्नानकर भगवान सूर्यदेव की पूजा अर्चना के उपरांत वहां जाया करती थी। यह मंदिर नारदीगंज प्रखंड के हंडिया पंचायत की हंडिया गांव में स्थित है। उल्लेखनीय है कि मधूवन गांव स्थित गर्मजल धारा को विकसीत व पर्यटक स्थलों में दर्जा दिलाने के उदेश्य से ओड़ो पंचायत के पूर्व मुखिया अरविन्द मिश्र ने भी अथक प्रयास किया था, उन्होंने वर्ष 2002 में ग्रामीण विकास, भारत सरकार के सलाहकार नागेश्वर शर्मा को वहां ले गये थे, और स्थलीय निरीक्षण हुआ था, आश्वासन भी मिला, और पायलाट प्रोजेक्ट भी बना था, उसके बाद तब तत्कालीन डीएम रामचंद्र प्रसाद ने भी दौरा किया। पुन; उन्होंने वर्ष 2006 में पर्यटन मंत्री अनिता देवी व संयुक्त सचिव हासिब खान को ज्ञापंन देकर मांग किया था। वर्ष 2007 में तत्कालीन डीएम मसूद हसन ने भी स्थल का निरीक्षण कर पर्यटक स्थलपर के लिए संचिका बनाया था, लेकिन मामला फाइलों में सिमट कर रह गया। इसके बाद वर्ष 2017 में तत्कालीन वरीय उपसमाहर्ता सह नारदीगंज प्रखंड के प्रभारी मुकेश रंजन को आवेदन देकर ध्यान दिलाया था, तब वरीय उपसमाहर्ता श्री सिंन्हा ने इसे विकसीत व पर्यटन का दर्जा दिलाने के लिए बिहार सरकार को पत्र भेजा था, लेकिन आज भी स्थिति जहां थी, वही रह गयी। इसके अलावा अन्य गांव स्थित ऐतिहासिक व दर्शनीय स्थलों को पर्यटक व विकसीत करने की मांग किया था। वैसे हाल के दिनों में पुन; डीएम कौशल कुमार का स्थलीय निरीक्षण के उपरांत लोगों में आस जगी है। ●

मुख्यमंत्री के ड्रीम प्रोजेक्ट सात निश्चय योजना का बंटाधार!

● नीलेश कुमार

बछवारा बेगूसराय जिला पंचायत रुदौली में किए जा रहे सात निश्चय योजना के अधीन गली-गली सड़क एवं नाली का निर्माण पूर्णता प्राक्कलन के विपरीत मनमाने तरीके से स्थानीय जनप्रतिनिधियों कर्मचारियों एवं अधिकारियों की मिलीभगत के कारण इस ड्रीम प्रोजेक्ट को भ्रष्टाचार के दलदल में फसा कर रख दिया गया है जनता मुक दर्शक बनी हुई है उसकी बात सुनने वाला कोई नहीं है और मनमाने तरीके से अधिकारियों के बल पर कार्य कराया गया है जिसकी गहन जांच निष्पक्ष एजेंसी के द्वारा कराया जाना अति आवश्यक है यह काम जनहित के लिए अति अनिवार्य है रुदौली पंचायत के वार्ड नंबर 6 एवं 7 में वीडियो बछवारा के द्वारा निरीक्षण के दौरान अनियमितता पाए जाने के बावजूद और प्रकलन के ठीक विपरीत निर्माण कार्य को देखकर उन्होंने संबंधित वार्ड अध्यक्ष/ सचिव/ क्रियान्वयन समिति को काम स्थगित रखने का आदेश दिनांक 8:11 2019 को दिया गया था और प्राक्कलन के अनुसार कार्य करने का निर्देश भी दिया गया था और साथ ही साथ दस 11 2019 को अनुमंडलीय अनुश्रवण समिति की बैठक में स्थानीय है विधायक की उपस्थिति में अनुमंडल अधिकारी के द्वारा निर्देश दिया गया कि कार्य प्राक्कलन के अनुरूप कराया जाना सुनिश्चित किया जाए नहीं तो इसकी सारी जिम्मेवारी और उन पर विधिवत कानूनी कार्रवाई की जाएगी जिसमें वार्ड नंबर 7 के वार्ड सदस्य और 6 नंबर के वार्ड सचिव एवं सदस्य उपस्थित थे लेकिन प्रखंड विकास पदाधिकारी और जेईई बछवारा की मिलीभगत से प्राक्कलन के अनुरूप कार्य संपन्न नहीं कराया गया जिसमें लाखों रुपयों की बंदरबांट की गई इसकी गहन जांच आला अधिकारी से करवा कर इस ड्रीम प्रोजेक्ट की बंदरबांट को बचाते हुए दोषियों पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई जिला पदाधिकारी को करनी चाहिए। ●

गंगा के कटाव से सैकड़ों विस्थापित लाभ से वंचित

● नीलेश कुमार

गंगा कटाव से त्रस्त सैकड़ों भूमिहीन परिवार प्रधानमंत्री आवास योजना के लाभ से वंचित हो रहे हैं ऐसे परिवार पिछले 50 साल से सड़क छाप से जिंदगी जीने को विवश हैं सड़क के किनारे झुग्गी झोपड़ी मैं अपना डेरा डाल रखे हैं इस भूमिहीन परिवार को प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत सरकारी प्रावधान के अनुरूप भी जमीन खरीदने के लिए अब तक कोई राशि निर्गत नहीं की गई है ना ही सरकारी तौर पर इनके पुनर्वास की कोई व्यवस्था की जा सकी है बसने की जमीन के अभाव में इन परिवारों को एनएच 28 के किनारे गड्ढे में गुप्ता बांध पर झुग्गी झोपड़ी खड़ा कर अपनी गुजर-बसर कर रहे हैं रानी गांव के समीप एनएच 28 के किनारे सड़क की परी जमीन कटाव पीड़ितों में भवरु पासवान रामू पासवान कैलाश पासवान सुरेश पासवान आदि ने बताया कि वर्ष 1971 में गंगा के कटाव से उनका गांव महमदपुर फत्ता पूरी तरह गंगा नदी में विलीन हो गया उस समय कुल 49 कटाव पीड़ित परिवार रानी गांव के पास एनएच 28 के किनारे गड्ढा में आकर बस गए थे अभी तक इन परिवारों की संख्या बढ़कर 150 से भी अधिक हो गई है कटाव पीड़ितों ने कहा कि करीब 50 वर्षों से व पुनर्वास की आस में

टकटकी लगाए सरकार की आंखें देख रही है इतने बरसों में उन्हें सिर्फ यहां वोट डालने भर का ही अधिकार मिल सका है जमीन के अभाव में उन्हें प्रधानमंत्री आवास व शौचालय योजना समेत अन्य कई सरकारी योजनाओं के लाभ से वंचित रहना पड़ रहा है दूसरी तरफ एनएच 28 से गुजरने वाले और नियंत्रित वाहनों का उनकी झोपड़ी पर पलटने का खतरा बना रहता है एनएच 28 के किनारे गड्ढे में बनी उनकी झोपड़ियों पर वाहनों के पलट जाने से अब तक कई लोगों की मौत भी हो चुकी है कटाव पीड़ितों ने कहा कि जनप्रतिनिधियों से लेकर अधिकारियों तक बांस की जमीन की मांग करते करते हुए थक चुके हैं किंतु हालात जस के तस बने हैं रानी तीन पंचायत के मुखिया अमरजीत राय ने बताया कि वर्ष 2017 में तत्कालीन सीओ ने सरकार की शपथ ली जिस नीति के तहत भूमि अधिग्रहण का प्रस्ताव डीएम को भेजा था सीओ ने कुल 98 परिवारों के लिए चिरंजीवी पुर में 4 डिसमिल की दर से बांस की जमीन के अलावा रास्ता सामुदायिक भवन स्कूल आदि के लिए कुल 7 बीघे भूमि को चिन्हित कर अधिग्रहण का प्रस्ताव डीएम को दिया था उसके बाद से मामले को ठंडे बस्ते में डाल दिया गया इधर सीओ सूरज कांत ने बताया कि कटाव पीड़ितों की सूची में कुछ विसंगति के कारण प्रस्तावित भूमि पर पुनर्वास का मामला लंबित है कटाव पीड़ितों को बास की जमीन उपलब्ध करवाने का प्रयास किया जा रहा है।●

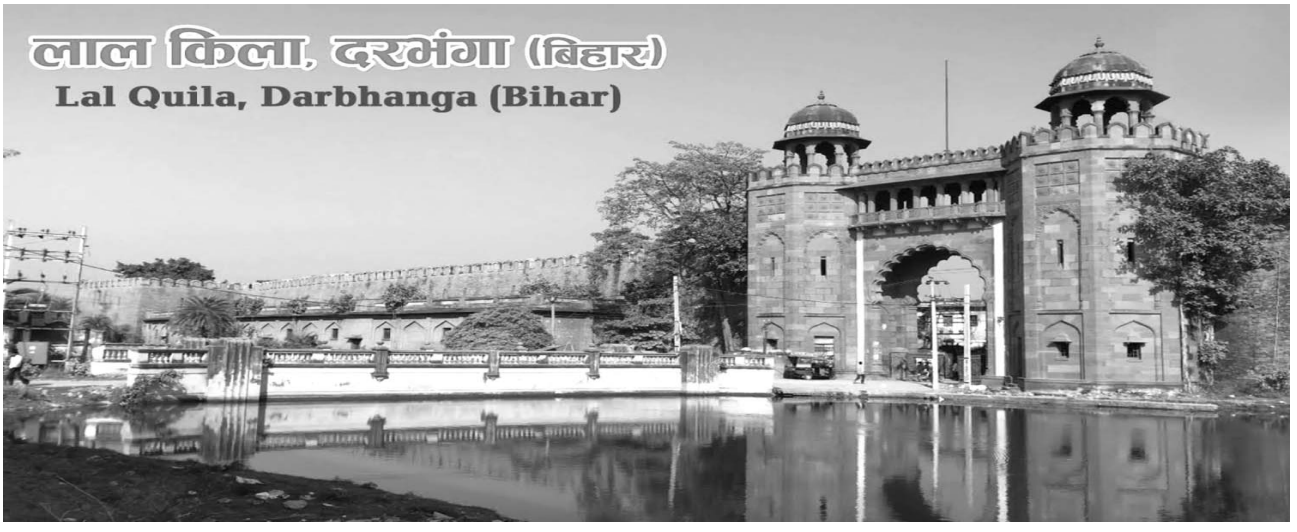

दरभंगा का खेवनहार कौन?

बिहार राज्य में दरभंगा की चर्चा नहीं हो तो शायद इस प्रदेश की वास्तविक स्थिति से दूर रहेंगे। बात विद्वान महापंडित विद्यापति की हो या फिर दरभंगा महाराज की, दरभंगा धर्म, अध्यातम, शासन-प्रशासन, शिक्षा एवं चिकित्सा के साथ अपराध के लिए, साथ ही विशेषकर आतंकवाद के लिए भी अब सुर्खियों में है। गंगा पार की बात हो तो किसी भी प्रबुद्ध का ध्यान दरभंगा पहुंच ही जाता है। दो विश्वविद्यालय (शिक्षा) ज्ञान देने के साथ-साथ दरभंगा मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल (डीएमसीएच) से चिकित्सा की बात हो दरभंगा अर्थ के मामले में भी किसी अन्य जिलों से सर्वाधिक महत्व रखता है क्योंकि दरभंगा महाराज की कृति से न सिर्फ भारत परिचित है बल्कि पूरा विश्व जानता है। वर्त्तमान समय में दरभंगा का दबंगई की भी चर्चा जोरो पर है लेकिन सब यही ताल ठोकते हैं की हम हैं दरभंगा के खेवनहार, परन्तु अंधकार में डूबता दरभंगा गंदी राजनीति की बलिबेदी पर चढ़ता जा रहा है। सांसद, विधायक सहित मेयर की राजनीति में दरभंगा का समुचित विकास पर ग्रहण ही लगता दिख रहा है तो दूसरी ओर हमारी योजना-तुम्हारी योजना, हमारा प्रयास-तुम्हारा प्रयास के कारण आखिर वास्तव में कौन है दरभंगा का खेवनहार जिसके दम पर विधानसभा चुनाव 2020 की नैया पार लगेगी वोटरों के सामने यक्ष प्रश्न है। विकास एवं राजनीति के बीच चल रहे दंद्ध युद्ध पर पड़ताल करती शशि रंजन सिंह की खास रिपोर्ट:-

दरभंगा, मिथिला की अघोषित राजधानी, मिथिला राज्य की माँग झारखण्ड से भी पुरानी है। कभी दरभंगा का अतित बहुत हीं स्वर्णिम था दरभंगा में आजादी के पहले से हवाई अड्डा की बात हो या अशोक पेपर मिल, रामेश्वर जुट मिल, साथ हीं कई बड़ी छोटी चीनी मिलें दरभंगा में रोजगार की कोई कमी नहीं थी लेकिन आज जो भी ट्रेन दरभंगा से दिल्ली, मुम्बई, गुजरात, पंजाब आदि बड़े शहरों के लिए खुलती है जिसमें मजदूर से लेकर शिक्षित तक रोजगार के तलाश में भरे पड़े होते हैं। दरभंगा में उघोग धन्धों का नाश हो चुका है। दरभंगा महाराज की विराशत भी बिकते-बिकते कंगाल हो गई। दरभंगा के कई सांसद कई नामी-गिरामी सांसद विधायक हुए कोई दरभंगा को दिल्ली बनाने का सपने बेच कर चला गया एवं कोई दरभंगा को मुम्बई बनाने का सपना बेच रहा है लेकिन अभी भी बड़ा प्रश्न है कि दरभंगा का खेवनहार कौन है।

दरभंगा के पूर्व सांसद कृर्ति झा आजाद दरभंगा को दिल्ली बनाने का सपना दिखा कर दरभंगा को दलदली बना कर चले गए। आज भी बंद पड़ा हुआ उनका म्युजिकल फांउन्टेन दिल्ली बनाने के सपने को मुँह चिढ़ा रहा है। दरभंगा की सबसे बड़ी समस्या है रेलवे समपार फाटक जो आज तक सांसदों के आश्वासन तक हीं सिमट कर रह गया। चाहे कगवा गुमटी की बात हो या दोनार, बेला, चट्टी, अललपट्टी, पंडासराय, म्युजिकल गुमटी आज भी घंटों जाम लगता है जनता त्रहिमाम करती रहती है मगर जनता तो जनता है हर चुनाव में नेता नए वादे के साथ चुनावी मैदान में उतर जाते हैं जीत भी जाते हैं नए नारों एवं वादों के साथ। कभी दरभंगा चिकित्सा महाविधालय उत्तर भारत से लेकर पड़ोसी देश नेपाल के लिए एक मात्र सहारा था। आज दरभंगा महाचिकित्सा महाविघालय अस्पताल अपने गौरवशाली अतीत को पीछे छोड़ कर भुत बंगला 'औषधि विभाग' में तब्दील हो चुका है। प्रधानमंत्री जी के स्वच्छता अभियान को मुँह चिढ़ा रहा है। दरभंगा शहर की बात करें तो दरभंगा के वर्तमान और लगाता पाँच बार से विधायक श्री संजय सरावगी हैं साथ हीं दरभंगा नगर निगम पर वर्षो से श्री ओम प्रकाश खेरीया का कब्जा रहा है अभी उनकी धर्मपत्नि श्रीमति बेजयंती खेरीया महापौर हैं। लेकिन दरभंगा को स्मार्ट-सिटि का उपलब्धि कोई नहीं दिलवा सका। दरभंगा को तलाश है एक रिंग रोड़ का, दरभंगा को तलाश है अच्छी सड़क का, दरभंगा को तलाश है बड़ी छोटी जल निकास नालों का, दरभंगा शहर बर्षात के समय में

कृति झा आजाद

बैजयंती खेरीया

संजय सरावगी

तलाब में तब्दील हो जाता है लेकिन जल निकासी का कोई भी प्लान नगर निगम अभी तक बना भी नहीं पाया है। कभी दरभंगा में सैकड़ों की संख्या में पोखर हुआ करते थे लेकिन आज भूमाफियायों द्वारा उन्हें बेच कर आलिशान बंगले बन चुके हैं। आज इस पर विधायिका, कार्यपालिका मौन है। रोजगार धंधों की बात करें तो यहॉ जो भी उघोग धंधो थे सभी बंद हो चुके हैं या बंद होने की कगार पर है। दरभंगा हवाई अड्डे से विमान की आवाजाही शुरू होना मृग मरीचिका सा होने लगा है, इसका उदघाटन की घोषणा हो जाती है लेकिन हो नहीं पाती है।

दरभंगा का रहने वाला कोई शख्स जब-जब देश की राजधानी दिल्ली में लाल किले को देखता है तो शायद उसकी आंखे नम हो जाती है। टिपिकल दरभंगिया ये सोचने को मजबूर हो जाता है कि दिल्ली के लाल किले से कहीं ज्यादा खूबसूरत तो उसके अपने शहर दरभंगा का लाल किला है लेकिन दरभंगा के लाल किले और दिल्ली के लाल किले की किस्मत में जमीन-आसमान का फर्क है। दिल्ली के लाल किले पर तिरंगा लहराने के लिए देश के प्रधानमंत्री पहुंचते हैं और दरभंगा के लालकिले के पास अपने गौरवशाली इतिहास पर रोने के सिवा अब तो कुछ रहा नहीं। खैर अभी मुद्दा कुछ और है बांकी बातें फिर कभी। प्रधानमंत्री मोदी के कालेधन के खिलाफ चलाये गए नोटबंदी के अभियान के बाद क्या बेनामी संपत्ति के ऊपर भी कार्यवाई होगी? क्या सुशाशन का नारा देने वाले नीतीश कुमार बिहार के सबसे बड़े जमीन घोटाले के ऊपर कोई जांच बिठाएंगे, या कोई ठोस कार्यवाई करेगी राज्य सरकार? चौंकिए मत! बिहार की धरती दरभंगा में अबतक का सबसे बड़ा जमीन घोटाला उजागर हुआ है। जी हॉं, एक ऐसा घोटाला जिसमे राज घराने से लेकर पुलिस के हाकिम तक और सर्वे ऑफिस से लेकर रजिस्ट्री ऑफिस के अधिकारी, स्थानीय नेता और नगरपालिका तक शामिल बताये जा रहे हैं। जब इसकी सुचना हमें मिली तो हमने उक्त जमीन से सम्बंधित जानकारी जुटाई। हमको प्राप्त दस्तावेज और जानकारी से बहुत चौंकाने वाले राज से पर्दा उठा है। हम आपको एक-एक कर दरभंगा राज के हर राज से वाकिफ कराएँगे। आपको बता दें कि यह जमीन घोटाला इतना बड़ा है कि इसमें पड़ने से स्थानीय मीडियाकर्मी से लेकर स्थानीय नागरिक तक डरते हैं। कुछ लोगों ने इस मामले को उजागर करने का प्रयास किया तो स्थानीय पुलिस और भाड़े के गुंडों की मदद से उनको धमकाया गया।

सूत्रों की माने तो दरभंगा राज किले का जमीन बिकाऊ नहीं है, अगर है भी तो सिर्फ गिने-चुने खेसरा को ही बेचा जा सकता है। फिर भी यहाँ की जमीन, जिसमे पक्का रास्ता, मंदिर के ट्रस्ट की जमीनें, महारानी के ट्रस्ट की जमीनें, तालाब, नाला, मुख्य-द्वार के आगे पीछे की जमीन इत्यादि को उन्हीं खेसरा नंबरों में बेच दिया गया। गौरतलब हो कि सर्वे ऑफिस में भी राजघराना के लोग ही काबिज हैं और उनके द्वारा अपने हिसाब से परिवर्तन कर जमीनों को बेच दिया जाता है। सर्वे

ऑफिस में जो कर्मचारी ऑफिस को खोलता है वह वर्षों पहले रिटायर हो चुका है और सर्वे कार्यालय में अभी उसका कोई रिकॉर्ड नहीं है। अभी कुछ दिनों पहले कार्यालय में आग भी लगी थी। स्थानीय लोगों के मुताबिक आग लगाकर जरुरी कागजातों को जलाने का प्रयास भी किया जा सकता है। सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार यदि राज का जमीन बेचने वालों के पास जमीन का स्वामित्व होता तो जिन लोगों ने राज की जमीन को खरीदकर घर बनाया है उनके नाम से दाखिल-खारिज होता। जबकि यह सर्वविदित है कि बिकाऊ जमीन जो वर्षों पहले बिक चुका है को छोड़ कर किसी जमीन का दाखिल-खारिज नहीं हो रहा है। यही कारण है कि दरभंगा का रामबाग किला जो वार्ड स. 14 के अंतर्गत आता है बिना नगर निगम के किसी अथॉरिटी से नक्शा पास कराये सारे नियमों को ताख पर रखकर कंक्रीट जंगल में बदल गया। दरभंगा नगर निगम से यह सवाल करना चाहता है कि रामबाग में बिना दाखिल-खारिज किये हुए जमीन पर, बिना नक्शा पास कराये 4 मंजिला इमारतों का निर्माण कैसे हो गया? राज किले के अन्दर निर्मित उन मकानों को नगर निगम के तरफ से कोई नक्शा प्राप्त नहीं है और कोई भी मकान मालिक नगर निगम को होल्डिंग टैक्स नहीं देता क्योंकि दस्तावेजों में रामबाग किले के अन्दर मकान मौजूद ही नहीं है। क्या दरभंगा नगर निगम के अन्दर बिना नगर निगम की जानकारी के बड़े पैमाने पर जमीनें खरीदी गई और उनपर अवैध निर्माण हुआ यह जांच का विषय है। साथ ही अगर जो जमीनें बेचीं गयीं वह बिकाऊ हैं तो किसी अधिकारी द्वारा किस आधार पर राज की जमीनों का दाखिल खारिज रोका गया और वह बिना किसी अवरोध आज तक कैसे प्रभाव में है।

ज्ञात हो कि रामबाग किला की दीवारों पर जिला प्रशासन का बोर्ड लगा है जिसमे चेतावनियाँ लिखी हुई हैं। मतदान के समय दीवार पर लगाए गए पोस्टर पर जुर्माना लगाना कहीं न कहीं दर्शाता है की यह जिला प्रशासन के अधीन है। अगर यह जिला प्रशासन के अधीन है तो फिर किला के मुख्य द्वार की गुम्बदों में दुकानें कैसे चल रही हैं? बिहार के इस धरोहर को किराये पर लगाने का अधिकार किसने दिया है इसे किराये पर लगाने वालों को और किराये पर चल रहे एक प्रभावशाली व्यक्ति के जिम्मे और अन्य दुकानों को बिना किसी आधार और दस्तावेज के अपनी दूकान चलाने की अनुमति किसने और क्यूँ दी यह जांच का विषय है। अब प्रश्न यह उठता है कि अगर इतने बड़े भू-खंड को बेचने का अधिकार अगर किसी को प्राप्त है तो इसके लिए सबसे पहले कानूनन जमीन विक्रेता को नियमों के तहत पुरे भू-खंड का प्लानिंग करके हर प्लाट के लिए पक्का रास्ता, पक्का नाला, स्ट्रीट लाइट, स्कूल के लिए, अस्पताल के लिए, प्ले ग्राउंड Do लिए जगह छोड़कर जमीन का ले-आउट सरकार के पास जमा कराना चाहिए था जो नहीं किया गया। ऐसा इसलिए नहीं किया गया क्योंकि ऐसा करने पर जमीन बेचने वाले

को जमीन पर अपना स्वामित्व सिद्ध करने के दस्तावेज बिहार सरकार के समक्ष उपस्थित करना पड़ता। कुछ इस तरीके से किया जा रहा है गोरखधंधा जब बात राजघराने और रसूखदार और बड़े पदों पर आसीन लोगों की हो तो फिर उनके लिए सारे नियम और कानून बदल दिए जाते हैं?

औपनिवेशिक मिथिला की आर्थिक प्रगति के आयाम

● पुनीत कुमार झा
(शिक्षक)

मानव जीवन के आर्थिक मूल्यों का आधार कृषि, पशुपालन, शिल्प उद्योग और वाणिज्य व्यापार रहा है। आर्थिक रूप से उन्नत मानव ही भौतिक सुख-सुविधाओं का लाभ पा सकता है। याज्ञवल्क्य, कौटिल्य, नारद आदि विचारकों ने धर्मशास्त्र के व्यवहार में अर्थशास्त्र का भी समावेश किया है। प्राचीनकाल में राजा, धान्य, पशु, स्वर्ण, कृप्य और विष्ठी (कारीगरी) से प्राप्त धन से अपने कोष व सैन्य शक्ति को सुदृढ़ करके शत्रु को परास्त करते थे। वस्तु वार्ता शब्द वृत्ति से उत्पन्न हुआ हे। यह शब्द व्यवसाय और उसके द्वारा निमित किए जाने वाले कार्य से सम्बद्ध है। विष्णु पुरान में कृषि पशुपालन और वाणिज्य को इससे संबंधित एक विद्या समझकर शामिल किया गया था।

वस्तुतः भौतिकवादी युग में मानव जीवन का सम्पूर्ण क्रिया कलाप, आर्थिक संरचना आर्थिक समृद्धि पर निर्भर करती है। जिस क्षेत्र की आर्थिक संरचना सुदृढ़ होती है वहाँ आर्थिक समृद्धि होती है, वहाँ विकास के दरवाजे खुलते हैं। वहाँ का जनजीवन खुशहाल होता है। जो क्षेत्र आर्थिक रूप से पिछड़ेपन का शिकार होता हे, विकास बाधित होता है। लोग निर्धनता, भूखमरी, कुपोषण, महामारी के शिकार होते हैं। वहाँ की जनता शोषित, पीड़ित होती है। इस संदर्भ में हमें औपनिवेशिक काल में मिथिला में आर्थिक प्रगति के आयाम का अध्ययन करना है।

जनक, जानकी, याज्ञवल्क्य की भूमि मिथिला वह क्षेत्र है, जिसके अन्तर्गत वर्तमान बिहार राज्य के मधुबनी, दरभंगा, सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर, बेगूसराय, मुंगेर, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, अररिया, किशनगंज, पूर्णिया, भागलपुर के जिले आते हैं। यह क्षेत्र सदियों से आर्थिक दृष्टि से पिछड़ेपन का शिकार रहा है। मध्यकाल में मिथिला में कर्णाट वंश, ओइनवार वंश का शासन रहा। लेकिन मिथिला का क्षेत्र आर्थिक समृद्धि नहीं प्राप्त कर सका।

प्लासी और बक्सर के युद्ध के बाद बंगाल, बिहार और उड़ीसा का संपूर्ण क्षेत्र ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के अधिकार क्षेत्र में आ गया। जिसके परिणामस्वरूप भारतीयों का आर्थिक शोषण प्रारम्भ हो गया। रजनी पामदत्त ने लिखा है- प्लासी के युद्ध से पूर्व इंग्लैंड भारत में वस्तुओं की खरीददारी के बदले सोने, चाँदी, जैसे कीमती धातु देता था, लेकिन युद्ध के पश्चात् इंग्लैंड से किसी भी कीमती धातु का आयात नहीं किया गया। अतः प्रतिवर्ष भारत के साधनों के दोहन के परिणामस्वरूप भारत गरीब और इंग्लैंड अमीर होता गया।

लार्ड कार्नवालिस द्वारा 1793 ई. में स्थायी प्रबंध की व्यवस्था से मिथिला के किसानों की आर्थिक स्थिति और दयनीय हो गई और वह जमींदारों एवं अंग्रेजों के दोहरे शोषण की शिकार हुई। बिहार में स्थायी प्रबंध लागू हो जाने से भूमि का स्वामित्व किसानों के हाथ से निकलकर जमींदारों के हाथों में आ गई। बिहार में दरभंगा राज, बेतिया राज, हथुआ राज, डुमरांव राज, बाघी राज जैसे अनेक राजाओं को जमींदार का दर्जा दिया गया और उनके साथ राजस्व वसूलने का अनुबंध किया गया। इस तरह किसानों के हाथ से भूमि भी जाती रही और अब इन्हें जमींदारों के रहमोकरम पर जीवन बसर करने के लिए छोड़ दिया गया। स्थायी प्रबंध ने मिथिला में महाजनी और सूदखोरी को बढ़ावा दिया। समय पर लगान चुकाने के लिए किसानों ने महाजनों और सूदखोरों के हाथों अपनी जमीन रखनी शुरू कर दी। लेकिन एक बार जमीन महाजनों के हाथों में जाने के बाद फिर वापस नहीं लौटी। इस तरह किसानों की स्थिति मजदूरों से भी बदतर हो गई। वे रोजगार के लिए पलायन करने लगे। स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् भी यह सिलसिला जारी है।

ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में नील उद्योग का विकास उल्लेखनीय है। नील उद्योग के साथ किसानों, रैयतों के शोषण का इतिहास और महात्मा गाँधी जी का चम्पारण सत्यागह जुड़ा हुआ है। मिथिलांचल के मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर, दरभंगा, मधुबनी, बेगूसराय, मुंगेर आदि क्षेत्रों सहित चम्पारण में नील की खेती होती थी। मिथिला में यूरोपियन पद्धति से नील की खेती प्रारंभ करने का श्रेय फ्रैंकोईस ग्रैन्ड को था जो 1782 ई. में तिरहुत का प्रथम कलक्टर था। 1810 ई. में मिथिला में नील फैक्ट्रियों की संख्या 25 हो गई। 1800 से 1900 ई. के बीच नील की खेती दरभंगा जिले के लगभग सभी थाना क्षेत्रों में होती थी और 1874 ई. तक संभवतः दरभंगा जिले में भारत का सबसे बड़ा नील फैक्ट्री पंडौल में था और 300 वर्गमील इसका क्षेत्र था। भारतीय नील की विदेशों में भारी माँग थी, इसलिए ब्रिटिश प्लान्टरों ने कई जगहों पर नील की खेती के लिए किसानों को मजबूर किया। प्रति बीघा किसानों को तीन कट्ठा में नील की खेती अनिवार्य कर दिया गया। इसे ''तीन कठिया'' प्रथा कहते हैं। किसानों को निलहे जमींदारों के यहाँ बेगार खटना पड़ता था और कई प्रकार के टैक्स उन्हें देने पड़ते थे। किसानों की खराब स्थिति के विषय में पं. राजकुमार शुक्ल ने 1916 ई. में लखनऊ कांग्रेस में महात्मा गाँधी को अवगत कराया। महात्मा गाँधी ने चम्पारण जाकर निलहे जमींदारों के अत्याचार को अपनी आँखों से देखा और उन्होंने निलहे जमींदारों के शोषण से मुक्ति के लिए चम्पारण सत्याग्रह का अभिनव प्रयोग किया और किसानों को निलहे जमींदारों के शोषण से मुक्ति दिलाया।

औपनिवेशिक काल में बिहार में चीनी मिलें खुली और मिथिला में भी चीनी उद्योग का विकास हुआ था। मिथिला में चीनी मिलों की स्थापना से यहाँ के सामाजिक-आर्थिक क्षेत्र में बलदाव आने लगा था। वर्त्तमान मधुबनी जिला के लोहट और रैयाम में 1914 में. चीनी मिल की स्थापना हुई, जबकि सकरी में 1933 ई. में चीनी मिल खुला। समस्तीपुर जिले में 1920 में. चीनी मिल खुला था और सीतामढ़ी में 1933 में हसनपुर में 1934 ई. में चीनी मिल खुला। आँकड़े बताते हैं कि 1942 ई. से पूर्व बिहार में कुल 33 चीनी मिल थे, जबकि सम्पूर्ण भारत में केवल 40 चीनी मिलें थी। इन चीनी मिलों से 15 से 20 लाख ईख काश्तकार तथा 60-70 हजार मजदूरों की जीविका चलती थी। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् चीनी उद्योग को प्रोत्साहित करने के बजाये उसकी उपेक्षा की गई। सरकार द्वारा चीनी मिलों से चीनी लेने के बजाए दूसरी जगहों से चीनी आयात की जाने लगी। फलतः राज्य की 33 चीनी मिलों में 23 चीनी मिलें बन्द हो गई। वर्तमान समय में मिथिला क्षेत्र में सीतामढ़ी के रीगा को छोड़कर और कोई चीनी मिल चालू हालत में नहीं है।

मिथिला में वस्त्र उद्योग विकसित अवस्था में था। यहाँ सूती वस्त्र के साथ रेशमी वस्त्र भी तैयार किया जाता था। अंडी, रेशम और तसर से निर्मित भागलपुर के रेशम उद्योग का काफी विकास

हुआ था। ब्रिटिश औपनिवेशित काल में और इससे पूर्व से ही बिहार में रंग-बरंगे वस्त्र बनते थे। 'वर्ण रत्नाकर' में तीस प्रकार के वस्त्रों का उल्लेख मिलता है। कपड़ों पर रंगाई-छपाई भी होती थी। औपनिवेशिक काल में महात्मा गाँधी ने खादी वस्त्र उद्योग को खादी आन्दोलन का रूप दिया और से ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार बना दिया। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् खादी ग्रामोद्योग भी आगे चलकर सरकारी उदासीनता का शिकार हुआ और अब यह समाप्त प्राय है।

मिथिलो में जूट उद्योग का विकास सहरसा, पूर्णिया, कटिहार, किशनगंज, अररिया आदि जगहों में हुआ था। समस्तीपुर, दरभंगा में भी जूट उद्योग का विकास हुआ था। वर्तमान समस्तीपुर जिला मुख्यालय के समीप मुक्तापुर में रामेश्वर जूट मिल कम्पनी लि. की स्थापना 1926 ई. में हुई थी। 1947 ई. से पूर्व यहाँ कच्चे माल की आपूर्ति बंगाल से की जाती थी। कटिहार, किशनगंज में भी जूट मिलें स्थापित की गई थी। हालांकि जूट मिले भी बंदी के कगार पर है। मिथिला में चावल की मिलें भी औपनिवेशिक काल में बहुतायत में थी। निर्मली, घोघरडीहा, दरभंगा, जयनगर, समस्तीपुर, कटिहार, पूर्णिया आदि जगहों के चावल मिलें हैं लेकिन सीमावर्ती नेपाल में चावल की हॉलर मिलों के कारण चावल उद्योग को धक्का लगा। सरकार ने भी चावल मिलों का प्रश्रय नहीं दिया।

इस तरह स्पष्ट है कि बिहार में मिथिला का क्षेत्र हमेशा से पिछड़ेपन का शिकार रहा है। अत: हमें प्रस्तावित शोध प्रबंध में मिथिला में औपनिवेशिक काल में आर्थिक क्षेत्र में हुई प्रगति या अवनति के विविध आयामों पर नई रौशनी डालनी है और यह जानने का प्रयास करना है कि मिथिलांचल के आर्थिक रूप से पिछड़ेपन में कौन-कौन से कारक थे? 19वीं सदी से पूर्व मिथिला की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक पृष्ठभूमि कैसी थी? ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में इसमें कौन-कौन से परिवर्तन आये। स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् आर्थिक प्रगति में कैसी बाधाएँ आयी और यह क्यों उपेक्षा का शिकार बनकर रह गया?

यह आश्चर्य की बात है कि ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में मिथिला क्षेत्र में जिला उद्योगों की नींव रखी गई वह स्वतंत्रता प्राप्ति के कुल दशकों में मृतप्राय क्यों होने लगी। मिथिला के जमींदारों, पूँजीपतियों, जनप्रतिनिधियों का मिथिलांचल के आर्थिक विकास में क्या योगदान रहा? हमें यह देखना है कि मिथिला की आर्थिक प्रगति के कौन-कौन से प्रयास हुए और नहीं हुए तो इसके पीछे कौन-कौन कारक जिम्मेदार थे?

सदियों से पिछड़ेपन का शिकार रही मिथिलांचल के लोगों द्वारा पृथक मिथिला राज्य की माँग की गूँज कभी-कभी सुनाई पड़ती है। जिसके पीछे भारत के आर्थिक विकास के बावजूद मिथिलांचल का पिछड़ापन है, जिसे यथाशीघ्र समझने और उसके निवारण के लिए सरकार द्वारा सकारात्मक प्रयास करने की आवश्यकता है। ●

तेज रफ्तार की कहर
अलग-अलग चार की मौत

● नीलेश कुमार

बेगूसराय सदा हाईवे 55पर नित्यानंद चौक के पास सोमवार की शाम बोलेरो की चपेट में आने से तीन युवकों की मौत हो गई घटना के बाद बोलेरो चालक वाहन के साथ फरार हो गया घटना के बाद पुलिस गश्ती दल ने बोलेरो का पीछा किया लेकिन बोलेरो चालक तेजी से गाड़ी लेकर भाग निकला घटनास्थल के पास स्थित मंदिर में ठोकर मारने के कारण बोलेरो के बंपर का कुछ भाग टूट कर वहां गिर गया मृतकों की पहचान मंझौल पंचायत 3 वार्ड संख्या 10 पंचमुखी टोला निवासी महेंद्र साहनी के पुत्र राजा साहनी उम्र 26 वर्ष रामचंद्र सहनी के पुत्र राजकुमार सहनी उम्र 40 वर्ष एवं ज्ञान चंद सहनी के पुत्र दीना सहनी उम्र 33 वर्ष के रूप में पहचान हुई जानकारी के अनुसार सोमवार शाम करीब 8:00 बजे बेगूसराय से रोसरा की ओर जा रही बोलेरो तीखे मोड़ पर अनियंत्रित होकर मंदिर से जा टकराई इस दौरान मंदिर के पास मौजूद तीनों युवक बोलेरो की चपेट में आकर गंभीर रूप से जख्मी हो गए तीनों का घर मंदिर के बगल में है परिजनों ने इलाज के लिए उन तीनों को घायल अवस्था में निजी क्लिनिक में भर्ती कराया उनमें से राजकुमार दीना सहनी की मौत रात में ही हो गई जबकि राजा की मौत मंगलवार सुबह करीब 4:00 बजे हुई हादसे में तीनों युवक की मौत हो जाने से लोगों में जबरदस्त आक्रोश भी देखा गया आक्रोशित लोग पोस्टमार्टम के बाद सब आने पर हाइवे को जाम करना चाह रहे थे लेकिन प्रशासनिक प्रयासों से बुद्धिजीवियों जनप्रतिनिधियों की पहल से रोड जाम टला घटनास्थल पर लोगों की भीड़ सुबह से ही उमरी थी परिजनो के बिलाप से माहौल गमगीन हो गया परिजनों को सांत्वना देने के लिए विधान परिषद रजनीश कुमार उषा सहनी वह भाजपा अध्यक्ष जिला राज किशोर सिंह सिंह एबीवीपी के जिला संयोजक कन्हैया कुमार अमृतांशु कुमार बीआरपी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष राज भूषण चौधरी जिला अध्यक्ष जय-जय राम सिंह पंचायत सदस्य मनोज भारती चिंटू सिंह रामप्रवेश साहनी भाजपा के अमरेश कुमार निषाद विकास संघ के प्रदीप साहनी पूर्व जिला पार्षद दिलीप साहनी संजीव सिंह आदि पहुंचे

वहीं दूसरी घटना बेगूसराय शहर के अमरदीप सिनेमा के पास एक ट्रक की चपेट में आने से बाइक सवार एक युवक की मौत हो गई जबकि दूसरा युवक घायल हो गया स्थानीय लोगों की मदद से घायल का इलाज निजी क्लिनिक में कराया गया हादसे के बाद एनएच 31पर घटनास्थल के समीप अफरा-तफरी का माहौल हो गया इसके कारण कुछ देर तक जाम की स्थिति उत्पन्न हो गई घटना की सूचना पर नगर थाना अध्यक्ष अमरेंद्र झा ने मौके पर पहुंच मामले की पड़ताल की और सब को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया थानाध्यक्ष ने बताया कि ध क्का मारने वाले ट्रक को जप्त कर लिया गया है उन्होंने बताया कि मृतक की पहचान फुलवरिया दो पंचायत निवासी मोहम्मद रुस्तम के पुत्र 24 वर्षीय मोहम्मद मोजाद के रूप में की गई है वहीं घायल युवक इसी गांव के मोहम्मद अब्बास का पुत्र मोहम्मद सद्दाम बताया जा रहा है स्थानीय लोगों के अनुसार दोनों युवक बाइक से बेगूसराय से बरौनी की तरफ जा रहे थे इसी दौरान कंटेनर ट्रक की चपेट में दोनों आ गए इससे मोहम्मद मौजाद की मौत घटनास्थल पर हो गई घटना की सूचना मिलते ही मौजाद के परिजनों में कोहराम मच गया परिजनों के अनुसार मोहम्मद मोजाद शव का पोस्टमार्टम करा परिजनों को सौंप दिया गया। ●

दिल्ली की गलियों में नेताओं का हुजूम

● सज्जाद हैदर (वरिष्ठ पत्रकार)

दिल्ली विधानसभा चुनाव 2020 की घोषणा के साथ ही भाजपा में प्रत्याशी तय करने की प्रक्रिया भी तेज हो गई है। सभी विधानसभा क्षेत्रों के संभावित प्रत्याशियों के नाम पर रायशुमारी होगी, जिसमें विस्तारक, प्रभारी, संयोजक के साथ ही विधायक व पार्षद भी शामिल होंगे, जोकि सभी उम्मीदवारों को लेकर लिखित राय देंगे। उनकी राय एक पेटी में बंद की जाएगी, जिसके आधार पर केंद्रीय नेतृत्व अंतिम फैसला लेगा। प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में एक साथ कई नेता टिकट की दौड़ में शामिल हैं। इनमें से योग्य उम्मीदवार के चयन और इस काम में पारदर्शिता लाने के लिए इस बार यह तरीका अपनाया गया है। सभी जिलों में इसके लिए कार्य शुरू हो गया है। बैठक में प्रदेश के नेता पर्यवेक्षक के तौर पर शामिल होंगे। उनकी उपस्थिति में संबंधित जिला में आने वाले सभी विधानसभा क्षेत्रों के प्रत्याशियों के नाम पर कार्यकर्ता राय देंगे। इस रायशुमारी में विधानसभा क्षेत्र में तैनात किए गए विस्तारक, प्रभारी व संयोजक के साथ ही, विधानसभा में मंडलों के अध्यक्ष, वर्ष 2015 विधानसभा चुनाव का प्रत्याशी, पार्षद व पूर्व पार्षद (वर्ष 2012 में चुनाव जीतने वाला) तथा जिला अध्यक्ष प्रदेश, मोर्चे व जिले के पदाधिकारी शामिल होंगे। भाजपा नेताओं ने बताया कि इस प्रक्रिया से योग्य उम्मीदवारों को मैदान में उतारने में मदद मिलेगी। इसके साथ ही विवाद की आशंका भी नहीं रहेगी। विधानसभा चुनाव में किस्मत आजमाने को लेकर हर सीट पर दावेदारों में घमासान मचा हुआ है। ऐसे में शीर्ष नेतृत्व को आशंका है कि प्रत्याशियों के नाम घोषित किए जाने के बाद कुछ लोग गुटबाजी को हवा दे सकते हैं। ऐसे ही नेताओं को संतुष्ट करने और जिताऊ प्रत्याशियों का चयन करने के लिए पार्टी यह रायशुमारी करने जा रही है। सूत्रों के मुताबिक सियासी योद्धाओं का यह भी मानना है कि इस प्रक्रिया से जहां प्रत्याशियों के चयन में पारदर्शिता आएगी। वहीं चुनाव में योग्य व सक्षम उम्मीदवार के चयन में भी आसानी रहेगी। भाजपा, कांग्रेस और आप सभी पार्टियों में खींचतान तेज हो गई है। टिकट के लिए आवेदन करने वालों का तांता लगा रहा। पार्टी कार्यकर्ताओं और समर्थकों के साथ खासी संख्या में लोगों ने पार्टी प्रदेश अध्यक्षों से मुलाकात शुरू कर दी है जिससे कि दावेदारी जतानी की जंग आरम्भ हो गई है। सभी 70 विधानसभा क्षेत्रों में हर सीट पर संभावित दावेदारों की लंबी कतार है। सभी पार्टियाँ जीतने वाले मजबूत व पार्टी के निष्ठावान कार्यकर्ताओं को आगामी चुनाव में मैदान में उतारने की रूप रेखा की ओर आगे बढ़ रही हैं। कुछ बड़े नेताओं के वंशज भी इस चुनाव में अपनी किस्मत आजमाने की फिराक में लगे हुए हैं। अपनी खोई हुई विरासत को पुनः पाने की भी कवायद तेज हो गई है। यह प्रक्रिया सभी खेमों में बखूबी दिखाई दे रही है। प्रत्येक बड़ चेहरे के पीछे एक छोटा चेहरा जरूर खड़ा हुआ है। जिसको इस बार के चुनाव में टिकट का इन्तेजार है। इसमें सांसद विधायक से लेकर मुख्यमंत्री के पुत्र गण भी पूरी तरह से शामिल हैं जोकि पूरी ताकत से लगे हुए हैं और अपनी किस्मत आजमाना चाह रहे हैं। जानकारों की माने तो इस बार मुख्यमंत्री के पुत्र गण भी अपनी किस्मत आजमाना चा रहे हैं। जोकि किसी तरह से विधानसभा में पहुँचना चाह रहे हैं। पुत्रो के साथ–साथ कुछ नेताओं के छोटे भाई भी इस बार टिकट की जुगत में लगे हुए है। इस बार कुछ नई सियासी पार्टियां भी दिल्ली के चुनाव में अपना दम दिखाने की जोर आजमाइश में लगी हुई है। हरियाणा में भाजपा की सहयोगी जननायक जनता पार्टी ने दिल्ली विधानसभा चुनाव में ताल ठोंकने का निर्णय लिया है। इसके लिए वह करीब एक दर्जन विधानसभा सीटों पर सर्वे करा रही है। इसी सप्ताह सर्वे पूरा हो जाएगा। जजपा यह फीडबैक जुटाने में लगी है कि किन सीटों पर उसकी स्थिति मजबूत हो सकती है और किन सीटों पर मेहनत करनी पड़ेगी। दिल्ली में जजपा अकेले ताल ठोंकेगी या भाजपा के साथ गठबंधन करेगी, इसका फैसला पार्टी ने रणनीतिकारों पर छोड़ दिया है। सूत्रों की मानें तो जजपा खुद चाहती है कि दिल्ली विस चुनाव में भाजपा उसके साथ गठबंधन करे, जिसका फायदा दोनों दलों को मिल सकता है। जातीय समीकरणों को साधने का कार्य तेजी के साथ आरम्भ हो गया है। जजपा को दिल्ली में जाट बाहुल्य सीटों पर अधिक समर्थन मिलने की आस है। नजफगढ़, मुंडका, बवाना, नरेला, बिजवासन, मटियाला, पालम, महिपालपुर, महरौली, नांगलोई, बदरपुर, देवली और चकरपुर जैसी सीटें शामिल हैं, जहां दुष्यंत चौटाला को लगता है कि उन्हें बढ़त मिल सकती है। इसी के साथ लालू की पार्टी और नितीश की पार्टी भी दिल्ली की राजनीति में अपना दम–खम दिखाएगी। आचार संहिता लगते ही चुनाव आयोग भी सतर्क हो गया है। इसके बाद होर्डिंग्स और पोस्टरों के खिलाफ कार्रवाई शुरू कर दी गई है। साथ ही दिल्ली का सियासी पारा अपने चरम पर पहुँचता दिखाई दे रहा है। सभी नेता अपनी–अपनी जुगत में लगे हुए हैं। अब दिलचस्प बात यह है कि दिल्ली की जनता क्या फैसला सुनाती है। क्योंकि, इस बार का दिल्ली चुनाव कुछ खास ही है क्योंकि, इस बार कई नई राजनीतिक पार्टियों ने अपने आपको दिल्ली के चुनाव में उतार दिया है जिससे कि मतों का उथल–पुथल होना स्वाभाविक है। जिससे कि अभी कुछ कहना उचित नहीं होगा। क्योंकि, झारखण्ड और हरियाणा चुनाव के बाद अब देश के राजनीतिक समीकरण कुछ अलग दिशा में चल रहे हैं। दिल्ली की बात करें तो दिल्ली देश की राजधानी होने के कारण मिनी इण्डिया के रूप में जानी जाती है क्योंकि, दिल्ली में पूरा भारत निवास करता है। जिसमें युवा मतदाताओं की संख्या सबसे अधिक है। जोकि दिल्ली की सरकार के भाग्य का फैसला करेगा। कि क्या होता है। क्योंकि इस बार मतों का विभाजन बड़े पैमाने पर होगा। क्योंकि, भाजपा का अपना जनाधार है। साथ ही केन्द्र में भाजपा की सरकार है। अगर दिल्ली की बात करते हैं तो दिल्ली में आम आदमी पार्टी सत्ता में है। जोकि अपने कार्यो के आधार पर जनता के बीच जा रही है। लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि कांग्रेस का मत जब चुनाव में सामने आएगा तो मामला त्रिकोणीय होना तय है। इसके बाद बाकी नीतीश और लालू की पार्टी क्या फर्क डालती है। यह देखना होगा। इसलिए चुनाव की स्थिति काफी गंभीर हो जाती है। जिससे कि इस बार के चुनाव में कुछ भी नहीं कहा जा सकता कि इस बार का चुनाव किस करवट लेगा। ●

बिहार में वर्दी का आतंक

● अनिल कुमार मिश्र

बिहार राज्य में थानाध्यक्ष के आतंक तथा वर्दी में गुण्ड़ागर्दी इनके नंगा नृत्य को देखना है तो महाशय आप भी बिहार राज्य के औरंगाबाद जिले का अम्बा थाना क्षेत्र मे आ जाये, फिर देखेंगे की इनके आतंक, पद तथा प्रदत शक्ति के सामने विभागीय व वरीय पदाधिकारियो का कद कितना छोटा पड़ चुका है और इनके काली करतूतों के सामने किस कदर वरीय पदाधिकारी घुटने टेक चूके हैं। बिहार मे अगर सब कुछ थानेदार ही हैं और इनके आंतक व इनके तांड़व के सामने सभी वरीय विभागीय एवं प्रशासनिक पदाधिकारी घुटना टेक ही चूके हैं तथा किसी के भी आदेश को थानेदार नही मानते हो तो, बिहार के माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को चाहिए कि थानाध्यक्ष के अलावे बिहार मे इनसे वरीय तमाम सभी पदाधिकारियो के सभी पद को समाप्त कर दे या ऐसे भ्रष्ट थानाध्यक्षो को जेल के सलाखो के पीछे डालकर इन्हे सबक सिखाने के लिए ऐसी कड़ी से कड़ी सजा दिलाये कि ऐसी घटनाओ की पुनरावृति का दु:साहस करने के पहले किसी भी थानाध्यक्ष का रूह काँप जाये और फिर कोई भी थानाध्यक्ष ऐसी घटनाओ की पुनरावृति का दु:साहस नहीं कर पायें।

ज्ञात हो कि विभिन्न प्रदेशों से औरंगाबाद जिले के अम्बा थाना क्षेत्र होकर भग्वान भाष्कर के नगरी सौरतीर्थ देव पहुँचने वाले श्रद्धालुओं से सरकार द्वारा निर्धारित बस भाड़ा से दोगुना भाड़े की वसूली, विरोध करने पर यात्रियो के साथ दुर्व्यवहार तथा गरीब टेम्पो चालको से अम्बा थाना क्षेत्र मे रंगदारी की वसूली तथा बस एजेंट एवं भोलेदानी के बस मालिक द्वारा मारपीट का शिकायत एक समाज सेवी सह पत्रकार अनिल कुमार मिश्र ने सीओ कुटुम्बा से किया तथा जाँचोपरांत घटनाओं की पुनरावृति पर रोक लगाने की माँग किया। बस एजेंट व मालिको के विरूद्ध उठ रहे आवाज को दफन करने हेतू बस एजेंट कईला उर्फ सुधीर पासवान तथा क्षेत्रीय बस मालिक ने पत्रकार अनिल कुमार को अपना टारगेट बनाया और पत्रकार से लड़का का रोजगार सृजनक्षयोजना के तहत बैंक से लिए गये टेम्पो से भी रंगदारी की माँग किया गया तथा माँग की गयी रंगदारी को नहीं देने पर टेम्पो के ड्राईवर तथा लड़का विकाश मिश्र को पिटा गया। भोलेदानी बस के मालिक अशोक सिंह एवं बस एजेंट कईला उर्फ सुधीर पासवान के आतंक से पत्रकार अनिल कुमार मिश्र के टेम्पू को चलाना कोई भी टेम्पू ड्राईवर बंद कर दिया और टेम्पो सड़क के किनारे लवारिश हालत मे खड़ा रहने लगा तथा कई बार लड़का व परिवार के साथ मारपीट व बदसलूकी बस मालिक एवं एजेंट ने किया।

अंतत: सत्ता पक्ष के नेताओ का हस्ताक्षेप पर एक पीड़ित पत्रकार की शिकायत की जाँच सीओ कुटुम्बा द्वारा समाजसेवियो के बीच अम्बा से देव आने-जाने वाले यात्रियो के बीच किया गया और पत्रकार के शिकायत को भी सीओ कुटुम्बा ने सत्य पाया। सीओ ने जिला पदाधिकारी औरंगाबाद को जाँच प्रतिवेदन भेजते हुए जिला पदाधिकारी औरंगाबाद से मार्ग दर्शन मांगा तथा घटनाओ की पुनरावृति पर रोक लगाने हेतू थानाध्यक्ष अम्बा को पत्र लिखा तथा जाँच प्रतिवेदन का प्रति पुलिस अधीक्षक, एसडीओ, जिला परिवहन पदाधिकारी, औरंगाबाद को कार्यार्थ भेजा। जिला पदाधिकारी ने सीओ के जाँच प्रतिवेदन की जाँच एसडीओ एवं एसपी को दिया तथा जाँचोपरांत कार्रवाई का आदेश दिया। सदर अनुमंडल पदाधिकारी औरंगाबाद ने सीओ कुटुम्बा एवं थानाध्यक्ष अम्बा को पत्र लिखकर कार्रवाई करने का आदेश दिया ही तथा एसडीओ के आदेश के आलोक मे बस एजेंट के विरूद्ध कार्रवाई का आदेश दिया, थानाध्यक्ष ने कार्रवाई तो नही किया, किन्तु बस मालिक का प्रभाव में बस एजेंट के जमानत कईला उर्फ सुधीर पासवान को जमानत के नाम पर सादे कागज पर हस्ताक्षर कराकर पत्रकार और इनके बेटे तथा भाई पर एस.सी. एस.टी. एक्ट का मुकदमा कर डाला। कथित केश के सूचक के साथ बिना किसी घटना का बदन पर जख्म की प्रतिवेदन बनवा डाला एवं अनैतिक दबाव को नहीं मानने पर केश के सूचक व बस मालिक ने पत्रकार को बस से कुचलकर मार डालने का प्रयास किया गया, वही इस मामले को थानाध्यक्ष द्वारा एफआईआर तक नहीं लिया गया। वरीय पदाधिकारियो का हस्ताक्षेप पर एक माह बाद अम्बा थाना मे प्राथमिकी, अम्बा थाना कांड संख्या-86/17 दर्ज किया गया और प्राथमिकी मे 307 के 308 धारा के अंतर्गत दर्ज किया गया। केश की आड़ मे पत्रकार के विरूद्ध प्रशासनिक दमन का खेल हेतु कार्रवाई प्रारंभ हुआ तथा पीड़ितों द्वारा सभी प्रशासनिक व पुलिस अधिकारियो के विरूद्ध अम्बा थाना क्षेत्र का दर्ज मुकदमे तथा थाना के दलाल व विचौलिया के विरूद्ध दर्ज मुकदमे को वापस लेने का भार भी पत्रकार को सौपा गया। अन्यथा एस.सी./एस.टी. एक्ट में पत्रकार एवं इनके परिवार को जेल भेज देने की धमकी भी दिया गया। पीड़ित पत्रकार ने अपने आपको संयम में रखते हुए बस मालिक से समझौता का मार्ग चूना तथा स्थानीय विभिन्न राजनीतिक दलालों के सहयोग से न्याय की माँग आलाधिकारियो से किया। जाँचोपरांत मुकदमा में थाना से जमानत भी मिल गया और अनैतिक दबाव को नहीं मानने पर एस.सी. एस.टी. के तहत दर्ज झूठे मुकदमा को सत्य करार देते हुए न्यायालय में चार्जसीट समर्पित कर दिया गया तथा पत्रकार की हत्या की कोशिश मे उपयोग किये गये। बस के बिन्दु पर बिना जाँच किये तथा बस का कागजात लाये बिना ही अधुरे केस देने का चार्जसीट को न्यायालय के समक्ष समर्पित कर दिया है, जिसमें पीड़ित पत्रकार को प्राप्त नोटिस पर सुनवाई प्रारंभ है तथा न्यायविद ने अधुरे अनुसंधान को पुन: जाँच का अनुरोध न्यायालय से किया है, ताकि पीड़ित पत्रकार को न्याय मिल सके। एस.सी. एस.टी. गैर अनुसूचित जाति द्वारा दुरूपयोग के मामले मे पीड़ित पत्रकार ने माननीय

उच्च न्यायालय के समझ अपनी बातों को रखकर जहाँ एक ओर एस.सी/एस.टी. एक्ट के तहत मुकदमा अम्बा थाना कांड़ संख्या-41/2017 के विरूद्ध क्रिमिनल अपील लाकर एस.सी./एस.टी. एक्ट में एंटीसेप्रेट्री जमानत प्राप्त कर चूका है। वहीं एस.सी./एस.टी. परिवार के रक्षा व सुरक्षा हेतू सरकार के निर्देश पर औरंगाबाद जिले में गठित अनुश्रवण समिति के सदस्य सह न्यायविद मधेश्वर पासवान ने गैर अनुसूचित जाति द्वारा पत्रकार के विरूद्ध एस.सी/ एस.टी. एक्ट का दुरूपयोग मामले की जाँच पुनः एस.पी. से करने तथा मामले की जाँच निगरानी विभाग से कराकर एक्ट का दुरूपयोग पर रोक लगाने हेतू जाँचोपराँत कार्रवाई की माँग प्रेस विज्ञप्ति जारी कर समाचार के माध्यम से की है। वही एक्ट के तहत सरकार से मिलने वाले कमीशन में दलाली खाने वालो के लिए न्यायविद मधेश्वर पासवान का जनहित में आवाज नगवार गुजर रहा है। श्री पासवान ने कहा सभी को स्वतंत्र जीवन जीने का संविधान में मौलिक अधिकार है। हम नहीं चाहते हैं कि गैर अनुसूचित जाति के लोग एक्ट का दुरूपयोग कर समाज को बदनाम करे। समाज के प्रति नफरत फैलाये, जब एक देश व एक कानून पर संवाददाता ने मनतब्य जानना चाहा तो श्री पासवान ने कहा कि गैर बरबरी को पाटने तथा कमजोर वर्ग की रक्षा व सुरक्षा के लिए अलग कानून की जरुरत है। कानून का दुरुपयोग किसी भी स्तर पर न हो, यह सभी की जिम्मेवारी है। किन्तु कुछ लोग अपनी जिम्मेवारी एवं जवाबदेही को पैसे की लालच मे भूल चूके हैं।

यह सर्वविदित हैं कि प्रतिशोध, बदले व दुराग्रह की भावना से ग्रस्त तथा प्रशासनिकवाद के तहत अम्बा थाना के क्रमशः थानाध्यक्षो द्वारा पत्रकार अनिल कुमार मिश्र एवं इनके परिवार, नाबालीक बच्चों के साथ दमन की कार्रवाई और खेल प्रारंभ है। वही पत्रकार का कलम उद्देश्यों से भटक चुके पदाधिकिरियों की काली करतूतों के विरूद्ध रूकने का नाम ही नही ले रहा है तथा पत्रकार द्वारा प्रकाशित संवाद व शिकायत उद्देश्यों से भटक चुके अधिकारियों एवं इनके संरक्षकों की मनमानी, कार्यो में बाधा उत्पन्न कर रहा है। फलस्वरूप वर्तमान थानाध्यक्ष अम्बा थाना, विरेन्द्र पासवान के टारगेट पर पत्रकार एवं इनके परिवार हैं। थानाध्यक्ष अम्बा थाना विरेन्द्र पासवान ने प्रतिशोध मे पद, प्रदत शक्ति का दुरूपयोग करते हुए गैरकानूनी तरीकों से पत्रकार के बेटे अमित कुमार मिश्र का रोजगार सृजन योजना के तहत बैंक से कर्य पर लिए गये टेम्पो को 04 माह से अम्बा थाना मे खड़ा कर दिया है। टेम्पो पर आरोप है कि वह नो पार्किंग जोन मे खड़ा था। थाना की बात ही छोड़े, जब जिले मे कहीं भी पार्किंग जोन नही है तो पत्रकार का व्यवसायिक वाहन टेम्पो नो पार्किंग जोन में कैसे हो सकता है। अपराधकर्मियो के बचाव मे थानाध्यक्ष अम्बा थाना द्वारा वरीय पदाधिकारी के दर्जनों आदेश की अनदेखी व अवहेलना, एसडीओ एवं एसडीपीओ का स्पष्टीकरण की अनदेखी तथा न्याय के बदले वर्तमान थानाध्यक्ष अम्बा थाना द्वारा पत्रकार एवं इनके परिवार का दमन के विरूद्ध मुख्य न्यायिक दंड़ाधिकारी औरंगाबाद के न्यायालय मे परिवाद पत्र संख्या-653/19 दाखिल किया है, जिसमें न्यायालय द्वारा एस.पी. से प्रतिवेदन की माँग किया गया। अभियुक्त द्वारा मुकदमे में स्पष्टीकरण दिया गया है, जिसके बाद न्यायालय द्वारा मामले को संज्ञान के बिन्दुओं पर गवाहों कि गवाही हेतु 03.12.2019 को रखा गया। प्रतिशोध मे अभियुक्त ने 22/11/2019 से 30/11/2019 तक थानाध्यक्ष द्वारा संरक्षित अपराधकर्मियों को पत्रकार के घर मे घुसकार पूरे परिवार को रौंदवा डाला तथा इनके परिवार के बीच अभी तक 05 अपराधीक घटनाओं को अंजाम दिलाया गया है।

यह सर्वविदित सत्य हैं कि मुकदमे से बचने तथा अन्य अभियुक्तो एवं अपराधकर्मियों के बचाव में थानाध्यक्ष अम्बा विरेन्द्र पासवान ने सोशल मीडिया से औरंगाबाद जिला के केवल सच पत्रिका के संवाददाता सह एटीएच न्यूज 11 के ब्यूरो चीफ को सोशल मीडिया से फेसबुक पर 22/11/2019 को बेटी को अनेकों अश्लील गाली दिलाया तथा घर में घुसकर बम मार देने का धमकी भी दिलाया तथा मैसेज को किसी को भी दिखाने तथा स्वयं मिलकर बात नहीं करने पर बेटी का इज्जत लूट लेने, घर मे घुसकर बम मार देने तथा हत्या कर देने की धमकी दिलाया गया है। अनैतिक दबाव को नहीं मानने तथा मैसेज को मीडिया और प्रशासन के बीच देकर धमकी देने वाले के विरूद्ध कार्रवाई की माँग किया गया। फलस्वरूप 24/11/2019 को अपराह्ण 01 बजकर 46 मीनट पर थानाध्यक्ष अम्बा द्वारा संरक्षित गाँव के अलावे अन्य अपराधकर्मियों ने 20-25 की संख्या मे पत्रकार के घर को घेर लिया। घर से बाहर निकलने के लिए पत्रकार को उत्तेजक व अश्लील गाली देने लगे। घर से बाहर नहीं निकलने पर बम मार देने तथा हत्या कर देने की धमकी भी दिया गया। घटना कि त्वरीत सूचना पत्रकार द्वारा एस.पी. औरंगाबाद को दिया गया। एस.पी. द्वारा जानकरी लेते हुए कहा गया कि मैं एस.एच.ओ. को बोलता हूं, अब से एस.एच.ओ. फोन उठायेगा और कार्रवाई भी करेगा। जब पत्रकार ने थानाध्यक्ष को फोन किया तो थानाध्यक्ष ने फोन को नहीं उठाया, परन्तु निजी नंबर से थानाध्यक्ष ने बात किया और कहा कि देखवा लेते हैं। फोन के बाद सभी अपराधकर्मी भाग निकले। भीमसेन पाठक, मुरारी मिश्र एव त्रिपुरारी मिश्र वैगरह को थाना बुलाया गया और थानाध्यक्ष ने घटना की सभी जानकारी को हमलवारों को दे दिया गया। एस.पी. के आदेश के 20 घंटे बाद तक थानाध्यक्ष अम्बा थाना विरेन्द्र पासवान तथा अम्बा थाना का कोई भी पुलिस पदाधिकारी पत्रकार की सूद लेने नहीं आये तथा थानाध्यक्ष ने 25/11/2019 को सुबह लगभग 08 बजे पत्रकार अनिल कुमार मिश्र के घर हमलवारो को भेजकर पूरे परिवार को रौंदवा डाला और हमलेवार पत्रकार को मारने हेतू घरो में खोज रहे थे, यहाँ तक की ट्रंक को भी खोलकर देखा और पत्रकार के घर आने-जाने वाले रास्ते पर गड़हा को भी काट दिया। हमले की घटना में घायल तथा जीवन और मौत से जूझ रहे पत्रकार के बेटी पिंकी का ईलाज कराना भी थानाध्यक्ष अम्बा थाना विरेन्द्र पासवान ने मुनासिब नहीं समझा। थानाध्यक्ष अम्बा के उकसावे एवं बहकावे में थानाध्यक्ष द्वारा संरक्षित हमलवारो ने 22 नवम्बर से 30 नवम्बर तक 05 से भी अधिक अपराधिक घटनाओं का अंजाम दिया गया है और अनैतिक दबाव बनाने हेतू थानाध्यक्ष अम्बा थाना घटनाओं का अंजाम दिलाते आ रहे हैं। थानाध्यक्ष का अनैतिक दबाव को नहीं मानने पर थानाध्यक्ष ने हमलवारों में से भीम सेन पाडक को आगे कर 04 नाबालिग बच्चे, एक गाँव के ईलेक्ट्रॉनिक मिस्त्री हमलवारो के हमले मे घायल महिला, पुरूष समेत 13 लोगों के विरुद्ध अम्बा थाना कांड़ संख्या-106/19 दर्ज किया गया है। जिसमें केश के सूचक भीमसेन पाठक के पुतोह सपना भारती देवी के साथ छेड़-छाड़ करने तथा लज्जा भंग करने, पुतोह के हल्ला पर केश के सूचक भीमसेन पाठक की पत्नी को पहुँचने पर पत्रकार द्वारा इनके पत्नि का गहना छिनकर भाग जाने, पुनः केश के सूचक के घरो में घूसकर सूचक को गला दबाकर हत्या का प्रयास करने तथा बेटे और परिवार के साथ मारपीट करने का आरोप है।

सबसे आश्चर्य की बात तो यह हैं कि पत्रकार अनिल कुमार मिश्र को जान का खतरा है और जिस तरह से उनके घर में घुसकर परिवार को मारपीट की जा रही है, इससे भय का माहौल बना हुआ है तो सिर्फ वर्दी के आतंक के कारण। श्री मिश्र प्रत्येक दिन न्याय व सुरक्षा के लिए भागे मारे फिर रहे हैं, बस इस उम्मीद से की आखिर न्याय कब मिलेगा? ●

दाखिल खारिज कराना है तो देने होंगे रूपये

● गुड्डू कुमार सिंह

इन दिनों गडहनी प्रखंड के कार्यालय में बिचौलियों के माध्यम से कोई भी कार्य होते हैं। प्रखंड मुख्यालय पर किसी भी महिला या पुरुष को देखते ही यह उसे धर लेते हैं और जल्द काम कराने को लेकर नसीहत देने लगते हैं और लाभुक उसके झांसे में आकर फंस जाते हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना, वृद्धा पेंशन, जमीन की दाखिल-खारिज शौचालय निर्माण आदि कोई भी काम को कराने के लिए बिचौलिए लगाए गए हैं।उएक तरफ सरकार ने प्रधानमंत्री आवास योजना मनरेगा शिक्षा संबंधित आदि योजनाओं को सही तरीके से संचालन के लिए आवास सहायक रोजगार सेवक विकास मित्र जैसे कई लोगों को बहाल किया लेकिन जैसे-जैसे सहायक व सेवकों की नियुक्ति होती गई वैसे-वैसे घूस की रकम और तरीके में इजाफा होता गया। आज स्थिति यह है कि अवैध वसूली के लिए इन सहायकों के साथ कई बिचौलिए भी उगाही में लगे हुए हैं। लाभुक जिस बैंक में पैसा निकासी करने जाता है वहां पहले से ही उनकी उपस्थित रहती हैं और पैसा निकालते ही काम करवाने की बात कर दस से बीस हजार ले लेते हैं। अभी हाल ही के दिनों में एक व्यक्ति को दो बार पीएम आवास पास कराएं करा कर पैसे की निकासी की। शिकायत वीडियो से की गई थी तब आनन-फानन में दलाल शिकायतों को ही किसी तरह पैसे के लालच देकर मामले को रफा-दफा कर दिया। अभी भी एक-एक पंचायत में दो-दो घर आवास की सुविधा लेने वालों की संख्या अनगिनत है। लेकिन कारण है कि इसकी जांच कौन करेगा यह भी विदित हो कि प्रखंड में 2008 के पहले के इंदिरा आवास का कोई अभिलेख मौजूद नहीं है उसे जला दिया गया है, लेकिन 2008 में इंदिरा आवास का लाभ लेने वालों को प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ दे दिया गया है।

☞ **भ्रष्टाचार मामले में पूर्व वीडीओ जा चुके हैं जेल :-** जाहिर हो कि इस प्रखंड में पूर्व में इंदिरा आवास योजना में गड़बड़ी को लेकर तत्कालीन वीडियो के ऊपर प्रश्न को गठित हो चुका है और जेल भी जाना पड़ा है बावजूद यही की स्थिति में सुधार के लक्षण नहीं दिखते हैं। एक मोटेशन कराने में 5 से 7000 रू० की मांग कर्मचारियों के द्वारा की जाती है जो पैसे देते हैं उनका काम जल्द निपटा दिया जाता है और जो नहीं देते हैं उनको कोई ना कोई कागज लगाकर दौड़ा जाता है। इस बात की शिकायत कुछ दिन पहले गांव पंचायत के मुखिया कलावती देवी ने की थी और स्थानीय विधायक डीएम व डीडीसी को आवेदन देकर जांच की मांग की थी। वीडीओ क्या कहते हैं मुझे इस बारे में कोई जानकारी नहीं है और ना ही किसी लाभुक ने मुझसे लिखित रूप में शिकायत की है अगर कोई इस संबंध में लिखित आवेदन देकर शिकायत करता है तो जांच करा कर दोषियों पर कार्रवाई की जाएगी। तेज बहादुर सुमन वीडियो कहते हैं काउप पंचायत कि 2 महिलाओं ने एक व्यक्ति पर आरोप लगाया था कि प्रधानमंत्री आवास योजना का पैसा बैंक से निकालते ही मुझ से 10000 ले लिया गया, लेकिन बाद में दबाव बनाकर तथा धमकाकर उससे आवेदन वापस लेकर मुंह बंद कर दिया गया। ●

दो वर्षों से काट रहे ब्लॉक का चक्कर
लेकिन नहीं मिला वृद्धा पेंशन

सरकार के योजनाओं का लाभ लेने के लिये लाभुक प्रखण्ड का चक्कर काट काट परेशान हो रहे फिर भी प्रखण्ड के कर्मचारियों को दया नही आ रही। युवा परेशान तो हैं ही बुजुर्ग को भी नही छोडा जा रहा है। ऐसा ही एक मामला बृद्ब जन विधवा और अन्य पेंशन योजनाओं का प्रकाश मे आया है। प्रखंड क्षेत्र के बराप निवासी रिंकू कुवँर, बसौरी निवासी पारस सिंह, बिन्देसरी सिंह द्वारा बताया गया कि हमलोग दो वर्षों से लगातार ब्लॉक का चक्कर काट रहे है लेकिन पेंशन नसीब नहीं हुआ। ब्लॉक में जिसके पास जाओ कोई सही बात बताने को तैयार नही।पेंशन देखने वाले स्टाफ से पूछने जाओ तो बताते है कि फिर से फॉर्म भरो वही बीडीओ साहेब से पूछो तो उन्हें कुछ पता ही नही है और बोलते है कि ठीक है देख लेंगे घर जाइये। महिला रिंकू कुंअर को जब प्रखण्ड कार्यालय अपनी विधवा पेंशन की जानकारी लेने पहुंची तो स्टाफ पंकज कुमार द्वारा कह कर टरका दिया गया कि फिर से फार्म भरो जबकि महिला दो साल पहले ही अपलाई कर चुकी है। कार्यालय द्वारा साइन मोहर किया हुआ रिसिभिंग लेकर दर दर भटक रही है कोई सुनने वाला नही। सबसे बडी बात तो ए है कि गडहनी प्रखण्ड का शिकायत आये दिन अखबार मे छप रही फिर भी उपरी अधिकारी का ध्यान इस ओर नही जा रहा है। इससे तो साफ जाहिर होता है कि सब नीचे से उपर तक के अधिकारी मिले हुए हैं।

रजिस्ट्रेशन के नाम पर अवैध वसूली

● गुड्डू कुमार सिंह

भोजपुर राम दाहिन मिश्र उच्च विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री निर्मल राम बच्चे के साथ छात्रवृत्ति पोशाक राशि को लेकर झड़प करते नजर आ रहे हैं। देखें इस पूरे वीडियो को बच्चों द्वारा जब कहा गया कि हम आरके सिंह के पास जाएंगे तो प्रधानाध्यापक कहते हैं कि, 'जहां जाना है जाओ, जैसे लगता है प्रधानाध्यापक महोदय को ऊपरी अधिकारियों से डर ही नहीं है'। शायद इसीलिए बेफिक्र होकर बच्चो के साथ तू-तू, मैं-मैं कर रहे हैं। इस तरह का दुर्व्यवहार करना एक प्रधानाध्यापक को शोभा देता है? बताते चले कि भोजपुर बिहार बोर्ड के इंटर 11वी की फॉर्म भरने वाले छात्रों के लिए रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया आज से शुरू कर दी है।पर आरा के गड़हनी प्रखंड के राम दहिन स्कूल में अवैध वसूली का मामला सामने आया है। प्राप्त सूचना के अनुसार राम दहिन स्कूल में 11वी कक्षाओं के छात्रों से रजिस्ट्रेशन के नाम पर निधारित शुल्क से 30 रुपया अधिक राशि वसूलने का मामला सामने आया है।जिसे लेकर छात्रों के बीच आक्रोश है।

आपको बताते चले कि 11वी कक्षा में बिहार बोर्ड ने 370 रुपये और स्वतंत्र कोटि के विद्यार्थियों को कुल 670 रुपये शुल्क देने के लिए निधारित किया है। लेकिन छात्रों से मनमाने तरीके से अवैध राशी वसूली की जा रही है। अवैध राशि के रूप में हरेक छात्रों से 30 से 50 रूपए अवैध तरीके से ली जा रही है। विद्यालय के प्रधानाध्यापक के अनुसार ये शुल्क अवैध नहीं वसूली जा रही है बल्कि फॉर्म ऑनलाइन और आने जाने का किराया छात्रों से ही लिया जाया जा रहा है। आपको बताते चले कि बिहार सरकार कि तरफ से बाकी पैसा छात्र कोस से मेनटेन करना है ऐसा सरकार का आदेश है। आने जाने का किराया एवं अन्य खर्च स्कूल मैनेजमेंट को सरकार द्वारा दी जाती है इसके बावजूद स्कूल में माध्यमिक शिक्षक द्वारा गलत तरीके से वसूली की जाती है प्रधानाध्यापक द्वारा स्थानीय छात्रों से मनमाने ढंग से अवैध शुल्क वसूली जा रही है। बिहार सरकार ने अवैध राशि वसूली को रोकने के लिए रसीद किभी व्यवस्था कि है पर भोजपुर के कई स्कूल बिना रसीद ही रजिस्ट्रेशन के नाम पर अवैध वसूली कर रहे है और रसीद नाम पर फॉर्म ऑनलाइन और आनेजाने का किराया का हवाला दे रही है। वहीं ज्यादा लिया गया पैसा नही लौटाए जाने पर छात्रों में आक्रोश दिख रहा है। छात्रों ने कहा कि हमारी राशि नही लौटाई जाएगी तो रोड जाम कर आंदोलन करेंगे।छात्रों ने बताया कि स्कूल प्रतिदिन जाते है लेकिन कोई शिक्षक हमे नही पढ़ाते है। स्कूल में शिक्षक और प्रधानाचार्य भी समय से नहीं आते है।इसकी शिकायत प्रधानाचार्य से करने पर प्रधानाचार्य बच्चों को धमकाते और पीटते है। अब आगे देखना है कि जिला के अधिकारी ऐसे शिक्षक और प्रधानाध्यापक पर क्या करवाई करते है। ●

खबर प्रकाशित होने के बावजूद जमादार और चौकीदार पर नहीं हुई कार्रवाई

भोजपुर-अगिआंव थाना द्वारा शराब मामले मे कुछ दिन पहले एक गाडी जप्त की गई थी जो अब गडहनी थाने के काम आ रही है। जप्त गाड़ी से ही आज कल पेट्रोलिंग किया जा रहा है।आरा सासाराम मेन रोड़ पर घुम रही गाडी की तस्वीर भी लोगों ने खीच रखी और हवा फैला दी। कहा जा रहा है कि प्रशासन अपनी फायदे के लिए लोगो का शोषण कर रही है। बता दें कि जहाँ तक कानुन का नियमावली कहता है कि कोई भी वाहन जप्त होने के बाद बिना न्यायालय के आदेश के उसे प्रयोग मे नही लाया जा सकता है। लेकिन गड़हनी थाना नियमो को ताख पर रख अपनी मनमौजी चलाता है।गाडी मे जमादार के साथ चौकीदार को देखा गया।गडहनी थाने के अन्तर्गत कई चौकीदार है लेकिन हर जगह एक ही चौकीदार थाना के साथ घुमता पाया जाता है इसका भी अपना अलग ही राज छिपा है।जो जांच का बिषय की जब्त गाड़ी का उपयोग क्यों और किनके आदेश पर ले घूम रहे है जमादार और चौकीदार।

रिपोर्ट :- गुड्डू कुमार सिंह

गुरू ने किया शिष्या का बलात्कार

भोजपुर जिले के गड़हनी प्रखंड अंतर्गत तेनदूनी प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत प्रभारी प्रधानाध्यापक सह दैनिक जागरण के गड़हनी प्रखंड संवाददाता जगदीशपुर थाना क्षेत्र के तेंदुनी गाँव के एक सरकारी विद्यालय में पदस्थापित अरुण कुमार यादव नाम का एक देहसी दरिंदा एक 6 वर्षीय छात्रा के साथ दुष्कर्म का आरोपी निकला। बता दें की पूरे प्रखंड क्षेत्र में इसका चर्चा जोरों पर हैं। एक देश का चौथा स्तम्भ कहे जाने वाला पत्रकार एवं शिक्षक अपने कर्तव्य का दायित्व निर्वाहन करने के बजाए स्कूल चलने के दौरान ही बच्ची के साथ इस तरीके से बलात्कार करना सरेआम गलत हैं।वही ग्रामीणों का आक्रोश था की उस पत्रकार को जान लेले ता, हालांकि इसकी सूचना मिलने पर आयर थाना दल बल के साथ पहुंच उसकी जान बचाई। वही पूरे प्रखंड में चर्चा हो रही कि अरुण एक शराबी शिक्षक था जो न जाने ऐसे ऐसे कितने कुकर्मो का अंजाम दिया होगा।लोग यह भी बताते हैं कि एक शिक्षक रहते हुए पत्रकारिता कैसे करता था।सूत्रों के मुताबिक भोजपुर जिला के शिक्षा विभाग को बखूबी पता था कि शिक्षक पत्रकार भी है लेकिन कोई करवाई आज तक न कि गई,इससे साफ जाहिर होता हैं कि जिला का शिक्षा विभाग शिक्षा एवं शिक्षक के प्रति कितना सजग हैं।इस संबंध में थानाध्यक्ष से पूछे जाने पर कहा कि शिक्षक सह पत्रकार को जेल भेज दिया गया। बता दें की इस पूरे घटनाक्रम की जानकारी छात्रा के परिजनों ने वीडियो बना साबित किया हालांकि बच्ची ने भी इसकी पुष्टि की गुरु जी मेरे से यह दुसरी बार घिनौना काम किये हैं। **रिपोर्ट :- गुड्डू कुमार सिंह**

दोहरा विकास में दोघरा पंचायत

● बिन्ध्याचल सिंह

भोजपुर जिला के बिहिया प्रखण्ड अन्तर्गत कुल चौदह पंचायत है। जिसमें एक पंचायत का नाम दोघरा पंचायत है। उस पंचायत की मुखिया श्रीमति रीता देवी पति– मुन्ना पासवान है। आपको बताते चले कि दोघरा पचायत की मुखिया श्रीमति रीता देवी की मायका भी बिहिया प्रखण्ड के कटेयॉ पंचायत के ग्राम–कटेयॉ की बेटी है। जो दोघरा पंचायत के सीमा से लगता है। अर्थात श्रीमति देवी की ससुराल व मायका की गॉव की दूरी लगभग 02 किलोमीटर है। दोघरा पंचायत की विकास व विश्वास कागज पर नही बल्कि धरातल पर दिखता है। जो आप अपनी नंगी ऑखो से देख सकते है जबकि विश्वास, पंचायत की आम व खास जनता से बात कर प्राप्त किया जा सकता है। प्रिय पाठकगण जानकारी देना चाहता हुॅ दोघरा पचायत में कुल 15 वार्ड है जिसमें लगभग 09 वार्डो में दलित महादलित अनुसूचित जाति की बहुलता है। यही कारण है कि दोघरा

पंचायत की मुखिया श्रीमति रीता देवी सुशासन बाबु की मापदण्ड के अनुरूप विकास की गति प्रदान करती आ रही है। उपरोक्त बात की जानकारी लोहार विकास मंच के राष्ट्रीय सदस्य, कुन्दन शर्मा ने प्रतिनिधि को दी। शर्मा के अनुसार–दोघरा पंचायत में कन्या विवाह योजना और ''हर घर नल का जल योजना अपनी भाग्य पर रोता है वही सात निश्चय योजना अन्तर्गत नाली निर्माण पी0सी0सी0 निर्माण कार्य सौ प्रतिशत पुरा हो चुका है। जिसका श्रेय मुखिया पति सह प्रतिनिधि मुना पासवान की है। पंचायत की मुखिया श्रीमति रीता देवी गृहणी है। अपने समय के अनुसार वार्डो में घुमती रहती है। और महिलाओ की चौपाल लगा कर विकास व समाज की बात करती रहती है। जिसमें लडकियो की शिक्षा पर जोर देती रहती है। इतना ही नही मुखिया पति सह प्रतिनिधि लडकियो की शिक्षा व शादी के समय गरीब परिवारो को आर्थिक व समाजिक सहयोग भी करते है। हांलाकि गरीब लडकियो की शादी व शिक्षा के समय सहयोग देनी की बात श्री पासवान ने अपने नव–निर्मित दाल मिल पर भी दे चुके है। दाल मिल का निर्माण बैक से कर्ज लेकर हो रही है। दोघरा पंचायत की जनता विगत वर्षो से एक ईमानदार व कर्तव्यनिष्ठ मुखिया जनप्रतिनिधि की आवश्यकता महसुस कर रही थी। आखिरकार पंचायत की जनता अपनी मनोनुकुल प्रतिनिधि चुना और विकास की गंगा बहा ली। शर्मा ने आगे कहा कि दोघरा गॉव कभी आदर्श ग्राम था जबकि मुखिया रीता देवी पंचायत को ही आदर्श बनाना चाहती है और उसपर कार्य भी कार्य रह रही है। अर्थात दुसरे शब्द मेंः– वो दिन दुर नही जब दोघरा पंचायत भोजपुर जिला में प्रथम स्थान प्राप्त करेगा। ●

नये साल में पुराना रोग रामको की देन

● बिन्ध्याचल सिंह

हमका जननी की अतना सिंगार करबु हमार की छोड दोसर...।'' उपयुक्त भोजपुरी कहावत नगर पंचायत बिहिया की आम व खास जनता की सेवा विगत 10 वर्षो से पूर्व नगर उपाध्यक्ष सह वार्ड पार्शद श्री बैद्यनाथ उर्फ भालु जी ने केवल सच प्रतिनिधि को उस वक्त जानकारी उपलब्ध कराई जब उनको जानकारी हुआ कि बिहिया में कुल चर्म रोग का साठ प्रतिशत योगदान रामको द्वारा फैलाई गई गंदगी व गैस से हो रही है। जमात के घेरे में रहने वाले श्री भालू जी के शब्द मेंः–वर्ष–2012 में प्रखण्डवासियो को जानकारी प्राप्त हुई कि बिहिया में रामको कम्पनी अपनी प्रतिष्ठान लगा रही है, तो लोगो में खुशी का ठिकाना नही रहा और हर चाय दुकान, प्रखण्ड, नगर पंचायत बाजार दुकान पर चर्चा होता था कि चलो कम से कम दो–चार सौ लोगो को स्थाई कार्य मिलेगा जिससे जिंदगी अमन चैन से बीतेगी। परन्तु जब रामको ने अपनी उत्पादन शुरू किया तो कुछ ही दिन में उसकी हक्कीत लोगो को जानकारी होने लगी। जो आज ''जान और जहान'' दोनो में जहर घोल रही है। रामको द्वारा किये जा रहे जानलेवा जहर की जानकारी केवल सच पत्रिका के आलोक में इस प्रकार दी :– रामको में प्रयोग होने वाला फयवर केमिकल जो मलेशिया का बना हुआ है, वह बहुत ही हानिकारक है। फयवर इंसान तो इंसान अगर किसी जानवर के शरीर पर एक बूॅद डाल दिया जाय तो कुछ

क्षण में वहा का चमडा जला देता है। जो जॉच का विशय है। कम्पनी के परिसर में छःटियूबेल कार्यरत है जिसमें चार टियुबेल 350 फीट से 80000 लीटर पानी निकाला है, और दो टियुबेल 40000 लीटर रामको द्वारा गंदा की गई पानी जमीन के अन्दर डाल देता है। जिसकी जानकारी केवल सच पत्रिका के पत्रकार के पास है, यही कारण है कि कम्पनी परिसर में पत्रकार को कम्पनी परिसर मे नही जाने दिया जाता है। कम्पनी में ऐसा एक इंच जगह बाकि नही है जहॉ सिमेंट की चादर जमीन के अन्दर नही रखी गई है। जो जॉच का विषय है। ●

सड़क निर्माण में मानवीय भूल भ्रष्टाचार की देन

● बिन्ध्याचल सिंह

दर्जी के कटाई में भूल ही डिजाइन है'' उद्धत वाक्य तब आपको समझ में आयेगा जब आप भु–अर्जन विभाग भोजपुर के द्वारा कृष्णाब्रहम स्थान से रेहिया पथ योजना निर्माण के लिये जमीन खरीदी गई थी। परन्तु सन् 1983–1984 ईस्वी में बनाई गयी सडक, भू–अर्जन द्वारा खरीदी गई कुल जमीन का 99 प्रतिशत पर भी नही बनी है अगर बनी है तो रैयतदारो के जमीन में। उपयुक्त बात की जानकारी प्रधान समाजसेवी डॉक्टर गोपाल जी ने दी। जिन्होने लोक सूचना पदाधिकारी से सूचना का मॉग किये है। गोपाल जी द्वारा केवल सच प्रतिनिधि को दी गई प्रमाण में भोजपुर समाहरणाय, भोजपुर, जिला भू–अर्जन कार्यालय ज्ञापांकः–921 भू–अर्जन, दिनांक 12/12/2019 अंकित है। गोपाल जी के अनुसारः–कृष्णाब्रहम्म स्थान से रेहिया पथ योजना जिला भू–अर्जन भोजपुर वाद संख्या–15/5/–1983–84 मौजा–टुडीगंज खाता संख्या–199, खेसरा संख्या–1984 में 21डी0, 86 में 02डी0 87 में 02डी0, खाता संख्या–433 खेसरा नम्बर–1988 में 31डी0 खरीदी गई, 1984 में दक्षिण तरफ चौडाई 35 कडी है,1988 में 55 कडी सडक की चौडी भूमि है,यानि 1984+1988 में सडक की भूमि 90 कडी है।खेसरा नम्बर 1986+ 1987 में 90 कडी/60 फीट चौडी जमीन है जबकि खेसरा नम्बर– 1984, 1987, 1988 में एक इंच भी सडक नही बनाई गई है जो जॉच का विषय है। गोपाल जी द्वारा दी गई प्रमाण में प्रतिनिधि के पास हाईकोट का आदेश 16/12/2004 जो अनुमडण्लाधिकारी डुमरॉव को अतिक्रमण हटाने के लिये दिया गया है। न्यायालय अंचलाधिकारी डुमरॉव का मापी वाद संख्या–06/2001–02 और सन 1969–70 का नक्शा शामिल है। आपको बताते चले कि इस बिन्दु पर प्रतिनिधि

ा अनुमंण्डलाधिकारी डुमरॉव से सात बार मिलने की कोशिश कर चुके है जिसमें चार बार उनके कार्यालय में और तीन बार सरकारी आवास पर, परन्तु महाशय से मुलकात नही हुई है। क्योकि कार्यालय में पता चलता है कि सर! क्षेत्र में गये है। और आवास पर, सर! पुजा कर रहे है या कभी सोये है। सरकारी आवास पर प्रतिनिधि कभी भी दिन के नौ– दस बजे के बीच ही मिलने गये है। वैसे जानकारो के अनुसार पदाधिकारी 16घंटे सरकारी कार्य किया करते है। गोपाल जी के अनुसार–निजी जमीन से सडक और अतिक्रमण हटाने के लिये भूमि से सम्बन्धित सभी पदाधिकारी के पास गोपाल जी सहित कई ग्रामीण द्वारा आवेदन दिया जा चुका है । यहा तक की हाई कोर्ट में जनयाचिका भी दायर है। ●

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और चरित्र निर्माण में संत जॉन

● बिन्ध्याचल सिंह

किसी के सपने, अपने नही होते है। जिसके सपने अपने होते है वो बहुत ही खुश नसीब मालूम पड़ते है। उपयुक्त कथन कि जानकारी केवल सच प्रतिनिधि को पूर्व पत्रकार सह प्रो0 सतेन्द्र नारायण सिंह ने उस वक्त दी जब प्रतिनिधि संत जॉन सेकेण्डरी प्लस टू के निर्देशक परम आदणीय डॉक्टर रमेश सिंह से अकालूपुर स्थित विद्यालय से अनौपचारिक मुलकात कर लौट रहे थे। प्रो0 सिंह के शब्द मेंः– डॉ0 सिंह अपने माता–पिता के पॉच पुत्रो में तीसरे नम्बर के सुपुत्र है जिन्होने खिलाडी से शिक्षाविद् तक की सफर कर रहे है। श्री सिंह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के फुटबॉल के खिलाडी थे, जिन्होने उन्नीस सौ नब्बे के दशक में संत जॉन विद्यालय की शुरूआत की जब नगरवासी एक गुणतापूर्ण शिक्षा देने वाली संस्थां/विद्यालय की तलाश कर रहे थें। आपको बताते चले कि संत जॉन विद्यालय की शिक्षण कार्य 1994 ईस्वी से स्टेशन रोड डुमरॉव से शुरू हुई जो आज स्टेशन रोड सहित अकालुपुर में भी संचालित हो रही है। दुसरे शब्द में'– स्टेशन रोड, बैक ऑफ बडौदा के पास प्राथमिक विद्यालय की शिक्षा दी जाती है और अकालुपुर में माध्यमिक और इन्टर की शिक्षा दी जाती है। जहॉ विद्यालय भवन के मुख्य गेट पर रंग–बिरंग की फुल दिखाई देती रहती है। विद्यालय परिसर लगभग दो एकड में फैला हुआ है। हांलाकि निर्देशक की अपनी निजी जमीन लगभग पॉच एकड विद्यालय के चौहदी में आता है। सरकार की प्रत्येक मापदण्ड को पुरा करते हुये संत जॉन सेकेण्डरी स्कूल की विशेषता यह है कि सभी शिक्षक प्रशिक्षक है और शिक्षक–छात्र अनुपात 25:1 है। शिक्षण कार्य के रोजमर्रा में शामिल योगा और कम्प्युटर कक्षा से कोई समझौता नही की जाती है। जो विद्यालय की प्रधानाचार्य की कर्तब्यनिष्ठता को दर्शाता है। आपको बताते चले कि संत जॉन

सेकेण्डरी स्कूल के निर्देशक डॉक्टर रमेश सिंह शिक्षाविद् के साथ एक समाज सेवी एवं फुटबॉल खिलाडी भी थे। ●

स्वच्छ जगदीशपुर–स्वस्थ जगदीशपुर

● बिन्ध्याचल सिंह

अहो भाग मानुश तन पावा'' उद्धत वाक्य अक्सर आप सांधु–संत, शिक्षाविद्, समाजसेवी, सज्जन व्यक्तियो से सुनते होगे। लेकिन मै आपको कुछ ऐसे ही विचारो से अवगत करा रहा हुँ। जो शायद वर्तमान नगर अध्यक्ष सह पीठासीन पदाधिकारी जगदीशपुर श्री मुकेश कुमार ''गुडडू'' की, जो शायद अपने मन में सोच रहे होगें कि ''अहो भाग की मुझे नगर अध्यक्ष की कुर्सी मिली जिसका सत्यापित प्रमाण किसी इंसान से नही अपितु नगर पंचायत जगदीशपुर के विकास से प्राप्त कर सकतें है। तो आइये जाने नगर पंचायत जगदीशपुर के स्वच्छ और स्वस्थ्य के साथ विकास की जानकारीः–प्रिय पाठकगण आपलोगो को पूर्व में जानकारी दी जा चुकी है कि नगर पंचायत जगदीशपुर की विकास की नीव पूर्व नगर अध्यक्ष परम आदरणीय श्रीमति रीता देवी द्वारा रखी गई है, उसी विकास को अपनी अथक प्रयास से विशेष गति दे रहे है। वैसे नगर पंचायत की विकास की विशेष जानकारी नवम्बर–2019 के अंक में दी जा चुकी है। नगर पंचायत जगदीशपुर, एक स्वच्छ नगर है, इसको नकारा नही जा सकता। अगर आप जगदीशपुर की नाली–गली, कुडा–कचरा, गंदगी इत्यादि का निरिक्षण करेगे तो पायेगें कि नगर पंचायत द्वारा किया गया सफाई कार्य किसी जिम्मेवारी व्यक्तित्व की ओर इशारा कर रही है। अपने घर–ऑगन की तरह प्रत्येक दिन सफाई कार्य नगर पंचायत जगदीशपुर की जाती है। इसको भी नकारा नही जा सकता है। जैसा कि नगर की सडक और नाली–गली नजर आती है। दुसरा बिन्दु–स्वस्थ्य नगर पंचायत की बात है तो इसके लिये वर्तमान नगर अध्यक्ष श्री मुकेश कुमार 'गूडडू' ऑगनबाडी केन्द्रों पर दी जाने वाली सरकारी योजनाओ पर विशेष ध्यान देते रहते है। जैसे– भावी मॉ बनने वाली बालिकाओ को दी जानेवाली सुविधा, धात्री को दी जानेवाली राशन, ऑगनबाडी केन्द्रो पर नियमित ठीकाकरण इत्यादि है। जिससे न केवल नगर स्वस्थ्य हो बल्कि नवजात शिशु भी कुपोषण के शिकार न हो। दूसरे शब्द में :–वर्तमान नगर अध्यक्ष द्वारा किये जाने वाले कार्य अनुकरणीय है। इसको भी नही नकारा जा सकता है। ●

महाविद्यालय के अस्तित्व पर खतरा

● बिन्ध्याचल सिंह

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक कॉलेज, बक्सर के प्रचार्य के पत्रांक–120/19 दिनांक–08/11/2019 के आलोक में जानकारी देना चाहता हूँ कि प्रचार्य महोदय इस पत्रांक के माध्यम से तीन बिन्दुओ का जिक्र किये है, जिसमें तीसरा बिन्दु यह है कि आपके द्वारा मॉगी गई, सूचना का जवाब आपको दिनांक–09/02/2019 को ही भेज दी गयी है। आपके द्वारा जो भी सूचनॉए मॉगी जा रही है उसे प्रदान करने पर लोक सूचना पदाधिकारी एवं महाविद्यालय के अस्तिव पर खतरा आ रहा है। आप अच्छी तरह जानते हैं कि विगत वर्षो में अपराधिक घटना घटी, उस घटना में संलिप्त लोग आपके काफी करीबी है और उन्हीं के इसारे पर महाविद्यालय पुनः अशान्ति पैदा करने के उद्देश्य से आप बस तरह की सूचनाऍ मॉगते रहते है, जो एक पत्रकार के लिये अशोभनीय है। सादर सूचनार्थ प्रेशित :–महाशय, 09/02/2019 को भेजी गयी सूचना, धरातल से कोसो दूर है। जिस बिन्दुओ पर सूचना मॉगा था वो संतोषप्रद नहीं है। पहली बात :–सूचना मॉगने पर लोक सूचना पदाधिकारी और महाविद्यालय के अस्तिव पर खतरा है तो केवल एल0 बी0 टी0 कॉलेज पर ही क्यो? पी0 वी0 कॉलेज पर क्यो नही? दूसरी बात :– क्या शोभनीय है और क्या अशोभनीय है, आप से बेहतर कौन जानकारी रख सकता है, क्योकि आपके जैसे परम आदरणीय शिक्षक द्वारा दी गई ज्ञान से ही हम जैसे पत्रकार सेवा दे रहे है। तीसरी बात :– महाशय केवल सच बक्सर महाविद्यालय के दो–चार कर्मचारी को चेहरा से पहचाते है परन्तु केवल तीन ही पदाधिकारी है जिनको केवल सच, नाम व पद से जानते है। प्रथम–पूर्व प्रचार्य श्री रास बिहारी राय, दूसराः–वर्तमान प्रचार्य श्री नार्देश्वर राय और तीसराः– प्रोफेसर श्री भगवान पाण्डेय। भूगोल। परम आदरणीय प्रचार्य महोदय आप ही बता दिजीये कि इन तीनो शिक्षाविदो में अपराधी कौन है? ●

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/9955077308

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

नेपाल पुलिस के साथ किशनगंज एसपी की हो रहीं लगातार बैठक

● धर्मेन्द्र सिंह

किशनगंज/धर्मेन्द्र सिंह, गलगलिया थाना के भातगांव एसएसबी बीओपी में किशनगंज और नेपाल के झापा पुलिस तथा एसएसबी के अधिकारियों की बैठक दिनांक-26.12.2019 को हुई। जिसमें मुख्यत: शराब बंदी को लेकर चर्चा की गई। जिला पुलिस कप्तान कुमार आशीष ने बताया कि नववर्ष और कड़ाके की सर्दी के मौसम में नेपाल के रास्ते शराब का आवागमन ना हो, बिहार के नागरिक नेपाल में जाकर शराब का उपभोग ना कर सके। इसके लिए नेपाल पुलिस और एसएसबी के अधिकारियों को संवेदनशील किया गया। उनकी तरफ से भी 100% सहयोग का आश्वासन दिया गया है। अन्य मुद्दों पर भी खुल कर चर्चा हुई। दोनों पक्षों ने ड्रग्स पर रोक लगें पर सहमति जताई है।जॉइंट ऑपरेशन में मवेशी तस्करों पर कारगर तरीके से कार्रवाई करने का निश्चय किया गया। आपको मालूम हो कि पुलिस कप्तान कुमार आशीष द्वारा झापा के नए पुलिस कप्तान श्री कृष्णा प्रसाद कोइराला का स्वागत किया गया और उन्हें भारतीय पक्ष की ओर से स्मृति चिन्ह भी प्रदान किया गया। उपस्थित अधिकारियों में जिला पुलिस कप्तान किशनगंज कुमार आशीष, पुलिस कप्तान झापा श्री कृष्णा प्रसाद कोइराला, एसएसबी के कमांडेंट श्री अरुण, सेकंड इन कमांड अधिकारी (टूआईसी) ललित, डप्टिकमंडेन्ट नेपाल इंस्पेक्टर श्री यम कुमार श्रेष्ठ, सीआई ठाकुरगंज श्री अश्विनी कुमार, गलगलिया थानाध्यक्ष श्री तरुण कुमार तरुणेश, कुर्लिकोट थानाध्यक्ष श्री संजय, ठाकुरगंज थानाध्यक्ष श्री मोहन कुमार इत्यादि, मौजूद रहे। ●

किशनगंज नया साल का आगमन के दौरान जिले में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रशासनिक व्यवस्था लगभग पूरी कर ली गई है।पुलिस कप्तान कुमार आशीष ने जिले के सभी पुलिस पदाधिकारियों और थानाध्यक्षों को पिकनिक स्पॉट की सूची तैयार करने तथा सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेने का निर्देश दिया है।श्री कुमार ने बताया कि अब तक जिले में कुल 80 पिकनिक स्पॉट का चिन्हित किया गया है।जबकि टाउन थाना क्षेत्र में 10 पिकनिक स्पॉट को चिन्हित किया गया है।उन्होंने बताया कि नववर्ष के मौके पर जिले में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए सभी पिकनिक स्पॉट के साथ साथ सभी प्रमुख चौक चौराहों पर पर्याप्त मात्रा में बल की तैनाती की जाएगी तथा सादी वर्दी में भी पुलिस के जवान तैनात रहेंगे।पुलिस गस्त भी लगातार जारी रहेगी।जबकि भीड़भाड़ वाले स्थानों पर विशेष सतर्कता बरती जाएगी।जिला पुलिस कप्तान कुमार आशीष ने कहा कि नववर्ष की खुशियों में व्यवधान डालने वाले तथा छेड़खानी करने वालों से पुलिस कड़ाई से निपटेगी तथा शराब पीकर हंगामा कर रहे लोगों को किसी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा।

एनआरसी को लेकर हुआ एकदिवसीय विरोध प्रदर्शन

● धर्मेन्द्र सिंह

संविधान बचाओ कमिटी किशनगंज के बैनर तले एक दिवसीय शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन किया गया। CAA एंव NRC के विरुद्ध स्थानीय कांग्रेस सांसद डॉ. जावेद आजाद, कोचाधामन विधायक मास्टर मुजाहिद आलम, बहादुरगंज विधायक तौसीफ आलम, किशनगंज विधायक कमरुल हुदा, एआईएमआईएम प्रदेश अध्यक्ष अख्तरुल ईमान सहित कई पार्टी के वरीय पदाधिकारी एक साथ विरोध मार्च में शामिल दिखें। विरोध मार्च शहर के सुभाषपल्ली चौक स्थित अंजुमन इस्लामिया से शुरू होकर शहर के विभिन्न मार्ग से होते हुए समाहरणालय तक जाकर समाप्त हुई। विरोध मार्च में शामिल सांसद, विधायकगण व अन्य ने जिलाधिकारी से मिलकर CAA व NRC को वापस लेने हेतु महामहिम राष्ट्रपति के नाम मेमोरेंडम दिए। ●

लोगों के दिलों में बस कर ही आपका मानव जीवन सफल हो सकता है : कुमार आशीष

● धर्मेन्द्र सिंह

सफर में जाते हुए बस की बगल की सीट पर एक बुजुर्ग महिला ने अपना सामान टिकाया और झल्लाए हुए नजर से सहयात्री युवती से पूछा, 'हटा नहीं जाता तुझे ? थोडा और खिसक. .जगह दे मुझे.. 'बात छोटी-सी थी पर आस-पास के लोगों को लगा की युवती अब क्या कहेगी ? कहीं बात आगे तो नहीं बढ़ जाएगी ? पर सौम्यता भरी खामोशी से युवती ने कुछ नहीं कहा। पीछे की सीट वाली आंटी ने उलाहने भरी दबी-सी आवाज में कहा, 'मैं तो चुप ना बैठती..बुढ़िया को सबक सिखा ही देती आज.. 'इस पर युवती ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, 'हर बात पर असभ्य व्यवहार या बहस करना आवश्यक नहीं, वैसे भी मैं अगले स्टॉप पर उतरने वाली हूँ। सुनने में बहुत ही साधारण परन्तु यह प्रतिक्रिया महत्वपूर्ण है, जिसे सुनहरे अक्षरों में लिखी जानी चाहिए, क्यो? आइये, समझते हैं-कि हर बात पर असभ्य व्यवहार या बहस करना आवश्यक नहीं..।जरा सोचिये, आखिर हमारे साथ की यात्रा है ही कितनी लम्बी ? अगर हमें यह एहसास हो जाए, कि यहाँ हमारा समय कितना कम है, तो व्यर्थ के झगड़े, निरर्थक तर्क बात-बात पर असहमति और दूसरों में गलती खोजने वाला रवैया समय और ऊर्जा की बर्बादी का कारण नहीं, तो और क्या है? हम अपने साथ क्या लेकर आये थे जो लेकर जाने का ख्वाब देखते हैं? याद रखें, आपका व्यवहार ही आपकी पहचान होगी। लोगों के दिलों में बस कर ही आपका मानव जीवन सफल हो सकता है, अमरत्व को प्राप्त कर सकता है। आपकी गलती ना भी हो, अगर किसी ने आपका दिल तोड़ा तो शाँत रहे! आखिर यात्रा इतनी छोटी जो है। किसी ने आपके साथ विश्वासघात किया, धमकाया, धोखा दिया या अपमानित किया तो शाँत रहें, क्षमा करें! आखिर हमारी यात्रा इतनी कम जो है। जब भी कोई मुसीबत हमारे सामने आये, हमें याद रखना चाहिए, कि हमारे साथ की यात्रा बहुत छोटी ही है। इस यात्रा की अवधि कोई नहीं जानता-कोई नहीं जानता, कि उनका पड़ाव कब आएगा? हमारी यात्रा एक साथ इतनी कम है, कि मालूम नहीं अगले पल क्या होने वाला है? तो क्यों नहीं, हम अपने दोस्तों व परिवारजनों का ध्यान रखें, और अपने काम को संजोएं। क्यों नहीं-हम एक-दूसरे के लिए सम्मानजनक, दयालु और क्षमाशील हों, और यह अहसास हमें कृतज्ञता और उल्लास से भर दे। आपसी विद्वेष को भुला कर ये सोचें की अगर मेरे व्यवहार ने आपको कभी कोई चोट पहुँचाई है, तो मैं आपसे क्षमा माँगता हूँ। यदि आपने मुझे कभी दुख पहुँचाया है, तो मैंने आपको पहले ही क्षमा कर दिया है। आखिर, हमारी यात्रा एक साथ है ही कितनी? बीते वर्षों के सुखद समय के लिए हम ईश्वर का आभार मानें, और इस आनेवाले समय में अपनी जीवन यात्रा को सुखमय बनाएं। दिल ना दुखाएं, बुरी यादों को भूल जाएँ और अच्छी यादों को आत्मसात करें। आप सभी को नववर्ष में नए संकल्पों के साथ, आशा और विश्वास के साथ, बेसहारों का सहारा बनने की इच्छा-शक्ति के साथ, अपने चारो ओर खुशियाँ फैलाते रहने के दृढ निश्चय के साथ। आइये कुछ करते है, नए साल 2020 में, अपने लिए, समाज के लिए, देश के लिए। ●

कड़ी मेहनत और सच्ची लगन से होगी सारी बाधाएं दूर

जिला पुलिस कप्तान कुमार आशीष ने खगड़ा के माछमारा में नववर्ष के मौके पर भीषण ठंड से ठिठुर रहे गरीबों और असहाय के बीच कंबल वितरण कर उन्हें राहत पहुंचाने का कार्य किया। आपको मालूम हो कि माछमारा में वितरण करने के बाद पुलिस कप्तान श्री कुमार ने शहर में घूम घूम कर ठंड से ठिठुर रहे लोगों को कंबल ओढ़ाया। इस मौके पर बड़ी तादाद में गरीब परिवारों के लोग कंबल के लिए पहुंचे। जिन्हें पुलिसकर्मियों ने बारी-बारी से कंबल प्रदान किया। जिससे गरीब और असहाय लोगों के चेहरे खुशी से खिल उठे। श्री कुमार के मानवता और आत्मियता को देख लोगों ने उनकी सराहना की। कुछ लोगों का कहना था कि कड़ाके की ठंड में ठिठुर रहे गरीबों व असहायों को कंबल बांट कर पुलिस कप्तान ने मानवता की मिशाल पेश कर दी और पिपुल्स फ्रेंडली होने के दावे को सच कर दिखाया। इस मौके पर मुख्यालय डीएसपी अजय झा, सर्किल इंस्पेक्टर इरशाद आलम, इंस्पेक्टर मनीष कुमार, सुनील कुमार, टाउन थानाध्यक्ष राजेश कुमार तिवारी, सुदेश कुमार सहित कई अन्य पुलिस पदाधिकारी और कर्मी उपस्थित थे।

किसी भी अप्रिय घटना से निपटने के लिए पुलिस पूरी तरह मुस्तैद

● धर्मेन्द्र सिंह

पिकनिक के लिए प्रखंड अंतर्गत महानंदा नदी किनारे बस्ताकोला मौजाबाड़ी व कनकई नदी किनारे पिकनिक स्पॉट पर लोगों ने स्वादिष्ट व्यंजन का लुत्फ उठाए। नये साल के मौके पर किशनगंज जिला में पहली बार शांति पूर्ण ढंग से लोगों ने जश्न मनाया। किशनगंज में एकलौता पिकनिक स्पॉट मुख्यालय से 10 किलोमीटर दूर ओद्राघाट काली मंदिर परिसर हर साल के भाँती इस वर्ष सूना सूना देखा गया लेकिन स्पॉट पर जितने भी लोग पिकनिक के लिये मौजूद थे वह शांतिपूर्ण ढंग से खाना बनाकर अपने परिवारों के साथ जश्न मनाया। पुलिस कप्तान कुमार आशीष के दिशा निर्देश के अनुसार पुलिस जिले के हर प्रमुख चौक चौराहों पर मौजूद थे। खासकर गुप्त तरीके से पिकनिक स्पॉट पर भी सिविल ड्रेस में उत्पाद और पुलिस कर्मियों मौजूद थे। किशनगंज में शराब पीने वाले 60 फीसदी आवादी पश्चिम बंगाल क्षेत्र में पिकिनिक मनाने निकल गये थे। पिछले 31 दिसम्बर और 1 जनवरी के मौके पर जिले में वाहन से दुर्घटना और शराब पीकर आपस में भीड़ रहे लोगों को इस वर्ष नहीं देखा गया है और न ही किसी के साथ ऐसी कोई घटना घटी है। पुलिस की विशेष सतर्कता के कारण कहीं से भी किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना घटित की सूचना नहीं मिली। क्षेत्र के विभिन्न हिस्सों से युवा वर्ग पिकनिक के लिए बंगाल के हिल इलाके पर भी गए। नववर्ष पर लोगों ने अपने अपने घरों में भी परिवार के साथ स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिए। नववर्ष के प्रथम दिन धार्मिक स्थलों पर काफी भीड़ रही।

वर्ष के समाप्ति और नववर्ष के आगमन के मौके पर जिलेवासियों में खुशी की लहर देखने को मिली, एवं कई स्थानों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जबकि जिले के पिकनिक स्पॉट पर सहभोज का आयोजन किया गया। पिकनिक स्थलों पर लोगों की भीड़ को देखते हुए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम को लेकर पुलिस बल तैनात किए गए थे।जिला पुलिस कप्तान कुमार आशीष के निर्देश पर जिले के सभी चौक-चौराहों पर पुलिस बल की तैनाती रही। संवेदनशील स्थानों पर सादी वर्दी में व महिलाओं और लड़कियों की सुरक्षा और किसी भी अप्रिय घटनाओं से निपटने के लिए पुलिस पूरी तरह से मुस्तैद रही। होटल, पार्क सहित अन्य सार्वजनिक स्थानों पर लोगों के द्वारा शराब सेवन की संभावना को देखते हुए पुलिस को अलर्ट कर दिया गया था। शराबियों और हुड़दंगियों से निपटने के लिए पुलिस पूरी तरह से अलर्ट थी। कार्यक्रम स्थल व पिकनिक स्थलों पर पुलिस लगातार गस्त करती रही। वहीं नववर्ष के अवसर पर धार्मिक स्थलों व सुनसान जगहों पर पिकनिक मनाने आये लोगों की सुरक्षा में पुलिसकर्मी मौजूद थे। कई पिकनिक स्पॉटों पर महिला पुलिस टीम की भी तैनाती की गई थी। नववर्ष के मौके पर होटलों, मॉल व सिनेमा हॉल में भी नजर रखी जा रही थी। कई जगहों पर भीड़ को देखते हुए पुलिस लगातार गश्ती करती नजर आई। पुलिस की विशेष सतर्कता के कारण कहीं से भी किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना घटित की सूचना नहीं मिली। ●

स्वच्छ राष्ट्र बनान है, हर घर से प्लास्टिक हटाना है

● धर्मेन्द्र सिंह

राहत संस्था ने महिलाओं को जीविका के लिए सिलाई प्रशिक्षण खोला, जिसमे 25 पीड़िताओं के दुवारा थैला बनाना और छपाई का काम कराया जा रहा है। डॉव फरजाना बेगम ने कहा कि संस्था हमेशा पीड़ितो की मदद करती रहती है, कानून/परामर्श से लेकर जीविका जैसे कार्य, वैसी महिला जो हिंसा की शिकार है उन्हें कानूनी सलाह और रोजगार के लिए भी सहयोग किया जाता है। वर्तमान में थैला बनाने से लेकर छपाई तक का कार्य महिला दुवारा आरम्भ किया गया। उद्घघाटन में नगर परिषद अध्यक्ष-हीरा पासवान ने कहा कि महिलाओं को काफी प्रोत्साहन मिलेगा। वहीं डॉव लीपि मोदी ने कहा कि राहत संस्था हमेशा हर सहयोग के लिए है। अधिवक्ता अर्चना जी ने कहा कि हम कानूनी सहयोग करेंगे।

अधिवक्ता पुष्पा झा ने कहा कि मैं गावँ तक राहत संस्था के साथ चलने को तैयार हूं। सरपंच टेउसा मुदस्सिर आलम ने कहा कि पंचायत स्तर पर भी केंद्र की आवश्यकता है। डॉ फरजाना बेगम ने कहा कि बाजार में थैले बिकेंगे और ओर्डर भी मिल रहे है, महिला जितना बनाएगी उतना उन्हें लाभ/दाम मिलेगा। दिल्ली से आई निशा दुबे और इशांत ने सभी को प्रोत्साहन किया है। इस अवसर पर समाज सेवी चंदन श्रीवास्तव, रंजीत सिंह, दानिस, एहसान, यासमीन, माला, सोनी, अन्नू, आजाद, प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली महिला- अनिता, सिमा खातून आदि उपस्थित थी। ●

असदुद्दीन ओवैसी ने किया ऐलान

बिहार में एनपीआर नहीं लागू कर पायेंगे नीतीश कुमार

● धर्मेन्द्र सिंह

किशनगंज के रूईधासा मैदान में एआईएमआईएम (AIMIM) प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी के नेतृत्व में दिनांक-29.12.2019 को नागरिकता संशोधन कानून और एनआरसी के खिलाफ रैली हुई। इसमें एनपीआर पर अपनी बात रखते हुए ओवैसी ने कहा कि बिहार में एनपीआर लागू करना आसान नहीं होगा। इसके पहले मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को इसके लिए आम घोषणा करनी होगी। रैली में पहुंचे AIMIM के बिहार प्रदेश अध्यक्ष अख्तरुल ईमान और पार्टी के विधायक कमरूल होदा ने भी CAA और NRC को लेकर अपनी बातें रखीं। इससे पहले ।प्डप्ड प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी जब रैली में पहुंचे तो स्कूली बच्चों ने राष्ट्रगान जन गण मन अधिनायक जय हे... गाया। रैली को संबोधित करते हुए ओवैसी ने कहा कि अभी त्याग का समय है। हमें बहुत कुछ त्याग कर भी संविधान को बचाना है। ओवैसी ने कहा कि यह मसला सिर्फ मुसलमानों का नहीं है, बल्कि संविधान बचाने का है। हम पीएम नरेंद्र मोदी को पैगाम देना चाहते हैं कि हमने जिन्ना से हाथ नहीं मिलाया। हम अलग रहे, पर हमें किसी से डर नहीं लगता। हमने रैली में तिरंगा झंडा किसी के डर से नहीं लगाया, बल्कि इसलिए लगाया है कि इसकी सुरक्षा करना चाहता हूँ। ओवैसी ने अपने संबोधन में साफ कहा कि बिहार में एनपीआर को लागू नहीं किया जा सकता। इसके लिए नीतीश कुमार को ऐलान करना पड़ेगा। मैं इस मुद्दे पर किसी से बहस करने को तैयार हूं। ओवैसी ने रैली में आए लोगों से सीएए और एनआरसी के विरोध में नारे भी लगवाए।

किशनगंज नागरिकता संशोधन कानून व एनआरसी को लेकर विपक्षी दलों द्वारा चलाए जा रहे आंदोलन का असर सीमांचल में एनडीए गठबंधन की राजनीति पर भी पड़ा है। जहां केंद्र के साथ लोकसभा व राज्यसभा में जदयू कदमताल करती दिखी, वहीं किशनगंज के दोनों जदयू विधायक लगातार सीएए व एनआरसी के विरोध में हो रहे प्रदर्शन में शामिल हो रहे हैं। जदयू विधायक मुजाहिद आलम और नौशाद आलम न सिर्फ कांग्रेस, एआइएमआइएम व अन्य पार्टियों के साथ बैठकों में भाग ले रहे हैं बल्कि खुलकर यह कहते भी हैं कि वह इस मसले पर पार्टी नहीं आवाम के साथ हैं। नागरिकता संशोधन बिल संसद के दोनों सदनों में पास होते ही जहां विपक्षी दलों के द्वारा लगातार सड़कों पर आंदोलन शुरू किया गया है। वहीं भाजपा भी अब इसके समर्थन में रैली निकाल रही है। लेकिन एक बात तो सबसे खास है, वो ये कि भाजपा को छोड़कर सभी विपक्षी दल एक प्लेटफॉर्म पर नजर आ रहे हैं। चाहे एनडीए के प्रमुख घटक जदयू हो या फिर महागठबंधन के कांग्रेस-राजद। इसके अलावा पहले दिन से सीएए व एनआरसी को लेकर सड़क पर उतरी एआइएमआइएम भी आंदोलन को धार देने में जुटी है। विधानसभा चुनाव की आहट को देखते ही सभी दल इसी बहाने आवाम की नब्ज टटोलने में जुट गए हैं। इसी कड़ी में किशनगंज में एक खास बात यह रही कि नागरिकता संशोधन कानून को लेकर एक तरफ जदयू सदन

रैली को लेकर अलर्ट रहा जिले का पुलिस-प्रशासन

किशनगंज ओवैसी की सभा को लेकर प्रशासन अलर्ट था। सुरक्षा व्यवस्था की देख-रेख एसडीएम शाहनवाज अहमद नियाजी व एसडीपीओ अजय कुमार झा कर रहे थे। रुईधासा मैदान सहित शहर के प्रमुख चौक-चौराहों पर मजिस्ट्रेट के साथ पर्याप्त पुलिस बल की तैनात था। एहतियातन अररिया, पूर्णिया व कटिहार से पुलिस बुलाई गई थी। शहर के 16 संवेदनशील जगहों पर मजिस्ट्रेट तैनात किए गए थे। ट्रैफिक व्यवस्था की कमान इंस्पेक्टर मेराज हुसैन संभाले हुए थे। सभास्थल पर सीआई इरशाद आलम, थानाध्यक्ष राजेश तिवारी व अन्य थानाध्यक्ष तैनात थे। अस्पताल के डॉक्टर व अग्निशमन दस्ता भी अलर्ट था।

रैली में नहीं आए जीतनराम मांझी

AIMIM प्रमुख ने अपने संबोधन के दौरान मेरठ के एसपी के विवादित बयान को लेकर भी अपनी बातें रखीं। उन्होंने कहा कि वे मेरठ के एसपी को बताना चाहते हैं कि वहां मुसलमानों पर अत्याचार हुआ है। मेरठ वह सरजमीं है, जहां अंग्रेजी राज में कारतूस में गाय और सुअर के चमड़े का उपयोग किया गया था, इस पर अंग्रेज सरकार के विरोध में हिन्दू-मुस्लिम साथ लड़े थे और कामयाब बगावत किया था। ओवैसी की रैली में हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा के प्रमुख और पूर्व सीएम जीतनराम मांझी नहीं आए, लेकिन कई दलित संगठनों के सदस्य नीले झंडे और जय भीम लिखी तख्तियां लेकर पहुंचे थे। मंच पर नौकरी से इस्तीफा दे चुके IPS अब्दुल रहमान भी मौजूद रहे।

में भाजपा सरकार के साथ कदमताल कर रही थी तो अब सड़क पर आवाम के साथ किशनगंज के दोनों जदयू विधायक हैं। कई मौकों पर कोचाधामन विधायक मुजाहिद आलम व ठाकुरगंज विधायक सह विधानसभा में पार्टी के सचेतक नौशाद आलम विरोध मार्च में शामिल हो चुके हैं। चाहे वो बहादुरगंज में आयोजित जनसभा हो या फिर जिला मुख्यालय स्थित मदरसा अंजुमन इस्लामिया परिसर में आयोजित सर्वदलीय बैठक व विरोध मार्च की बात हो। हर कदम पर आवाम के साथ होने की बात कहने वाले विधायक मुजाहिद 23 दिसंबर को भी कन्हैयाबाड़ी में आयोजित विरोध मार्च में शामिल हुए और उन्होंने कहा कि हम आवाम के साथ हैं। साथ ही उन्होंने यह भी दुहराया कि राज्य सरकार बिहार में एनआरसी लागू नहीं करेगी। मैं और पार्टी के कई बड़े नेताओं ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के समक्ष एनआरसी और सीएए के विरोध में अपना पक्ष रखा है। सरकार ने इसे गंभीरता से लेकर इसे राज्य में लागू नहीं करने की घोषणा भी कर दिया है। वहीं विधायक यह भी बताते हैं कि सीएए और एनआरसी को लेकर सूबे में जगह-जगह विरोध प्रदर्शन हो रहा है। इस दोनों कानून से सर्वसाधारण लोगों को परेशानी होगी। सीएए कानून त्रुटियों को सुधार किए बिना इसे लागू करना जनहित में नहीं है। सीएम नीतीश कुमार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि सूबे में एनआरसी को किसी भी हालत लागू नहीं होने देंगे। सीएम नीतीश कुमार के साथ सीएए और एनआरसी को लेकर कई मुद्दों पर चर्चा हुई है। इससे स्पष्ट हो गया है कि सूबे के लोगों को एनआरसी से डरने की कोई जरूरत नहीं है। सीएम नीतीश कुमार के रहते यह कानून राज्य में लागू नहीं होगा। ●

केंद्र और बिहार सरकार दोनों बोल रही झूठ : कमरूल होदा

एआईएमआईएम के विधायक कमरुल होदा ने कहा कि सीएए, एनआरसी पर केंद्र व बिहार सरकार दोनों झूठ बोल रही है। उन्होंने कहा कि बिहार के मुखिया नीतीश कुमार बरगलाकर यह बोलकर की मिट्टी में मिल जाऊंगा लेकिन भाजपा से हाथ नहीं मिलाऊंगा कहकर बिहार की सत्ता में आ गए।फिर भाजपा की गोद में जाकर बैठ गए।उन्होंने कहा कि इस कानून को पास कराने में योगदान देने वाली बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को अगले विधासनसभा चुनाव में लोगों को हिसाब देना होगा।

मजहब की बुनियाद पर कानून लानेवाली पहली सरकार

● धर्मेन्द्र सिंह

किशनगंज सीएए व एनआरसी के खिलाफ दिनांक-28.12.2019 को रुईधासा मैदान में एक जनसभा का आयोजन किया गया। जन आक्रोश मार्च के बैनर तले आयोजित इस जनसभा को सांसद डॉ. जावेद आजाद, विधायक तौसिफ आलम, शायर व कांग्रेस नेता इमरान प्रतापगढ़ी आदि ने संबोधित किया। वक्ताओं ने कहा कि वोटर आईडी के आधार पर हुई वोटिंग से सत्ता में आने वाली सरकार अब हमसे भारतीय होने का सबूत मांग रही है। जनसभा को संबोधित करते हुए सांसद डॉ. आजाद ने कहा कि देश की आजादी में सभी धर्मों के लोगों ने कुर्बानी दी थी। लेकिन आज भाजपा सरकार एक खास समुदाय को टारगेट कर रही है। केंद्र सरकार सीए कानून के बहाने संविधान व लोकतंत्र को खत्म कर रही है।इसके खिलाफ उठने वाली आवाजों को लाठी-गोली से दबाने की कोशिशें की जा रही हैं। सांसद ने कहा कि सरकार इस कानून को वापस नहीं लेती है तो हम भी इस सरकार को नहीं मानेंगे।उन्होंने उपस्थित लोगों से अपील की कि इस कानून को हिन्दू-मुस्लिम का रंग देने से बचें। जितना मुस्लिम इसे लेकर असहज हैं उतना हिन्दू भाई भी इस कानून से नाराज हैं और सड़क पर साथ खड़े हैं।वही शायर इमरान प्रतापगढ़ी ने केंद्र सरकार पर चुटकी लेते हुए कहा कि वोटर आईडी के आधार पर सत्ता पर बैठने वाली सरकार अब भारतीय होने का सबूत मांग रही है। मजहब की बुनियाद पर कानून लाने वाली यह पहली सरकार है। जिस प्रकार केंद्र सरकार लोक तांत्रिक तरीके से विरोध करने वालों पर लाठियां व गोलियां बरसाती है उससे ब्रिटिश हुकूमत की याद ताजा हो उठती है। जामिया यूनिवर्सिटी में इस कानून के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे छात्र-छात्राओं पर बर्बरतापूर्ण तरीके से लाठियां भांजी गई। इसी तरह के मामले एएमयू में भी हुए। हुकूमत आवाज दबाने की लाख कोशिश कर ले लेकिन यह लड़ाई रुकने वाली नहीं है। सवालिया लहजे में उन्होंने कहा कि अदनान सामी और सलमा आगा को कैसे भारत की नागरिकता दी गई। उन्होंने अपील की कि कानून को हाथ में न लें। चूंकि सरकार चाहती है कि विरोधी हाथ में पत्थर लें और हम गोलियां बरसाएं। इस अवसर पर तबरेज हाशमी, हैदर बाबा, नसीम अख्तर, शमशीर आलम उर्फ दारा, सरफराज खान, शफी सहित कई लोग मंच पर मौजूद थे।वही जनसभा को संबोधित करते हुए बहादुरगंज के विधायक तौसिफ आलम ने कहा कि जुल्म करने से भी बड़ा अपराध जुल्म सहना है। उन्होंने कहा कि अगर अभी नहीं जागे तो आगे और भी गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। प्रधानमंत्री मोदी पर हमला बोलते हुए कहा कि उनके हाथ पहले भी गुजरात दंगों के खून से रंगे हैं। अगर कागज का टुकड़ा भारतीय होने का सबूत है तो मैं नहीं दिखाऊंगा टुकड़ा।हमें गर्व है कि हमारे पूर्वजों ने देश की आजादी में कुर्बानी दी। उन्होंने कहा कि यह कानून हिन्दू-मुस्लिम को बांटने के लिए लाया गया है।इसे सभी समुदाय को समझने की जरूरत है। उन्होंने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि एक तरफ बिल पर हस्ताक्षर करते हैं दूसरी ओर हमदर्द होने का दंभ भरते हैं। उन्होंने कहा कि हमसे भारतीयता की सबूत मांगने वाले पहले खुद की सोचें। उन्होंने सभी समुदाय से इस लड़ाई में साथ देने की अपील की और कहा कि देश से अंबेडकर का संविधान, गांधी के विचार समाप्त कर देने की साजिश है। ●

जल-जीवन-हरियाली अभियान के तहत पौधारोपण

● धर्मेन्द्र सिंह

जल जीवन हरियाली अभियान के तहत बिहार बस स्टैंड के निकट डॉ. भीमराव अंबेडकर टाउन हॉल परिसर में राज्य सरकार के आपदा प्रबंधन मंत्री सह जिला के प्रभारी मंत्री लक्ष्मेश्वर राय ने पौधारोपण किया गया। इस दौरान जिलाधिकारी हिमांशु शर्मा, विधायक मुजाहिद आलम व अन्य पदाधिकारियों ने भी पौधारोपण किया। मौके पर प्रभारी मंत्री ने कहा कि सरकार सात निश्चय योजना के तर्ज पर यह अभियान चला रही है। जल जीवन हरियाली अभियान सरकार की महत्तकांक्षी अभियान है। उन्होंने कहा इस अभियान के तहत हमने देखा कि प्रत्येक विभाग अपने-अपने परिसर में छायादार एवं फलदार पौधारोपण किया है। इस अभियान के तहत दिसंबर के अंत से जिला के खाली पड़े स्थानों पर पौधे लगाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि अब तक बसंतकालीन एवं वर्षाकालीन ऋतु में एक लाख से अधिक पौधा लगाए जा चुके हैं। इसके अलावा पौधा के संरक्षण को लेकर 11 हजार 100 बांस का गैबियन से पौधा का घेराबंदी किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पौधा लगाने के साथ-साथ पौधा का संरक्षण भी जरूरी है। इसलिए लगाए गए पौधा का सुरक्षा के लिए बांस के बने गैबियन से पौधा का घेराबंदी किया जाएगा। वहीं टाउन हॉल परिसर में विधायक मुजाहिद आलम, डीडीसी यशपाल मीणा, प्रशिक्षु आइएएस शेखर आनंद, एसडीएम शाहनवाज अहमद नियाजी, ओएसडी राहुल वर्मन ने पौधा रोपण किया। ●

मो. वसीम कमाली को दोबारा बनाया गया

जदयू बुनकर प्रकोष्ठ का प्रदेश उपाध्यक्ष

● धर्मेन्द्र सिंह

देश की राजनीतिक पार्टियों में अपना दमखम रखने वाली बिहार के सुशासन बाबू अर्थात मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता वाली जनता दल युनाईटेड पार्टी में कैडर कार्यकर्ताओं में जोश की कमी नहीं हैं। यही कारण है कि आज गांव-गांव, शहर-शहर पार्टी का विस्तार करने की जिम्मेदारी अपने कंधों पर लिये पार्टी के कर्मठ कार्यकर्ता देखे जा सकते हैं। गौरतलब हो कि सांसद, विधायक या फिर सरकार में बने पार्टी के मंत्री के सारे कार्यों का बागडोर और जनता तक का सीधा संवाद इन्हीं कार्यकर्ताओं के बदौलत स्पष्ट दिखता है और इसी को लेकर पार्टी विभिन्न प्रकोष्ठों का निर्माण कर एक जिम्मेदार पद वैसे कार्यकर्ता के ऊपर सौंपती है, जिसकी पूरी जवाबदेही का निर्वहन वह तय कर सके। इसी कड़ी में जदयू ने बिहार प्रदेश जदयू के प्रान्तीय नेता मो० वसीम कमाली को पुनः एक बार जदयू बुनकर प्रकोष्ठ, बिहार का प्रदेश उपाध्यक्ष बनाया है। सनद् रहे कि मो० वसीम कमाली ने उपाध्यक्ष बनाये जाने पर राष्ट्रीय अध्यक्ष सह मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, राष्ट्रीय महासचिव संगठन रामचन्द्र प्रसाद सिंह, प्रदेश अध्यक्ष वशिष्ठ नारायण सिंह एवं प्रदेश अध्यक्ष बुनकर प्रकोष्ठ राजेश पाल का शुक्रिया अदा किया है। वहीं माननीय मंत्री बीमा भारती, सासंद संतोष कुशवाहा एवं सीमांचल के कद्दावर नेत्री सह विधायक लेशी सिंह को साधुवाद दिया।

मो० वसीम कमाली　　मो० आजम रब्बानी

बताते चले कि जदयू बुनकर प्रकोष्ठ, बिहार के प्रदेश महासचिव मो० आजम रब्बानी ने बताया कि मो० वसीम कमाली, जनता दल जॉर्ज (1994) से ही नीतीश कुमार के साथ जुड़े हुए हैं और अब तक पार्टी ने उन्हे जो भी जिम्मेदारी दी है, उसे उन्होंने बखूबी निभाया है। वही पार्टी में रहकर पंचायत से प्रदेश तक की पूरी जिम्मेदारी उन्होंने निभाई है। इसे देखते हुए पार्टी ने पुनः एक बार मो० वसीम कमाली जी को दोबारा जदयू बुनकर प्रकोष्ठ, बिहार का प्रदेश उपाध्यक्ष बनाया है। ध्यान रहे कि मो० वसीम कमाली ने इसके लिए पार्टी नेतृत्व का बहुत-बहुत शुक्रिया कहा है। वही कमाली जी को प्रदेश उपाध्यक्ष, बुनकर प्रकोष्ठ बनने पर आशीष कुमार बब्बू, अविनाश कुमार सिंह, सुशील कुमार सिंह, गोपाल ठाकुर, मो० आजम रब्बानी, शम्भू मंडल, श्री प्रसाद महतो, डॉक्टर अकरामुल्ला खान, डॉ० मो० मरगूब आलम सहित अन्य नेता व कार्यकर्ता तथा समाजिक कार्यकर्ता एवं बुद्धिजीवी ने बधाई दी है। ●

दारोगा के हत्यारे नक्सली को एसटीएफ ने दबोचा

● धर्मेन्द्र सिंह

लखीसराय-मुंगेर डीआईजी मनु महाराज के निर्देश पर नक्सली एवं अपराधियों के धर पकड़ चलाये जा रहे अभियान के दौरान लखीसराय में एसटीएफ एवं जिला पुलिस की टीम को एक बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। एसटीएफ टीम ने 2013 में धनबाद-पटना इंटरसिटी एक्सप्रेस पर हुए हमले के मुख्य आरोपी कुख्यात नक्सली फंटूश यादव को धर-दबोचा है। 6 साल पहले 13 जुलाई 2013 को दोपहर में धनबाद से पटना आ रही इंटरसिटी एक्सप्रेस पर जमुई-लखीसराय रेल खण्ड के कुंदर हॉल्ट के पास तकरीबन 150 की संख्या में नक्सलियों ने ट्रेन में हमला बोला था। इस हमले में जमुई जिला के मलयपुर के रहने वाले बिहार पुलिस के 2009 बेच के प्रशिक्षु दारोगा अमित कुमार उर्फ बंटी सहित सीआरपीएफ जवान और एक यात्री की मौत हुई थी। मुंगेर डीआईजी मनु महाराज ने बताया कि पुलिस टीम ने धनबाद-पटना इंटरसिटी एक्सप्रेस पर नक्सली हमले के मुख्य आरोपी फंटूश यादव को गिरफ्तार किया है। उन्होंने आगे बताया कि लखीसराय जिले के चानन थाना इलाके से गिरफ्तार किया गया है। 16 जून 2013 को हुए इस हमले में 2 सुरक्षाकर्मियों और एक यात्री की मौत के साथ-साथ अन्य यात्री भी जख्मी हुए थे।

★ ट्रेन हाईजैक कर नक्सलियों ने इस बड़ी वारदात को अंजाम दिया था :- बताया जाता है कि ट्रेन में पहले से कुछ नक्सली सवार थे। भलुई और कुंडेर स्टेशन के बीच कुंदर हॉल्ट पर ट्रेन जैसे ही पहुंची नक्सलियों ने ट्रेन रोक दी थी। इस दौरान पहले से वहां तैनात नक्सलियों ने ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी। ट्रेन में मौजूद आरपीएसफ और आरपीएफ जवानों ने भी जवाबी फायरिंग शुरू की। इस बीच और नक्सली ट्रेन में घुस गए। जिन्होंने यात्रियों के साथ लूटपाट और मारपीट की। बताया जाता है कि जमुई में ही कुछ माओवादी ट्रेन के अलग-अलग डिब्बों में सवार हो गये थे। जैसे ही ट्रेन कुंधार हॉल्ट पहुंची, तय योजना के अनुसार माओवादियों ने बम फोड़ना शुरू कर दिया। जोरदार आवाज होने के बाद गाड़ी ठहर गयी। इसके बाद माओवादियों ने योजनाबद्ध तरीके से हमला कर दिया। अंधाधुंध गोलियां बरसाने वाले नक्सलियों में कई महिलाएं भी शामिल थीं। हमले का सामना करने के लिए एस्कार्ट पार्टी तनिक भी तैयार नहीं थी। माओवादी आरपीएफ जवानों के तीन हथियार लूट ले गये। यह हमला 16 जून 2013 को दोपहर 1 बजकर 20 मिनट पर हुआ। जिस जगह पर नक्सलियों ने ट्रेन पर हमला किया, वह जगह पटना से 150 किलोमीटर दूर था।100 से ज्यादा माओवादियों ने अचानक ट्रेन पर हमला कर दिया। हमले में 50 से ज्यादा महिलाएं भी थीं और उनके पास अत्याधुनिक हथियार भी थे। हमले में सैकड़ों राउंड गोलियां चलीं। ट्रेन में मौजूद आरपीएफ के जवानों ने नक्सलियों के हमले का जवाब देने के लिए फायरिंग की, पर वह ज्यादा देर तक नहीं चल पाई। बहरहाल, हमले में कुल पांच लोग घायल भी हुए थे। इस घटना में माओवादी तीन हथियार लूटने में कामयाब भी हुए थे। घटना के बाद बिहार और झारखंड की सीमा पर चौकसी तेज कर दी गयी है। वही घटना के बाद बिहार के 'पूर्व डीजीपी रहे अभयानंद' के निर्देश पर आसपास के जिलों को सतर्क कर नक्सलियों के खिलाफ आपरेशन तेज कर अर्द्धसैनिक बलों को नक्सलियों की धड़-पकड़ हेतु लगाया गया था।●

फिरौती के लिए मकान मालिक के बेटे का किया अपहरण

● **ओम प्रकाश**

सुखदेवनगर थाना क्षेत्र के जमुना नगर से अपहृत छात्र चंदन कुमार को पुलिस ने जयपुर के सांगानेर थाना क्षेत्र स्थित खजानों की ढ़ानी से रविवार को बरामद कर लिया है। पुलिस ने एक महिला समेत दोनों अपहरणकर्ता को भी गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी का नाम विवेकानंद सिंह है और संगीता है। विवेकानंद सिंह मूल रूप से बिहार के बक्सर का रहने वाला है। वर्तमान में वह अपने परिवार के लोगों के साथ सांगानेर थाना क्षेत्र स्थित खजानों की ढ़ानी में रह रहा था। हालांकि बच्चे को वह अपने घर से थोड़ी दूरी पर स्थित एक किराए के घर में छुपाकर रखा था। पुलिस ने अपहृत छात्र चंदन को दोनों आरोपियों के मोबाइल लोकेशन के आधार पर गिरफ्तार किया है। आरोपी विवेकानंद सिंह ने सांगानेर थाना प्रभारी नेमीचंद को पूछताछ के दौरान बताया है कि वह 15 दिसंबर को छात्र को बहला-फुसलाकर अपने साथ लेकर उसके घर से निकला था। 17 दिसंबर को छात्र को लेकर वह जयुपर पहुंच गया था। इसके बाद 18 दिसंबर को उसने अपहृत छात्र के पिता लालबाबू साव को फोन कर 10 लाख रुपए फिरौती देने की मांग की थी। आरोपी ने सांगानेर थाना प्रभारी को यह भी बताया है कि अगर 30 दिसंबर तक उसे पैसा

नहीं मिलता तो वो छात्र का गला काटकर हत्या कर देता। हालांकि इससे पहले ही पुलिस उसतक पहुंच गई और उसे गिरफ्तार कर लिया गया। अपहृत छात्र चंदन कुमार को रांची पुलिस जयपुर के सांगानेर थाना क्षेत्र स्थित खजानों की ढ़ानी से बरामद कर रांची तो लेकर आई लेकिन दोनों अपहरणकर्ता पुलिस को चकमा देकर बीच रास्ते से ही फरार हो गए। अपहृत छात्र चंदन ने बताया कि दोनों पुलिसकर्मी गहरी नींद में सो रहे थे। इसी दौरान ट्रेन जैसे ही मुगलसराय स्टेशन पर पहुंची, दोनों अपहरणकर्ता ट्रेन से उतरकर वहां से फरार हो गए। इसके बाद जब दोनों पुलिसकर्मियों की नींद खूली तो उनलोगों ने दोनों अपहरणकर्ताओं को खोजना शुरू किया। काफी खोज बीन के बाद भी दोनों के बारे में कुछ पता नही चल सका। इसके बाद ट्रेन स्टेशन से निकल पड़ी। बाद दोनों पुलिसकर्मी सिर्फ अपहृत बच्चे लेकर ही रांची पहुंचे।

अपहरणकर्ताओ के चंगुल से छूटा 12 वर्षीय छात्र चंदन कुमार ने पुलिस को बताया कि गेम खेलने के लिए एंड्रायड फोन देने की बात कहते हुए आरोपी विवेकानंद सिंह उसे घर से लेकर निकला था। उसे एंड्रायड फोन खरीद देने की बात कहते हुए बहला-फुसलाकर आरोपी अपने साथ ट्रेन से लेकर जयपुर चला गया। वहां जाने के बाद वह एक किराए के घर में उसे रखा था। खाना और नास्ता समय पर देता था लेकिन कमरा से बाहर कहीं भी नहीं जाने देता था। छात्र ने यह भी बताया कि जब वह अपने माता-पिता से फोन पर बात कराने की बात कही तो वह बात कराने से इंकार कर दिया। थोड़ी देर बाद बात कराने की बात कहते हुए वह किसी से बात नहीं कराता था। आरोपी विवेकानंद हमेशा रूम में ताला बंद कर रखता था ताकि वह बाहर ना जा सके। आरोपी के सामने रोते हुए बार-बार घर पहुंचाने की गुहार लगाता था छात्र,किन्तु आरोपी डांटकर करा देता था शांत । छात्र ने पुलिस को बताया है कि वह बार-बार आरोपी विवेकानंद सिंह के सामने रोते हुए घर पहुंचाने की गुहार लगाता था। हालांकि आरोपी कुछ भी नहीं सुनता था। जब वह जोर-जोर से रोने लगता था तो डांटते हुए चुप करा देता था। आरोपी के डांट और धमकी से डरकर वह चुप हो जाता था। वह लगातार वहां से भागने की फिराक में रहता था लेकिन सफलता नहीं मिल पा रही थी। रो-रोकर उसका बुरा हाल हो रहा था।

☞ **रोने पर सिमकार्ड निकालकर गेम खेलने के लिए देता था मोबाइल, इसके बाद भी चुप नहीं होने पर बच्चा के साथ करता था मारपीट :-** अपहृत छात्र चंदन ने बातचीत के दौरान बताया कि जब वह अपने मां-पिता से बात कराने की बात कहते हुए रोने लगाता था तो आरोपी विवेकानंद अपने मोबाइल से सिमकार्ड निकालकर उसे गेम खेलने के लिए मोबाइल दे देता था। इसके बाद भी जब वह चुप नहीं होता था तो आरोपी उसके साथ मारपीट करना शुरू कर देता था। पिटाई के डर से वह चुप हो जाता था। चंदन ने यह भी बताया कि आरोपी ने उसे एक कमरे में बंद कर पैर बांधकर रखता था। बच्चा जब बार-बार बंधा पैर खोलने की बात कहता तो आरोपी इधर-उधर की बाते करके उसे बहला-फुसला लेता था। आरोपी अपहृत छात्र से यह भी कहता था कि परेशान होने की जरूरत नहीं है, जल्द ही वह उसे उसके माता-पिता के पास पहुंचा देगा। अपहृत छात्र के अनुसार आरोपी महिला उसके साथ मारपीट नहीं करती थी। वह सिर्फ उसपर ध्यान रखती थी कि वह कही भाग ना पाए।

☞ **प्रेमिका के साथ किराए पर रहता था आरोपी, अपहृत छात्र को बताया था अपना बेटा :-** सांगानेर थाना प्रभारी नेमीचंद ने बताया कि आरोपी विवेकानंद अपने परिवार को छोड़कर

प्रेमिका के साथ किराए के घर में रहता था। जहां वह किराए पर घर लिया था, वहां अपहृत बच्चा को उसने अपना बेटा बताया था। आरोपी की प्रेमिका संगीता भी शादीशुदा है और उसके दो बच्चे हैं। वह अपने बच्चे और पति को छोड़कर विवेकानंद के साथ फरार हो गई थी । रांची के जमुना नगर स्थित लालबाबू की पत्नी मीणा देवी को भी आरोपी ने संगीता को अपनी पत्नी बताया था। हालांकि संगीता अपने पति को छोड़कर बिना शादी किए हुए ही आरोपी विवेकानंद के साथ रह रही है। बच्चे को अपहरण करने में संगीता भी विवेकानंद का भरपूर सहयोग कर रही थी। वह लगातार बच्चे पर नजर रखती थी और ध्यान रखती थी कि वह घर से भाग ना सके।

☞ **फोन कर मांगा था 10 लाख की रंगदारी, तीन लाख में सौदा हुआ था तय :-** अपहृत छात्र की मां मीणा देवी ने बताया कि 18 दिसंबर को आरोपी विवेकानंद सिंह उसके पति लालबाबू साव को फोन कर 10 लाख रुपए के फिरौती की मांग की थी। पैसा नहीं देने पर बच्चा को जान से मारने की बात कहते हुए बोला था कि अगर पैसा नहीं मिला तो चंदन को जान से मार दिया जाएगा। इसके बाद से परिजन काफी परेशान थे। अपहरणकर्ताओ ने बाद में भी कई बार फोन किया और लगातार पैसे की मांग करते रहे। मीणा देवी ने जब बताया कि वह इतना ज्यादा पैसा नहीं दे सकती है तो अपहर्ता ने पांच लाख और फिर तीन लाख रुपए देने की बात कही। अंतत: तीन लाख रुपए में सौदा तय हुआ। अपहर्ता विवेकानंद ने 30 दिसंबर तक पैसा नहीं मिलने पर छात्र चंदन का गला काटकर हत्या कर देने की बात कही थी। हालांकि इससे पहले ही पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया था।

☞ **घटना की पूरी कहानी, अपहृत बच्चे के पिता की जुबानी :-** अपहृत बच्चे के पिता लालबाबू साव ने घटना के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि 20 दिनों पहले महिला उनके घर पहुंची और उनकी पत्नी मीणा देवी के सामने अपनी परेशानी बताते हुए किराए पर कमरा देने की बात कही। मीणा देवी आरोपी महिला के झांसे में आ गई और उसे रहने के लिए एक कमरा दे दिया। इसके चार दिनों बाद एक युवक भी आ गया और घर में रहने लगा। पूछे जाने पर आरोपी महिला ने युवक का नाम विवेक बताते हुए उसे अपना पति बताया। इसके बाद दोनों साथ में रहने लगे। इस दौरान आरोपी युवक अक्सर उनके बच्चे से बातचीत करता था। 15 दिसंबर की सुबह 7 बजे आरोपी विवेक ने अचानक उनसे बताया कि पैसा लाने के लिए वह अपनी पत्नी को गांव भेज रहा है। पत्नी को छोड़ने जाने की बात कहते हुए वह घर से निकला। इस दौरान उसने उनके बेटे चंदन कुमार को आवाज लगाई और यह कहते हुए अपने साथ ले लिया कि थोड़ी देर में पत्नी को छोड़कर दोनों वापस घर लौट आएंगे। सुबह 9 बजे तक जब चंदन घर नहीं आया तो उनोने आरोपी विवेक को फोन लगाया। फोन करने पर उसने बताया कि बस आने में देर हो गई, एक घंटे में वे दोनों घर वापस आ रहे हैं। इसके बाद 10 बजे तक भी जब चंदन घर नहीं पहुंचा तो दुबारा फोन करने पर आरोपी का मोबाइल बंद बताने लगा। इसके बाद से आरोपी का फोन लगातार बंद बताने लगा। काफी खोजबीन के बाद भी चंदन के बारे में कहीं कुछ पता नहीं चला तो 16 दिसंबर की सुबह परिजनों ने घटना की जानकारी पुलिस को दी।

☞ **आरोपी होटल ले जाकर चंदन को खिलाता था समोसा, 20 दिनों में कर लिया था दोस्ती :-** अपहृत बच्चे की मां मीणा देवी ने बताया कि आरोपी युवक अक्सर उसके बेटे को समोसा खिलाने के लिए होटल ले जाता था। लगभग 20 दिनों में वह पूरी तरह से चंदन के साथ घुल-मिल गया था। चंदन भी स्कूल से आने के बाद ज्यादा समय उसी के साथ रहने लगा था। उनलोगों को जरा भी इस बात का एहसास होता कि आरोपी इस तरह की घटना का अंजाम देगा तो वह उसे अपने घर से निकाल बाहर करती। आरोपी युवक काम भी करने के लिए घर से कहीं नहीं जाता था। आरोपी पत्नी रेजा का काम करने की बात कहकर प्रतिदिन सुबह घर से निकलती थी। हालांकि वह कहां जाती थी और क्या काम करने जाती थी, इसकी जानकारी उन लोगों को नहीं है। मीणा देवी ने यह भी बताया कि आरोपी के पास चार मोबाइल नंबर था। घटना के बाद से चारो नंबर बंद बता रहा है। फिर उन्हें समझ आया कि उसके बेटे का अपहरण कर लिया गया है।

☞ **पैसे का अभाव में टेंपो बेचकर फिरौती देने को राजी हुई थी अपहृत छात्र की मां, उससे पहले ही पुलिस ने आरोपी को कर लिया गिरफ्तार :-** छात्र का अपहरण करने के बाद आरोपी विवेकानंद सिंह ने फोन कर 10 लाख रुपए रंगदारी की मांग की थी। अपहृत छात्र की मां मीणा देवी द्वारा पैसा नहीं होने की बात बताए जाने के बाद अपहरणकर्ताओ ने कहीं से भी पैसा लाकर देने की बात कही थी। इसके बाद अपहृत छात्र की मां मीणा देवी ने टेंपो बेचकर पैसा देने की बात कही जिसके बाद 3 लाख में फोन पर सौदा तय हुआ था। मीणा देवी ने बताया कि चार बार अपहरणकर्ताओं से फोन पर बातचीत हुई लेकिन कई बार आग्रह करने के बाद भी आरोपी ने चंदन से एक बार भी बात नहीं कराया। वह फोन पर लगातार रोते हुए अपने बेटे से बात कराने की गुहार लगाती रही लेकिन अपहरणकर्ता कुछ सुनने को तैयार नहीं था। अपहरणकर्ताओ ने 30 दिसंबर तक का समय देते हुए पैसा पहुंचाने की बात कही थी। 30 दिसंबर तक पैसा नहीं देने पर बच्चे का शव भेजने की बात कहते हुए फोन कट कर दिया था। इसके बाद अपहृत छात्र के परिजन काफी परेशान थे। ●

कोतवाली डीएसपी अजीत कुमार विमल की भूमिका अहम

अपहरणकर्ताओ को रास्ते से फरार होने की सूचना के बाद एसएसपी अनीश गुप्ता ने सिटी एसपी सौरभ को जांच कर रिपोर्ट सौंपने को कहा था। हालांकि कोतवाली डीएसपी अजीत कुमार विमल ने पूरी मामले को गंभीरता से लिया और फरार अपहरणकर्ताओ को टेक्निकल सेल के मदद से तीन दिनों के अंदर ही मुगलसराय स्टेशन से लगभग 60 किलोमीटर की दूरी से गिरफ्तार कर लिया। मालूम हो कि दोनों अपहरणकर्ता छात्र के घर में किराएदार बनकर 20 दिनों रहा था। इसके बाद 15 दिसंबर की सुबह बहला-फुसलाकर उसे घर से अपने साथ बाहर लेकर आया और अपहरण कर लिया था। काफी खोजबीन के बाद भी जब छात्र चंदन के बारे में कुछ जानकारी नहीं मिली थी तो उसके पिता ने 16 दिसंबर को घटना की जानकारी पुलिस को दी थी। इसके बाद पुलिस ने 17 दिसंबर को मामले में प्राथमिकी दर्ज कर बच्चे की बरामदगी में जुट गई थी।

करोड़ों रुपये के गबन का हुआ खुलासा

● ओम प्रकाश

एसबीआई और यूबीआई एटीएम में पैसा डालने के बजाय चार करोड़ सात लाख की धोखाधड़ी के केस में रांची की सदर पुलिस ने एसआईएस कैश सर्विस के सभी फर्जी आरोपियों को गिरफ्तार करते हुए मामले का खुलासा कर लिया है। जानकारी के मुताबिक एसआईएस के दो कर्मी जो ऑडिटर का काम करते हैं ,इन लोगों का काम एटीएम में कैश जमा करने का होता था। इन लोगों ने आखरी बार एटीएम मशीन में 13 दिसंबर को कैश जमा किया था और फरार हो गए थे। गौर करने वाली बात यह है कि एक कर्मचारी को दो महीने पहले और दूसरे को कुछ दिन पहले ही एसआईएस मैं कैश हैंडलिंग का काम संभालने के लिए रखा गया था। 18 दिसंबर को रांची के सदर थाने में एसआईएस कंपनी के असिस्टेंट मैनेजर कंचन ओझा द्वारा शिकायत दर्ज कराई थी। दो आदमी गणेश ठाकुर और शिवम एसआईएस के कॅश मैनेजमेंट सिस्टम में बहाल हुए और सात से चौदह तारीख के बीच इन लोगो के द्वारा चार करोड़ सात लाख रुपए का गबन कर लिया गया। उसके बाद यह लोग फरार हो गए। प्रारंभिक जांच के अनुसंधान मैं यह पाया गया कि उन दोनों लोगों को जो सर्टिफिकेट दिया गया था और स्थानीय पता उपलब्ध कराया गया था, स्थानीय मुखिया से जो सत्यापन कराया गया था, सभी के सभी फर्जी और जाली थे। इसके बाद सदर थाना की पुलिस इस निष्कर्ष पर पहुंची कि दोनों लोग फर्जी नाम पता पर बहाल हो करके एक साजिश के तहत इस घटना को अंजाम दिया। बाद में यह भी ज्ञात हुआ कि वे दोनों लोग एक दूसरे से पूर्व में भी परिचित थे। इसके बाद से यह निष्कर्ष निकला यह पूरी तरह से एक आपराधिक षड्यंत्र का मामला था। सदर पुलिस सत्यापन के लिए इन लोगों के घरों पर गई लेकिन दोनों के घर फर्जी निकले। अनुसंधान के क्रम में यह जानकारी मिली की एक लड़का जो कि गणेश ठाकुर के रूप में काम करता था, उसका असली नाम विपिन कुमार था। सदर पुलिस द्वारा विपिन को टारगेट करने के बाद विपिन की जानकारी इकट्ठा करने के क्रम में मालूम हुआ कि विपिन दिल्ली में है और दिल्ली से आमुख तारीख को फ्लाइट से आने वाला है। फिर उसके बाद वरीय पदाधिकारियों के द्वारा तीन चार टीम का गठन किया गया टीम में टेक्निकल सेल के लोग और सदर थाने की टीम थी। इसी क्रम में एक टीम दिल्ली चली गई और एयरपोर्ट में विपिन के आने की सूचना के दिन रेकी किया और उसको गिरफ्तार कर लिया। उसकी तलाशी ली गई। तलाशी के दौरान उसके पास कुछ नकदी मिले। फिर कड़ाई से पूछताछ के क्रम में उसने उस जगह के बारे में बताया जहां उसने एक मोटी रकम छिपा रखी थी । इसके बाद सदर पुलिस की टीम ने बिना क्षण गवाएं एक बहुत बड़ी रकम लगभग दो करोड़ दस लाख रुपए बरामद किए। फिर उसके बताए अनुसार रांची स्थित उसके किराए के आवास से भी करीब चार लाख रुपये बरामद किए गए। फिर पूछताछ के क्रम में उसके द्वारा उसके दूसरे सहयोगी जिसका नाम सुभाष रजक है जो कि सहरसा क्षेत्र में रहता है, उसकी गिरफ्तारी के लिये पुलिस ने छापेमरी की, लेकिन पता चला वह पटना भाग गया है। सदर पुलिस की टीम ने फिर पटना में उसके आवास पर छापेमारी किया। उसी क्रम में विपिन की निशानदेही पर पटना में राजेश नाम का लड़का पकड़ा गया। आपकी जानकारी के लिए बता दूं कि यह राजेश वही आदमी है जिसने इन दोनों को फर्जी तरीके से बहाल कराया था। राजेश के पास से भी उसकी निशानदेही पर उसके घर पर से लगभग साढ़े तैंतीस लाख रुपए बरामद किये गए। फिर विपिन और राजेश के बताए अनुसार उनके बताए घर पर रेड किया गया, जहां पर सुभाष और सुरेश दोनों मौजूद थे। उन दोनों को गिरफ्तार करने के बाद उन दोनों के पास से नौ लाख रुपए बरामद हुए। इस तरह से कांड में संलिप्त सभी अभियुक्तों की जानकारी एवम गिरफ्तारी पुलिस ने कर ली। कांड का उद्भेदन भी सदर पुलिस ने पूरी तरह से कर लिया गबन किए गए रुपए का अधिकांश भाग पुलिस ने बरामद कर लिया। रांची की सदर पुलिस की या बहुत बड़ी उपलब्धि है। इतनी बड़ी राशि की रिकवरी अभी तक कहीं भी किसी भी थाने से नहीं हुई है। यह बहुत बड़ी रिकवरी है। थाना प्रभारी वेंकटेश कुमार ने बताया कि उन्हें

वेंकेटेश कुमार
सदर थाना प्रभारी

वरीय पदाधिकारियों का मार्गदर्शन मिला। वरीय पदाधिकारियों द्वारा जो टीम का गठन किया गया था वह बहुत ही सराहनीय रहा। थाना प्रभारी वेंकटेश कुमार ने बिहार के पाटलिपुत्र थाना प्रभारी कमलेश्वर राय के योगदान और सराहनीय भूमिका के लिए उन्हें भी तहे दिल से धन्यवाद दिया है। राजेश रहने वाला सुपौल का है।

वर्तमान में वह पटना में घर लेकर आ रहा था। आदिखतम राशि दो करोड़ संता वन लाख की राशि बरामद कर ली गई है। कुछ राशि आरोपियों ने बैंक के माध्यम से भी जमा कराया है। आरोपियों के तमाम बैंक खातों की जाँच सदर पुलिस कर रही है, जिनमे गबन के रुपये जमा किये गए है। रुपये की जानकारी मिलते ही उन सभी खाते को सीज कर दिए जाएंगे। सदर पुलिस इस पर भी ध्यान देगी कि कही इन लोगों ने अपने किसी सगे संबंधियों के नाम से भी खाते खुलवा रखे हैं एवं उसमें गमन की राशि जमा किए हैं। इस पर सदर पुलिस की विशेष नजर रहेगी। जिनके पास भी जवान की राशि मिल जाएगी उनके भी खाते सीज कर दिए जाएंगे। थाना प्रभारी बँकटेश कुमार ने बताया मामले का उद्भेदन शुरुआती पांच से छः दिनों में ही हो गया था।

मामले के मुख्य आरोपी विपिन की जानकारी उन्हें शुरुआत में ही हो गई थी। इस पूरे कांड और गिरफ्तारी से लेकर राशि की बरामदगी तक दो सप्ताह से कम का समय लगा।

जेल गए अभियुक्तों के नाम :- विपिन कुमार जो गणेश ठाकुर के नाम पर नौकरी कर रहा था। दूसरा सुभाष रजक जो की शिवम कुमार के नाम से नौकरी कर रहा था। तीसरा राजेश मेहता और चौथा सुरेश मेहता है। इनके पास से आठ एटीएम कार्ड पांच मोबाइल फोन फर्जी आधार कार्ड एवं अन्य दस्तावेज बरामद किए गए हैं। छापामारी दल में सदर थाना प्रभारी वेंकटेश कुमार राजकुमार यादव, विकास कुमार, प्रभांशु कुमार खेल गांव थाना से रजनीकांत, तकनीकी शाखा से अजमत अंसारी और अभिषेक कुमार शामिल थे।●

31 की रात बनी खूनी रात

● **ओम प्रकाश**

राँची के चुटिया थाना क्षेत्र के पटेल चौक के पास तेज रफ्तार कार ने सात लोगों को कुचला दिया। हादसे में दो लोगो की मौत हो गयी, जबकि पांच लोग घायल हो गये। घायलों को गंभीर हालत में रिम्स में भर्ती कराया गया। घटना 31 दिसंबर देर रात की है। पुलिस सूत्रों के अनुसार कुछ लोग होटल से काम खत्म कर घर लौट रहे थे। तभी पटेल चौक के पास एक तेज रफ्तार कार ने इन लोगों को अपनी चपेट में ले लिया। बताया गया है कि कार चालक नशे में धुत था। जिससे कारण उसने कार पर से अपना नियंत्रण खो दिया और सात लोगों को अपनी चपेट में ले लिया। कार की टक्कर से एक व्यक्ति की मौत मौके पर हो गई।जबकि दूसरे व्यक्ति की मौत कुछ देर तड़पने के बाद हुए। अन्य घायलों की स्थिति गंभीर बताई जा रही है। चुटिया थाना प्रभारी रवि ठाकुर ने बताया कि कार को जब्त कर लिया गया है कार चालक का नाम जीतन बेदी है जो कि सुखदेवनगर थानाक्षेत्र का रहने वाला है। उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। घटना के बाद आक्रोशित लोगों ने चुटिया थाने का घेराव किया। जहां लोगों ने मृतक के परिजनों को मुआवजा देने की मांग की। थाने के बाहर लगभग दो घंटे हंगामे के बाद पुलिस दोनों पक्षों के बीच समझौता कराने में सफल हुई। इसके तहत आरोपी पक्ष मृतक युवकों के परिवारों को डेढ़-डेढ़ लाख रुपया देगा। साथ ही घायलों का बेहतर इलाज पे जो भी खर्च होगा वो उसका भागीदारी होगा। थाना प्रभारी रवि ठाकुर ने बताया कि लोग मुआवजे को लेकर थाना पहुंचे थे। दोनों पक्षों ने आपस में बैठकर समझौता किया। पहले बात पांच लाख देने पर तय हुई लेकिन फिर उच्च नीच करते हुए डेढ़ लाख प्रति मृत व्यक्ति पर तय हुई। मतलब एक व्यक्ति की जान की कीमत डेढ़ लाख रुपए तय की गई। जानकारी के लिए बात दे कि 31 दिसंबर की रात रांची के चुटिया थाना क्षेत्र के पटेल चौक के पास तेज रफ्तार कार ने आठ लोगों को कुचला दिया था। हादसे में दो लोगों की मौत हो गयी थी, जबकि छह लोग घायल हो गये थे। घायलों का रिम्स में इलाज चल रहा है। घटना में मृतकों की शिनाख्त चुटूपालू निवासी बादल करमाली (19) और सिकिदरी के ग्राम लाधो निवासी अजय भोक्ता (27) के रूप में की गयी थी। घायलों में प्रदीप करमाली, दिलीप करमाली, सुमीत करमाली, सोनू करमाली के अलावा दो अन्य लोग शामिल है। दुर्घटना के शिकार सभी लोग कैटरिंग का काम करके चुटिया स्थित घर लौट रहे थे। पटेल चौक के समीप चाय की दुकान में ये सभी चाय पी रहे थे। इसी दौरान वहां खड़े कार के चालक ने अपनी गाड़ी को बैक करने के दौरान कार के पीछे खड़ी स्कुटी व एक बाइक को अपनी चपेट में ले लिया। इसके बाद लोगों ने शोर मचाया जिसके कारण डरकर चालक कार लेकर भागने के क्रम में चाय पी रहे आठ-दस लोगों को रौंद दिया। जिसमें दो लोगों की मौत हो गयी। घटना के बाद स्थानीय लोगों ने कार चालक को पकड़कर उसकी जमकर धुनाई कर दी। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और चालक जतीन बेदी को गिरफ्तार कर लिया। वह सुखदेवनगर थाना क्षेत्र के रिलायंस फ्रेश के समीप का रहने वाला है। वह बेंगलुरू में एलायंस यूनिवर्सिटी में पढ़ाई कर रहा है। उसके पिता अमरजीत बेदी कपड़े के बड़े कारोबारी हैं। पुलिस ने कार को भी जब्त कर लिया था। चालक जतीन नशे में था। पुलिस ने बताया कि आरोपी के मुताबिक कार का ब्रेक फेल हो गया था, जिस वजह से दुर्घटना हुई, लेकिन मेडिकल जांच में शराब का सेवन करने की बात सामने आयी। मामले में पुलिस ने कार्रवाई करते हुए आरोपी जतीन को न्यायालय में प्रस्तुत किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया । गौर करने वाली बात ये है कि नए साल के आगाज से पहले रांची जिला प्रशासन ने यह दावा किया था कि जो भी चालक नशे में वाहन चलाते पकड़ा जाएगा उसकी गाड़ी जप्त की जाएगी।वाहन चालकों की जांच ब्रेथ एनालाइजर से की जाएगी लेकिन 31 दिसंबर की रात एक भी वाहन चालकों की ब्रेत्थ एनालाइजर से जांच नहीं की गई और ना ही कोई वाहन जप्त किए गए। नतीजा यह हुआ कि वाहन चालक बेखौफ होकर नशे में वाहन चलाते रहे और जिसके बाद 31 दिसंबर की रात आम लोगों के लिए खूनी रात साबित हुई और कुछ लोगों की जान तक चली गई। ●

निर्भया को मिला इंसाफ
दुष्कर्मी हत्यारे को फांसी की सजा

● ओम प्रकाश/ब्रजेश कुमार मिश्रा

राजधानी के चर्चित बीटेक छात्रा हत्याकांड में शनिवार को सीबीआई के विशेष न्यायाधीश अनिल कुमार मिश्रा की अदालत ने दोषी करार दिए गए राहुल राज को फांसी की सजा सुनाई है। सीबीआई के विशेष न्यायाधीश अनिल कुमार मिश्रा की अदालत ने राहुल को शुक्रवार को इस मामले में दोषी करार दिया था। इस मामले में अदालत ने सिर्फ 16 कार्य दिवस में 30 गवाहों के बयान दर्ज कर सुनवाई की प्रक्रिया पूरी की। दोनों पक्षों की बहस महज दो दिन में पूरी की गई। आरोपित की ओर से बचाव में कोई गवाह पेश नहीं किया गया। सीबीआई के अधिवक्ता राकेश प्रसाद ने 25 अक्टूबर से 8 नवम्बर के बीच 30 गवाहों का बयान दर्ज कराया। उल्लेखनीय है कि सीबीआई ने राहुल राज को लखनऊ जेल से हिरासत में लेकर रांची आई थी। दोषी ने लखनऊ में भी दुष्कर्म किया था और गिरफ्तारी के बाद वहां की जेल में बंद था। सीबीआई ने 10 दिनों की रिमांड पर लेकर उससे पूछताछ की थी। जांच अधिकारी ने 19 सितम्बर को चार्जशीट दाखिल की थी। सीबीआई 23 वर्षीय आरोपित को लखनऊ जेल से प्रोडक्शन वारंट पर 22 जून को रांची लेकर पहुंची थी। इसके बाद उसे बिरसा मुंडा जेल भेज दिया गया था।

☞ **क्या है पूरा मामला** :- रांची के सदर थाना क्षेत्र के बूटी बस्ती में 16 दिसम्बर 2016 की रात बीटेक छात्रा के साथ हुए दुष्कर्म के बाद नृशंस तरीके से उसकी हत्या कर दी गई थी। रांची निर्भया कांड में आरोपी राहुल रॉय की गिरफ्तारी के बाद उम्मीद की जा रही थी कि इस घिनौने कांड का पर्दाफाश होगा. लेकिन ये राज्य में ऐसी मर्डर मिस्ट्री थी, जो अखबारों की सुर्खियां तो बनीं रही पर राज्य की जांच एजेंसियां मामले का खुलासा कर पाने में असमर्थ रही। इस बहुचर्चित हत्याकांड का खुलासा करने में राज्य की पुलिस और सीआईडी असफल रही है। जहां राजधानी रांची में हुए बहुचर्चित निर्भया हत्याकांड में झारखंड पुलिस और सीआइडी के हाथ कुछ नहीं लगा और दोनों ने अपने हाथ खड़े कर दिए। इसके बाद जांच की जिम्मेवारी सीबीआई को दी गई और सीबीआइ ने एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। 16 दिसंबर 2016 को बूटी बस्ती में रेप के बाद छात्रा निर्भया की हुई निर्मम हत्या कर दी गई थी। बूटी बस्ती में रहकर बीटेक की पढ़ाई करने वाली छात्रा की दुष्कर्म के बाद हत्या कर दी गयी थी। फिर उसके शव को तेजाब से जलाने का प्रयास किया गया था। राज्य की जांच एजेंसियों की असफलता के बाद निर्भया हत्याकांड मामले की जांच की जिम्मेदारी सीबीआई को सौंपी गई थी। जिसके बाद सीबीआई ने निर्भया हत्याकांड के आरोपी राहुल रॉय को गिरफ्तार कर लिया था। रांची की निर्भया कांड में कई राज जाने के लिए गिरफ्तार किये गये आरोपी राहुल रॉय को सीबीआई ने पांच दिनों की रिमांड पर लिया। सीबीआई की टीम ने राहुल से यह जानने का प्रयास किया ,कि आखिर घटना को उसने किस तरह से अंजाम दिया था। घटना में और कौन-कौन लोग शामिल थे। राहुल को रिमांड पर लेने के लिए इस मामले के जांच अधिकारी परवेज आलम ने सीबीआई कोर्ट में आवेदन भी दे दिया था. उल्लेखनीय है कि निर्भया हत्याकांड में धारा 376, 511 और 302 के तहत मामला दर्ज किया गया था.

रांची के निर्भया कांड मामले में सीबीआई की विशेष कोर्ट में आरोपी राहुल रॉय को अनुज कुमार गुड़िया की अदालत में पेश किया गया। कोर्ट में सीबीआई ने आरोपी की न्यायिक हिरासत को नौ दिन और बढ़ाए जाने की मांग की। सीबीआई की टीम ने बीटेक के छात्र राहुल रॉय को 22 जून को लखनऊ से गिरफ्तार किया था। इसके बाद आरोपी को सीबीआई कोर्ट में पेश किया गया था। जहां से कोर्ट ने उसे पांच दिन के रिमांड पर भेज दिया था। हालांकि सीबीआई ने कोर्ट से 14 दिन की रिमांड के लिए आवेदन

जानिए कब-क्या हुआ था :-

☞ 16 दिसंबर 2016 :- सुबह आठ बजे इस हत्याकांड के बारे में पुलिस को सूचना मिली फिर जांच शुरू की गई।

☞ 17 दिसंबर 2016 :- शव का अंतिम संस्कार किया गया. शक के आधार पर छह युवकों को हिरासत में लिया गया फिर पूछताछ कर छोड़ दिया गया था।

☞ 18 दिसंबर 2016 :- फॉरेंसिक टीम ने घटनास्थल की सूक्ष्म जांच की। शहर में इस हत्याकांड को लेकर लोगों ने विरोध-प्रदर्शन किया और कैंडल मार्च निकाला।

☞ 19 दिसंबर 2016 :- एक हजार छात्रों ने बूटी मोड़ चौराहे को चार घंटे तक जाम किया। पुलिस ने फिर चार को हिरासत में लिया, लेकिन नतीजा कुछ नहीं निकला था।

☞ 20 दिसंबर 2016 :- पुलिस का दावा मामले का शीघ्र खुलासा कर लेंगे।थोड़ा वक्त जरूर लगेगा, साक्ष्य जुटाए जा रहे हैं।

☞ 21 दिसंबर 2016 :- निर्भया के कॉलेज जाकर पुलिस ने उसकी सहेलियों से जानकारी ली थी।

☞ 22 दिसंबर 2016 :- निर्भया को इंसाफ दिलाने के लिए फिर सड़क पर उतरे लोग।

☞ 22 जून 2019 :- निर्भया हत्याकांड के ढाई साल बीत जाने के बाद सीबीआइ की टीम ने बीटेक के छात्र राहुल रॉय को गिरफ्तार किया।

☞ 24 जून 2019 :- सीबीआइ की टीम ने निर्भया हत्याकांड के आरोपी राहुल रॉय को 5 दिनों की रिमांड पर लिया। रिमांड पर लेकर पूछताछ में घटना की परत खुलती चली गई।

☞ 13 सितंबर 2019 :- सीबीआई ने चार्ज शीट दाखिल की।

☞ 20 दिसंबर 2019 :- आरोपी दोषी करार। 21 दिसंबर 2019 : आरोपी को फांसी की सजा सुनाई गई।

दिया था। रिमांड अवधि पूरी होने के बाद आरोपी राहुल को फिर से कोर्ट में पेश किया गया। 16 दिसम्बर 2016 को रांची स्थित बूटी बस्ती में एक इंजीनियरिंग की छात्रा की रेप के बाद जिंदा जलाकर हत्या कर दी गई थी। इस मामले की जांच सीबीआई को दी गई थी। नालंदा जिले के घुरा गांव निवासी आरोपी राहुल राज उर्फ अंकित उर्फ आर्यन उर्फ रॉकी राज (23) को सीबीआई ने लखनऊ जेल से हिरासत में लिया था, जहां वह दुष्कर्म के एक केस में बंद था। इस मामले की जांच की जिम्मेदारी सीबीआई लखनऊ की एंटी करप्शन ब्यूरो के डीएसपी परवेज आलम कर रहे थे। सितम्बर 2016 में राहुल नालंदा से भागकर बूटी बस्ती पहुंचा था। उसने पीड़िता के घर के पास स्थित दुर्गा मंदिर परिसर में एक कमरा रहने के लिए लिया था राहुल रात में ऑटो चलाता था। राहुल बूटी बस्ती में रहने के दौरान वहां रहने वाली लड़कियों पर नजर रखता था। घटना वाले दिन राहुल ने मृतक छात्रा को अकेला पाया और उसके घर मे घुस गया। घटना को अंजाम देने से पहले राहुल ने रात 10 बजे ही अपना मोबाइल स्विच ऑफ कर दिया जो अगले दिन 10 बजे तक बंद था। आरोपित राहुल के दोस्त अक्षय कुमार ने गवाही में बताया था कि घटना के कुछ घंटों बाद उसे लेकर राहुल मौके पर पहुंचा था। उस समय युवक के घर के बाहर भीड़ लगी हुई थी। घटना की शाम राहुल पटना चला गया था। वहां से फोन कर पुलिसिया कार्रवाई की जानकारी लेता था। उसने बताया कि घटना के कुछ दिनों पहले आरोपित राहुल बिहार के नालंदा से रांची आने पर उसे एक किराए का रूम दिलाने के लिए कहा था। रूम नहीं मिलने पर मोहल्ले के ही एक मंदिर के पीछे वाले कमरे में स्थाई रूप से रहने की व्यवस्था करा दी थी। मंदिर में रहने के दौरान मोहल्ले के बच्चों से लड़की के बारे में वह अक्सर पूछता था। इस मामले में बीटेक छात्रा की दो बहनों ने अदालत को बताया था कि घटना के कुछ दिन पहले आरोपी राहुल किराए का कमरा लेने के लिए उसके घर आया था। परिवार वालों ने लड़के को कमरा देने से मना कर दिया था। उसी दिन के बाद से कई बार ऐहसास हुआ था कि राहुल उसकी बहन का पीछा कर रहा है। घटना से पहले घर के आसपास उसे घूमते हुए भी देखा गया था लेकिन घटना के बाद से उसे कभी नहीं देखा गया। जांच के दौरान सीबीआई को पता चला कि घटना से दो-तीन माह पूर्व दुर्गा मंदिर के कमरे में राहुल नाम का युवक रुका था जो इस घटना के बाद से लापता है। सीबीआई की टीम मंदिर के एक युवक बंटी से मिली जिसने राहुल के बारे में जानकारी दी। फिर सीबीआई की टीम राहुल के गांव धुरागांव पहुंची। आरोपित के माता-पिता के खून के नमूने लेकर जांच के लिए भेज दिया। जांच के दौरान छात्रा के शरीर पर पाए गए स्पर्म का डीएनए टेस्ट कराया गया था। इस डीएनए टेस्ट की रिपोर्ट से आरोपी छात्र के माता-पिता का डीएनए टेस्ट रिपोर्ट से मिलान कराया गया था। पिता के डीएनए टेस्ट से मिलान नहीं हुआ। लेकिन मां के डीएनए रिपोर्ट से स्पर्म का डीएनए रिपोर्ट का मिलान हो गया। सीबीआई ने इसी सबूत के आधार पर राहुल रॉय को पकड़ा। राहुल पर इसके अलावा दुष्कर्म और हत्या के दो और मामले लखनऊ कोर्ट में चल रहे हैं। राहुल का आपराधिक इतिहास रहा है। तीन साल पहले वह अपने चाचा के ब्रह्मभोज में शामिल होने पेरोल पर अपने गांव आया था। रात में सभी पुलिसकर्मियों को शराब पिलाकर वह भाग निकला। पटना पुलिस ने एकंगरसराय थाने में केस दर्ज किया था।

☞ **सीआईडी को भी नहीं मिली थी सफलता** :- रांची पुलिस के साथ संयुक्त रूप से जांच कर रही सीआईडी को भी इस मामले में कुछ खास सफलता नहीं मिल पायी थी. जिसके बाद भारी जनदबाव को देखते हुए राज्य के मुख्यमंत्री रघुवर दास ने सीबीआइ जांच की अनुशंसा कर दी थी। सीएम की घोषणा के एक साल बीतने के बाद भी इस केस को सीबीआई ने टेकओवर नहीं किया था। राज्य सरकार से सीबीआई को तीन बार लिखित और कम से कम पांच बार मौखिक रूप से कहा जा चुका था कि इस मामले की जांच शुरू करें। लेकिन इसके बावजूद टेक्निकल फॉर्मेट में डेटा रिसीव नहीं होने के कारण सीबीआई ने इस मामले को अपने हाथ में लिया ही नहीं था।

☞ **28 मार्च 2018 को सीबीआई ने दर्ज किया था मामला** :- घटना के करीब एक साल बाद सीबीआई ने मामला दर्ज किया था। निर्भया हत्याकांड में सीआइडी से पहले घटना की जांच जिला पुलिस ने शुरू की थी। लेकिन कुछ हासिल नहीं हो पाने के कारण एसआईटी गठित की गयी थी। एसआईटी के साथ-साथ सीआईडी ने भी समानांतर जांच शुरू की थी। कोर्ट के आदेश पर कई संदिग्धों की डीएनए जांच भी कराई गयी थी। घटना स्थल से पुलिस को जितने साक्ष्य मिले, सभी की एफएसएल जांच भी हुई थी। राज्य सरकार की सीबीआई जांच की अनुशंसा के एक साल बाद सीबीआइ ने 28 मार्च 2018 को मामला दर्ज किया. तब से उम्मीद जतायी जा रही थी कि बूटी बस्ती की बीटेक छात्रा की हत्या के रहस्य से जल्द पर्दा उठ जाएगा।

☞ **दुष्कर्म के बाद की गयी थी हत्या** :- बता दें कि 16 दिसंबर 2016 को रांची की बूटी बस्ती की रहने वाली बीटेक की छात्रा के साथ कुछ युवकों ने पहले उसे अपने हवस का शिकार बनाया.फिर उसकी हत्या कर शव को तेजाब से जलाने का प्रयास किया था। इस घटना ने राजधानी रांची को हिला कर रख दिया था। घटना के विरोध में स्कूली बच्चों से लेकर शहरवासी सड़कों पर उतरे थे। कई जगह इसके विरोध में कैंडल मार्च भी निकाला गया था। ●

कानूनी सलाह

शिवानंद गिरि
(अधिवक्ता)
Ph.- 9308454485
7004408851
E-mail :-
shivanandgiri5@gmail.com

☆ पॉक्सो कानून क्या है? यह कब और क्यों लागू हुआ?

पॉक्सो का पूरा नाम "प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रेन फ्रॉम सेक्सुअल ऑफेंस" है, जिसका हिंदी में अर्थ लैंगिक अपराधो से बालको का संरक्षण है। वर्तमान युग में मासूम एवं नाबालिग बच्चो के साथ रेप की घटनाये बढती जा रही है , लोग जगह जगह प्रदर्शन कर रहे है, बच्चों के साथ आए दिन यौन अपराधों की खबरें समाज को शर्मसार करती हैं, इस तरह के मामलों की बढ़ती संख्या देखकर सरकार ने वर्ष 2012 में यह विशेष कानून बनाया था, जो बच्चों को छेड़खानी, बलात्कार और कुकर्म जैसे मामलों से सुरक्षा प्रदान करता है। इस कानून से पहले भारत में यौन अपराधों के लिए कोई अलग से कानून नहीं था, इस कानून की खास बात यह है कि भारतीय दण्ड संहिता अधिनियम 1860 के अंतर्गत केवल पुरुष ही बलात्कार का दोषी माना जाता था, लेकिन पॉक्सो एक्ट में लड़का और लड़की का अपराध समान माना गया है, और दोनों के लिए सुरक्षा प्रदान की गयी है, अतः बालक के उचित विकास के लिए यह आवश्यक हैं कि प्रत्येक व्यक्ति द्वारा नाबालिक बच्चो की गोपनीयता के अधिकार का सम्मान किया जाये एवं सुरक्षा प्रदान की जाए, जिससे बालक के शारीरिक स्वास्थय, भावात्मक और बौद्धिक क्षमता का विकास किया जा सके।

☆ पॉक्सो कानून में अपराधो की सुनवाई किस प्रकार की जाती है?

पॉक्सो कनून के तहत सभी अपराधों की सुनवाई, एक विशेष न्यायालय द्वारा बंद कमरे में कैमरे के सामने बच्चे के माता पिता या जिन लोगों पर बच्चा भरोसा करता है, उनकी उपस्थिति में होती है, और इस दौरान बच्चे की पहचान गुप्त रखी जाती है। यदि पीड़ित बच्चा विकलांग है या मानसिक रूप से या शारीरिक रूप से बीमार है, तो विशेष अदालत को उसकी गवाही को रिकॉर्ड करने या किसी अन्य उद्येश्य के लिए अनुवादक या विशेष शिक्षक की सहायता लेनी होती है।

☆ पॉक्सो कानून में कौन से अपराध शामिल है और इन अपराधो के लिए कितनी सजा का प्रावधान है?

18 साल से कम उम्र के नाबालिग बच्चों के साथ किया गया किसी भी तरह का यौन व्यवहार इस कानून के अन्तर्गत आता है, जिसके तहत नाबालिग बच्चों के साथ सेक्सुअल असाल्ट ,सेक्सुअल हेरास्मेंट, और पोर्न ग्राफी जैसे अपराध शामिल है, इन अपराधो से सुरक्षा के लिए इस कानून के तहत अलग- अलग अपराध के लिए अलग-अलग सजा और जुर्माना तय किया गया हैं।

पोक्सो कानून की मुख्य धाराए :- इस कानून के अंतर्गत किये गये अपराध सजा एवं जुर्माने का प्रावधान धारा 3 व 4 मे किया गया है। धारा 3 के के तहत प्रवेशन लैंगिक हमला को परिभाषित किया गया है, जिसके तहत अगर कोई व्यक्ति किसी बच्चे के शरीर के किसी भी पार्ट में प्राइवेट पार्ट डालता है, या बच्चे के प्राइवेट पार्ट में कोई चीज डालता है या बच्चे को ऐसा करने के लिए कहता है तथा बच्चे के साथ दुष्कर्म किया गया है तो यह धारा-3 के तहत अपराध होगा। धारा 4 के अनुसार 7 साल से लेकर उम्रकेद की सजा तथा जुर्माने का प्रावधान है। धारा 6 धारा 6 के तहत उन मामलों को शामिल किया जाता है जिनमें बच्चों को दुष्कर्म या कुकर्म के बाद गम्भीर चोट पहुंचाई गई हो या जिनमें बच्चो के साथ लैंगिक हमला किया गया हो, धारा 6 के अनुसार 10 साल से लेकर उम्रकैद तक की सजा और साथ ही जुर्माना भी लगाया जा सकता है।

धारा 7 व 8 :- धारा 7 के तहत उन मामलों को शामिल किया जाता है, जिसमें बच्चों के गुप्तांग के साथ छेड़छाड़ की गई हो । धारा 8 के अनुसार इसमें दोष सिद्ध होने पर 3 से 5 साल तक की सजा और जुर्माना भी हो सकता है।

धारा-11 व 12 :- धारा 11 के तहत उन सेक्सुअल हैरासमेंट को परिभाषित किया गया है, जिसके तहत अगर कोई व्यक्ति बच्चों को गलत नियत छूता है या सेक्सुअल हरकतें करता है, अश्लील प्रयोजनों के लिए एक बच्चे को लुभाता है या उसे पोर्नोग्राफी दिखाता है। धारा 12 के अनुसार दोष सिद्ध होने पर 3 साल तक की सजा और जुर्माना भी हो सकता है।

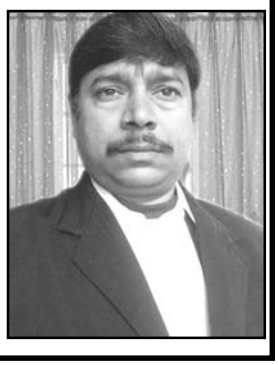

☆ पॉक्सो में नये संसोधन के बाद क्या बदलाव हुए?

अप्रैल 2018 में पॉक्सो एक्ट में संशोधन के लिए कैबिनेट की मंजूरी के बाद इन मामलों में सजा के प्रावधान और भी सख्त कर दिए गये है, जिसमें 12 साल से छोटी बच्ची के साथ रेप पर फांसी की सजा का प्रावधान किया गया है। 2018 में किये गये संसोधन में 16 साल से कम उम्र की बच्चियों से रेप के मामले में सजा 10 साल से बढाकर 20 साल कर दी गयी है। नए संसोधन के अनुसार पोक्सो के मामले में अब किसी दोषी व्यक्ति को अग्रिम जमानत (Anticipatory bail) भी नहीं मिलेगी, दोषी व्यक्ति को सरेंडर करके जेल जाना होगा, तथा भारतीय दण्ड संहिता की धारा 376, 376, 376, 376 के अनुसार रेप मामले में बेल पर सुनवाई से पहले कोर्ट को पब्लिक प्रोसिक्यूटर और पीड़िता पक्ष को 15 दिन का नोटिस देना होगा।

☆ पॉक्सो के नए कानून में जांच व सुनवाई की समय सीमा कितनी होगी?

पॉक्सो के नए कानून में जांच व सुनवाई की समय सीमा तय कर दी गयी है जिसके तहत रेप के हर मामले की जांच किसी भी हाल में 2 महीने के अंदर पूरी की जाएगी, रेप मामलों की सुनवाई भी 2 महीने के अंदर पूरी कर ली जाएगी, तथा रेप मामलों में अपील और अन्य सुनवाई के लिए अधिकतम छह महीने का वक्त दिया जाएगा।

☆ पॉक्सो कानून में हुए संसोधन के बाद यौन अपराधो पर कितनी रोक लगी है?

पॉक्सो के अंतर्गत बच्चों के खिलाफ यौन अपराध के बहुत से मामले 2012 से 2016 के बीच दर्ज किये गए हैं, इसमें कुछ मामले अभी भी कोर्ट में लंबित पड़े हुए है जबकि अपराधी को सजा मिलने की दर बहुत कम है, जो कि अपराधों को रोकने के लिए सक्षम नहीं है, हालाँकि सरकार के 2018 के संसोधन से किये गये बदलाव व फांसी की सजा के प्रावधान से इन अपराधो पर कुछ हद तक अंकुश लगा है, लेकिन सरकार को इस एक्ट में और जरूरी सुधार करने होंगे ताकि पीड़ित को जल्दी से जल्दी न्याय मिल सके, लंबित मुकदमे और सजा की दर बताती है कि सिर्फ कानून बनाने से रेप के मामले नहीं रुकेंगे इसके लिए प्रशासनिक जवाबदेही भी तय करनी होगी, ज्यादातर मामलों में देखने में आया है कि बच्चों का शोषण जान-पहचान के लोग ज्यादा करते हैं, और घर के लोग उन पर शक भी नही करते हैं, और बच्चे डर के कारण ये बाते किसी से बता नहीं पाते और वे शोषण का शिकार हो जाते है, इसलिए माता- पिता का यह दायित्व बनता है कि वे अपने बच्चो को जागरूक करे और इन सब अपराधो की जानकारी दे और जिन लोगों के साथ बच्चे खेल रहे हैं, उन पर पूरी नजर रखें।

हिजड़े नेता नहीं बनने देंगे हिन्दुस्तान को शक्तिशाली

● श्रवण कुमार चंचल

जिस कदर आजादी लेकर हिन्दुस्तान के अमर शहिद नेताओं ने सांस ही लिया था कि उन नेताओं के बीच के हिजड़े नेताओं के चश्मदीद ससुर नेताओं ने पाकिस्तान देश की अलग नींव रखकर, पाकिस्तान देश अलग ले लिया और अपने आतंकी दामाद को पालकर पालतू कुत्तों के तरह भारत सहित दुनिया के कई देशों में आतंकवाद फैलाने के लिए छोड़ दिया जो आज कोई-कोई देश आतंकवाद से लड़ने के लिए सामने नहीं आ रहा है। सिर्फ दुनिया के देशों में एक महान ऐसा देश है जो भारत ही है। पर भारत की लाचार जनता देखते ही देखते रहा कि अब हमारा देश शक्तिशाली बनेगा पर शक्तिशाली बनने की बजाय, हिन्दुस्तान लूटते ही चला जा रहा है, जाने कितना कूबेर का खजाना भारत में है जो लूटने के बाद भी भरा रहता है। भारत के धरती पर तीन युगों को कहें तो तीनों युग महानता लिये बैठा है, जिन्हें जनता अपनी सोच मानकर चलती है। कलयुग की बात की जाए तो यहाँ ब्यापार के भावना से आये मुगलक-तुगलक-अंग्रेज सभी ने अपने औकात के अनुसार भारत के खजाना को लूट-लूट कर खाली करते गये फिर भी खाली नहीं हुआ।

यहाँ की जनता भोली-भाली है, सीधी-साधी है, प्यार भरी दिल वाली है, पिघलती जल्दी है, जितनी जल्दी पत्थर दिल वाली नहीं पिघलते तभी तो इन्हें आश्वासन के डोर में बाँधकर आज के हिजड़े नेता इनके शक्ति को कमजोर करने के साथ ही शक्तिशाली नहीं बनने दे रहे हैं। भारत में जितने नेता हैं, उससे कहीं कम पाटी नहीं है। कोई पार्टी के नेता जनता के द्वारा जीत के संसद, विधान सभा में जा रहे हैं, जनता के मुताबिक कोई भी उचित कदम नहीं उठा पा रहे हैं। चाहे प्रधानमंत्री हो, मुख्यमंत्री हो या तो फिर राज्यपाल, मुखिया इत्यादि-इत्यादि हो। इन्हें इनके पद पर जाते ही खुलकर जनता के पक्ष में कार्य करने की औकात ही नहीं हो पाती है। औकात भी कोई नेता करना चाहता है तो उसे या तो हत्या करा दी जाती है या तो किसी को घोटाले में फंसा दिये जाते हैं। यहाँ निर्दोषों के लिए कानून व्यवस्था कड़ा है और दोषियों के लिए मुख्यमंत्री जी का सहारा मिलता है तभी तो यहाँ की कानून बेसहारा है। पुलिस निर्दोष व्यक्ति को दोषी बताकर पैसा लूट रही है। दोषी को निर्दोष बताती है, वहीं पास में खड़ा दोषी, सेक्स रैकेट चलाने वाला भारी अपराधी, फरार अपराधी के आँख से दिखती ही हीं है, कारण कि दोषी, अपराधी को पैसे की चश्मा से पुलिस देखती है। इसलिए अपराध, भ्रष्टाचार,यौन-शोषण, नारी बलात्कार हिन्दुस्तान से खत्म नहीं हो पा रहा है। हाल ही में हैदराबाद में प्रियंका रेड्डी का बलत्कार हुआ। पुलिस अपराधियों को पकड़कर कोर्ट ले जा रही थी तो वे भागने का प्रयास किये। पुलिस ने काउंटर कर दिया। पुलिस ने क्या गलती किया। वैसे पुलिस को शाबासी मिलनी चाहिए। इससे भारत के हर राज्यों के पुलिस को सीख लेनी चाहिए अन्यथा प्रमोशन के बजाय डिमोशन मिल सकता है। वही बिहार के पटना में सेक्स रैकेट कांड का खुलासा हुआ। लड़की चिल्ला-चिल्ला कर बोल रही है। राजद विधायक अरूण यादव को फांसी हो। इसकी जाँच करनी चाहिए। दोषी विधायक पर कार्यवाई होनी चाहिए। वहीं बिहार के बक्सर में भी ईटाढ़ी थानांतर्गत किसी ग्राम के बाधार में हुआ। कार्यवाई सख्त होनी चाहिए पर मंत्री जी लोग बलात्कारी विधायक जी को मदद कर रहे हैं, विधायक जी लोग बलत्कारी मुखिया जी को मदद कर रहे हैं। लूटेरों के सरगनाओं को दारोगा जी, एस.पी., डी.एस.पी. साहब मदद कर रहे हैं तो कहाँ से खत्म होगा अपराध, बलात्कार, भ्रष्टाचार, मर्डर, सेक्स रैकेट इत्यादि-इत्यादि।

सभी का जड़ पुलिस हिजड़े नेता, मंत्री, विधायक हैं या यू कहा जाए कि ये ही अपने जेब भरने, राजनीतिक रोटी सेकने के चलते ये सब पर काबू नहीं कर सकते, जिससे भोली-भाली जनता इससे आजाद नहीं हो सकती और तो और सफाई देते बनेंगे कि कार्यवाई चल रही है-न्यायपालिका पर भरोसा है। यानि इनका वहाँ तक पहुँच है, भरोसा यानि मतलब कि पैरवी पैसा के बदौलत हो जाएगा। कहने की तात्पर्य ये है कि यहाँ तीनों शासन प्रणाली बिल्कुल कमजोर बनाई गई है, जिससे हिन्दुस्तान के हिजड़े नेताओं की चलाकी जनता पर चलती रहेगी। जनता इनकी तमाशा देखती रहेगी, व कौवा के जैसा टरटराती रहेगी पर धान हिजड़े नेताओं की ही सुखेगी, भोली-भाली जनता के दिल में बैठी बात बैठी ही रहेगी। आखिर इनका कब उद्धार होगा। इनको शक्ति कब मिलेगी। हो सकता है आज बी.जे.पी. की शासन है, जनता को शक्तिशाली। अगर जनता को शक्ति मिली तो देश को शक्तिशाली होने में देर नहीं होगा पर ये बात यहाँ के हिजड़े नेता नहीं समझ पा रहे हैं, अपना हिजड़ापन के आगे भूल गये हैं जनता के लिए, जनता के द्वारा, जनता पर शासन व्यवस्था को। कारण की हिजड़े नेता पैसे पर बिके हैं, बाहर से आये भारत में व्यापार करने वालों को दामाद बनाकर नागरिकता दिलाते हैं, ताकि उन्हें वोट मिलेगा और जीत कर मंत्री बनेंगे। हिन्दुस्तान के विरोध में बोलेंगे। हिन्दुत्व की शक्ति को हिन्दू-हिन्दू में लड़ाकर कमजोर करेंगे तब न हिन्दू पर आतंक फैलाकर हिन्दुतान से हिन्दुओं को भगाकर अपना राज्य कायम करेंगे। पर अब तो शासन बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, स्वच्छ भारत का राज्य कायम हो गया है, इन्हें हिन्दुस्तान की जनता अपना मालिक चुन लिया है जो अब हिन्दुस्तान में हिजड़े नेताओं की खैर नहीं रहेगा। या तो वो दूसरे देशों में भाग जाएगें या तो इनके कहने अनुसार अपने को परिवर्तन करेंगे। भारत इनका अपना विरासत नहीं है, जो हिजड़े नेताओं के चलते वे विदेशी हमारे ही घर में रहकर हमको आतंकवादियों से मरवाता है। वाह रे न्याय, ये कहां कि न्याय है। ये कहीं का न्याय नहीं बशर्ते उन हिजड़े नेताओं, मंत्रियों का देन है कि आज आतंकवादियों का खानदान हमारे देश में हमारे ही धरती के अन्न व पानी खाकर हमी को अपराधी बोलते हैं। वैसे खानदानों को अंग्रेजों की तरह सात समुन्द्र पार भगा देना चाहिए। ●

पोस्ट ऑफिस में नौकरी लगाने के नाम पर लाखों की ठगी

● श्रवण कुमार चंचल

आज भारत के हर राज्यों में बेरोजगारी के दंश को झेल रहे हैं, बेरोजगार/आइ.ए, बी.ए., एम.ए. इत्यादि-इत्यादि डिग्रीयां लेकर बेरोजगार बन्धु प्राइवेट नौकरी करने पर ही मजबुर है। जिन्हें की सरकारी नौकरी नहीं मिल पाई है। कितने तो ऐसे बेरोजगार लड़के हैं जो प्राइवेट काम कर पढ़ने के बाद वे अपने सरकारी नौकरी पाने के लिए पैसा इक्कट्ठा किये भी घुस में देकर नौकरी नहीं पतो हैं और घुसखोर अधिकारी लाखों रूपये लेकर फरार हो जाते हैं। फिर बेरोजगार दर-दर की ठोकरे खाते फिरते हैं। एक तो सरकारी नौकरी पाने के लालच में पैसा गवा देते हैं और दूसरा वो बेरोजगार बेसहारा बन मारे-मारे फिरते हैं। ठीक उक्त घटना के अनुसार विगत वर्षों की बात है जो यू.पी. के एक बेरोजगार वेसहारा युवक जयपाल सिंह यादव के साथ घटी हे। बेचारा दिन-रात एक कर सिक्यूरिटी गार्ड की नौकरी कर पैसा जुटाया, पढ़ाई किया और जब पोस्ट ऑफिस की बहाली निकली तो उसमें नौकरी के लिए उसने तकरीबन एक लाख बीस हजार रूपया घुस में पोस्ट ऑफिस के बड़े अधिकारी बी.के. श्रीवास्तव को दूसरे-दूसरे के खातों पर भेजा गया है। वी.के. श्रीवास्तव बिहार के ही रहने वलो हैं। इनका मो. नं.-8054517560 है। जिसपर केवल सच पत्रकार ने आम आदमी बनकर नौकरी के लिए बात किया तो उसने बताया कि अभी बहाली खाली नहीं होगा तो आपको बताउंगा पर फिर उस नम्बर पर कॉल किया जा रहा है तो बंद मोबाइल बता रहा है। जिनके एकाउंट पर पैसा भेजा गया उनका एकाउण्ट नम्बर, नाम इस प्रकार से है - (1) 37292525088 - संतोष साव - भारतीय स्टेट बैंक , खजुआँ, नन्दापुर (2) सेम उसी पर (3) से उसी पर (4) सेम उसी पर (5) 20439219312 - मीस. बेबी देवी - खजुहाँ (6) 37292525088 - संतोष साव (7) 31474041469 - गोविन्द प्रसाद सिंह, इत्यादि है।

इस तरह से उक्त पोस्ट ऑफिस के अधिकारी ने इतने लोगों के एकाउण्ट के माध्यम से जयपाल सिंह यादव से नौकरी लगाने की झांसा देकर पैसे लेकर गबन कर दिया है। इसलिए इनका पुनः जाँच कर कार्यवाई यू.पी. के योगी सरकार से की जाने की माँग की गई है। गुप्त सूत्रों से भी प्राप्त हुआ है कि ये एक ग्रुपिंग बनाकर बेरोजगार लोगों से लाखों-लाख रूपया नौकरी दिलाने की नाम पर ठगी करने का काम किये जा रहे हैं। इस पर योगी सरकार को सख्त-से-सख्त कार्यवाई करनी चाहिए। ●

हरियाणा के चक्करपुर में सालों बरसात का नजारा

● श्रवण कुमार चंचल

बरसात में जब आए सावन की महीना साजन को बुला लूंगी अंगूठी के नगीना, ये गाना को तो करीब-करीब सही सुने हैं या कहीं जाते-चलते लोग राहों में गुनगुना भी देकर दिल को आनंद बुझा लेते हैं, पर बरसात का मौसम सालों पर अगर जिस देश के राज्यों में हो तो प्रायः लोगों के लिए काफी असहनीय ही होता है, लेकिन बिना बरसात के जिन गानों के गलियों में गंदे पानियों को पसरते यानि बहते हुए देखा जाए उसे क्या कहा जा सकता है। आज की मोदी युग में। यही न कहा जाएगा कि वहा कि जनता अंधकार में, है उन्हें विकास से मतलब नहीं अपनी जेब भरने से मतलब है। ठीक उसी तरह से हरियाणा के गुरूग्राम के चक्करपुर सहित कितने ऐसे सेक्टर हैं जहाँ बिना बारिश के ही सड़कों पर गंदे पैखानों की पानी परेशानियाँ बढ़ती रहती है। पर इन सेक्टरों/क्षेत्रों के न मुखिया, सरपंच, महापौर, उपमहापौर व विधायक महानुभावों को थोड़ा भी चिन्ता नहीं है और दिल में दर्द भी नहीं है, उन्हें तो सिर्फ कार में चलने की चिन्ता सताती है जनता की वोट मिल ही गई है चाहे वे जो भी करे। अतएव हरियाणा की सरकार को ध्यान देनी चाहिए कि किसी को कोई दिक्कतों की सामना न करनी पड़ सके। ●

मनु महाराज की बड़ी कार्रवाई, जाली नोट और हथियार तस्करों को धर दबोचा

● धर्मेन्द्र सिंह

मुंगेर के डीआईजी मनु महाराज ने गांधी गैंग के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए 5 लोगों को जाली नोट और हथियार के साथ गिरफ्तार किया है। मनु महाराज ने बताया कि लंबे समय से गांधी गैंग के ऊपर नजर रखी जा रही थी। इस अंतरराज्यीय गिरोह का मुख्य काम जाली नोटों का धंधा करना आम की सप्लाई करना सुपारी लेकर हत्या करना और नोट डबलिंग के नाम पर लोगों के साथ धोखाधड़ी करना है.पकड़े गए गिरोह का लिंक अंतरराज्यीय आर्म्स सप्लायर मनोज के साथ है जो पटना का रहने वाला है। डीआईजी ने कहा 20 दिसंबर को जमुई के में हुए गोलीकांड में शामिल अपराध कर्मियों के मुंगेर के मुफस्सिल थाना क्षेत्र अंतर्गत किसी बड़ी घटना को अंजाम देने की सूचना मिली थी। इसी सूचना के आधार पर अपराधियों की गिरफ्तारी को लेकर छापेमारी की गई जिसमें मनोज कुमार, राजेश कुमार उर्फ छोटू, शंभू कुमार उर्फ नवीन सिंह और मोहम्मद शाहनवाज उर्फ गुड्डू कुमार को गिरफ्तार किया गया। मनु महाराज ने बताया की जमुई में हुई गोलीबारी के दौरान आर्म्स डीलर मनोज ने अपराधियों को हथियार मुहैया कराया था। गिरफ्तार अपराधियों के पास से 2 पिस्टल, 16 कारतूस, 9 मोबाइल, 1 लाख से अधिक जाली नोट, 56,600 रुपया नकद बरामद किया गया है। डीआईजी ने बताया गिरफ्तार आर्म्स तस्कर मनोज से पूछताछ में दूसरे आर्म्स तस्कर मो. मजबूर के बारे में जानकारी मिली। मनोज की निशानदेही पर जमुई जिला के आरोपी को गिरफ्तार किया गया है।वहीं अन्य अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है।●

"विकासशील इंसान पार्टी जिन्दाबाद।
मुकेश सहनी, अशोक चौहान, बिरेन्द्र चौहान जिन्दाबाद!!

नववर्ष 2020, मकर सक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर फौजी भाइयों, जनप्रतिनिधियों, पत्रकार बंधुओं सहित बिहारवासियों को नमन, अभिनंदन।

-: निवेदक :-

श्री चौहान, प्रदेश सचिव
विकासशील इंसान पार्टी, बिहार
मो०:-7004390688

मियलेश चौहान, अध्यक्ष
विकासशील इंसान पार्टी, नवादा
मो०:-8340389589, 96312267448

The World class jewellery Showroom

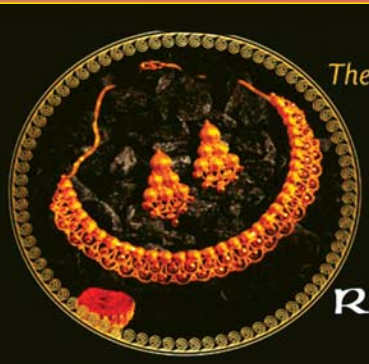

radhe krishna
JEWELLERS
Definition of Trust

G-1, Gharounda Complex, Jagdep Path, Bailry Road, Patna -800014. India Tel: +91 621 2598882/2591116 Mob: 9031207462 Email" radhekrishnajewellersllp@gmail.com

---

नीतीश कुमार जिन्दाबाद! जदयू जिन्दाबाद!!

नववर्ष 2020, मकर सक्रांति एवं गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

बिहार प्रदेश जदयू के कर्मठ नेता **मो. वसीम कमाली** को जदयू बुनकर प्रकोष्ठ का **प्रदेश उपाध्यक्ष** बनाये जाने की हार्दिक बधाई।

मो० वसीम कमाली

-: निवेदक :-

मो. आजम रब्बानी
प्रदेश महासचिव
जदयू बुनकर प्रकोष्ठ, बिहार

सोनिया-राहुल-प्रियंका गांधी जिन्दाबाद! राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी जिन्दाबाद!!

नववर्ष 2020, मकर सक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के सभी वरिष्ठ नेताओं को एवं हिलसा विधानसभा क्षेत्र की समस्त जनता सहित सम्पूर्ण बिहारवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

मुन्द्रिका सिंह
मीडिया कोडिनेटर सह प्रवक्ता
(उत्तरी एवं दक्षिणी बिहार)

अखिल भारतीय किसान कांग्रेस, बिहार

देव व्रत का है यह सपना
सुंदर, स्वच्छ, सुरक्षित हो ठाकुरगंज विधानसभा अपना

धनोमाता देवी
जिला परिषद सदस्य
किशनगंज

नव वर्ष 2020
मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस
के शुभ अवसर पर समस्त सीमांचल वासियों सहित ठाकुरगंज विधानसभा क्षेत्र की जनता, प्रशासनिक एवं सामाजिक पदाधिकारियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

निवेदक : **देव व्रत कुमार गणेश**
संरक्षक, श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट
मोब : 8986196502, 9304877184

कोयला, लकड़ी, उपला/गोइठा इत्यादि का प्रयोग न करें, इससे वातावरण प्रदूषित होता है एवं स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है।

स्वच्छ ईंधन (एल.पी.जी.) का उपयोग करें।

बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद्

Hotel Maurya – Patna is a pioneer project of **Bihar Hotels Limited (BHL).** It is the only **Five Star** category hotel in the State of Bihar with friendly face of affordable luxury. BHL has been successfully operating its Five Star Hotel in Patna since **1978.** Situated in the heart of the city, Patna, the hotel reflects the **historic grandeur** of this city.

Corporate Facilities & Services: Centrally located in the Commercial heart of Patna the Hotel provides Intricately & elegantly designed rooms, Central Air- Conditioning, Direct dialing from rooms with call detail print-out facility, Satellite LED television, Choice of **Seven Convention Halls** of varied capacities, **Heritage rooms** for private dining , **Business Centre, Shopping Arcade, Bank facility, Travel counter, Swimming pool, Safe deposit lockers, Fitness centre & Wi-fi,** all within the hotel premises.

Dining:

+ *Vaishali Café* - Walk-in for Breakfast and Business Buffet Lunches. The a-la-carte table offers a multi cuisine and buffet spreads to tinkle those taste buds.
+ *Spice Court* – Restaurant serving Indian, Continental, Thai & Chinese cuisine.
+ *The Pastry Shop* – Provides all kinds of Baker's confectionery viz; Mouthwatering cakes, Crossiants, Breads, Muffins etc. It also provides free home delivery of cakes of 6 pound onwards.
+ *Bollywood Treats*- A matchless meeting point for Munchies, Music, TV shows, Pool Table, Games for kids. Thus, providing Masti not only for adults but also for kids.

Rooms:

+ Step into an universe of old world nobility & colonial charm at the spacious VVIP suite of rooms, where your every demand for luxury is met in a manner that's perfected to please. What's more, it's accommodating enough to entertain an entourage of guests. Elegantly designed premium rooms with beautiful interiors and excellent facilities

Total Rooms: 77 – Double: 73, Suites: 04
Credit Cards: Visa, Master, Amex, Bob Cards
Access (in kms): Apt: (07), Rly. Stn.:(01)